पूजा सूची क्रम

ॐ अर्हं नम

। श्री सुखसागर–भगवज्जिनहरि -पूज्य परम गुरुभ्यो नम. ।

 पूजा – संग्रह 

* स्नात्र–पूजा–विधि *

प्रात काल में भव्यात्मा आसातनाओं को टालता हुआ, सम्यग्दर्शन की शुद्धि के लिये प्रभु–मन्दिर में 'णमो जिणाण' कहता प्रवेश करे। पाप व्यापारों के निषेध रूप 'निसिहि, – शब्द का तीन वार उच्चारण करे। वहा शुद्ध जल से स्नान कर शुद्ध धोती पहिने। उत्तरासन दाहिने खंधे के नीचे करे। तिलक करे। पूजा के लिये शुद्ध–जल–घड़ा तैयार रखे। दूध–दही–घृत–मिस्री–केसर इनके मिश्रण से पञ्चामृत कलश तैयार करे। रकेबी में फूल–पूगी लौंग स्वच्छ जल से धोकर रखे। रकेबी में अक्षत–चाँवल, [illegible] धूप तैयार करे। घृत दीपक तैयार करे। नैवेद्य पेड़ा लड्डु या मिस्री–फल रकेबी में रखे। मोली–काच–पखा–वासकू ची तीन अंग–लूहणा–आरती–मंगल दीपक–चामर–घंटा–घड़ियाल तैयार रखे। मोली अपने जिमणे हाथ में बांधे। हाथ में केसर का साथिया करे। मन्दिरजी में या जहा स्नात्र पढानी हो वहा भूमी शुद्ध कर चंदवा–पिछवाई बाध कर तीन बाजोट उपर नीचे त्रिगडे के रूप में रखे। एक बाजोट सामने रखे। जिस पर पूजा का सामान रखा जाय। आठ पुड का मुखकोश मुह पर बाधकर जन्माभिषेक का चिन्तन करते–त्रिगड में सिंहासन पर साथिया कर उपर छत्र बाध कर श्री प्रभु को विराजमान करे। नीचे में साथिया कर मोली बाध श्रीफल को मुट्ठीभर चाँवल की ढिगली पर तीन नवकार गिनता हुआ स्थापन करे।

रूपानाणा भी रखे । सामने बाजोठ पर पांच साथिया करे । धूप देवे । सब वस्तुएँ धूप से धूपित करे । रकेबी में थोड़े अक्षतों में केसर फूल लौंग डाल कर कुसुमांजलि तैयार करे । प्रभु के जीमणे हाथ की तरफ कुसुमांजलि की थाली लेकर खड़ा हो एक नवकार मन्त्र पढ़ता हुआ स्नात्र पूजा पढ़नी शुरू करे ।

❀ नवकारमन्त्र ❀

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्व-साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपाव-प्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं। — नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय—सर्वसाधुभ्यः। कह कर—स्नात्रपूजा गावे— ।

परम अध्यातम—रसिक परम—गीतार्थ श्रीमद्देवचन्द्रजी महाराज कृत

❀ स्नात्र – पूजा ❀

। दूहा। चौतीसे अतिशय जुओ, वचना-तिशय संजुत्त। सो परमेश्वर देखि भवि! सिंहासन-संपत्त। —ढाल—। सिंहासन बैठा जग-भाण, देखि भविजन गुण—मणिखाण। जे दीठे तुझ निम्मल नाण। लहिये परम—महोदय—ठाण। १। कुसुमाञ्जलिमेलो आदि—जिणिंदा तोरा चरण—कमल चोवीस, पूजो रे चौवीस-सोभागी-चौवीस, वैरागी चौवीस जिणिंदा! कुसुमाञ्जलि मेलो आदि जिणिंद। । २।

विधि— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञान-शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलिं यजामहे स्वाहा-ऐसा कहकर प्रभु के चरणों पर हाथ में ली हुई कुसुमाञ्जलि चढावे। प्रभु—चरणों में टिकी देवे। फिर हाथ में कुसुमाञ्जलि लेकर। नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यः— कहकर गाता हुआ— कहे—

गाथा। जो निय गुण—पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त। सुह पुग्गल

आरोपता, ज्योतिसुरग निरत्त।१। ढाल—जो निज आतम गुण आणन्दी, पुग्गल संगे जेह अफन्दी। जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ।। कुसुमाञ्जलि मेलो शान्ति जिणिंदा। तोरा चरण कमल चौवीस, पूजो रे चौवीस सोभागी चौवीस वैरागी चौवीस जिणिंदा कुसुमाञ्जलि मेलो शान्ति जिणिंदा। २।

विधि—ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु-निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलिं यजामहे स्वाहा। ऐसा कह कर दूसरी बार प्रभु के चरणों में कुसुमाञ्जलि चढा गोडे टिकी देवे। फिर हाथ में कुसुमाञ्जलि लेकर—नमोऽर्हत्० कहकर गावे—

। गाथा। निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण सम्पन्न। निम्मल धम्मु वएसकर, सो परमप्पा धन्न। १। ढाल लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनि वाणी। परमानन्द तणी निसाणी, तसु भगते मुझ मति ठहराणी। कुसुमाञ्जलि मेलो नेमि जिणिंदा तोरा चरण कमल चौवीस पूजो रे चौवीस सोभागी चौवीस वैरागी चौवीस जिणिंदा। कुसुमाजलि मेलो नेमिजिणिंदा। ३।

विधि- ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु-निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय कुसुमाञ्जलिं यजामहे स्वाहा। ऐसा कहकर तीसरी वार प्रभु के चरणों में कुसुमाञ्जलि चढा हाथा टिकी देवे। फिर हाथ में कुसुमाञ्जलि लेकर नमोऽर्हत्० कहकर गावे।

गाथा। जे सिद्धा सिज्झंति जे, सिज्झिस्संति अणंत। जसु आलंबन ठविय मन, सो सेवो अरिहंत। ढाल शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणाम जगत निहाले। उत्तम साधुनो मारग भाले, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले। कुसुमाञ्जलि मेलो पार्श्व जिणिंदा तोरा चरण कमल चौवीस पूजो रे चौवीस सोभागी चौवीस वैरागी चौवीस जिणिंदा कुसुमाञ्जलि मेलो पार्श्व जिणिंदा। ४।

विधि- -ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानन्त ज्ञान० ऐसा कह कर प्रभु चरणों में चौथीवार कुसुमाञ्जलि चढा कर दोनो खंधों पर टिकी देवे ।। फिर हाथ में कुसुमाञ्जलि लेकर । नमोऽर्हत्० । कहकर गावे । गाथा । सम्मदिट्ठी देसजय-साहु साहुणी सार । आचारज उवझाय मुणि, जो निम्मल आधार । ढाल-चौविह सघे जे मन धार्यां, मोक्ष तणो कारण निरधार्यां । विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमत ठवेवी । कुसुमाञ्जलि मेलो वीर जिणिंदा ? तोरा चरण कमल चौवीस पूजो रे चौवीस सोभागी चौवीस वैरागी चौवीस जिणिंदा कुसुमाञ्जलि मेलो वीर जिणिंदा । ५ ।

विधि-- ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानन्त ज्ञान-शक्तये ० ऐसा कहकर पांचवीं वार प्रभु चरणों में कुसुमाञ्जलि चढा कर मस्तक टिकी देवे । नमोऽर्हत्० कह कर चामर हाथ में लेवे ।

वस्तुछन्दः । सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मन रंग, कल्लाणक विहि संठविय करियसुधम्म सुपवित्तु सुंदर । सय इक सत्तरि तीत्थयर इक्क समय विहरन्ति महीयल, चवण समय इगवीस जिण, जम्म समय इगवीस । भत्तिय भावे पूजिया, करो संघ-सुजगीस । ६ ।

। ढाल— १ ।

(तर्ज— इकदिन अचिरा हुलरावति ए)

भव तीजे समकित गुण रम्या, जिन—भक्ति प्रमुख—गुण परिणम्या । तजि इन्द्रिय सुख आसंशना, करि थानक वीसनी सेवना । १ । अतिराग प्रशस्त-प्रभावना मन भावना एहवी भावता । सवि जीवकरूं शासन रसी, ऐसी भावदया मन उल्लसी । २ । लही परिणाम एहवुं भलूं, निपजावी जिनपद निरमलूं । आउ—बंधे विच इक भव करी, सरधा संवेग ते थिर धरी । ३ । तिहां चविअ लहे नर भव उदार, भरते तिम ऐरवतेज सार । महाविदेह विजय परधान, मझ खण्डे अवतरे जिन—निधान । ४ ।

। ढाल-२ ।

पुराये सुपना ए देखे, मन में हरख विशेखे। गजवर उज्ज्वल सुदर, निरमल वृषभ मनोहर। १। निरभय-केसरी सिंह, लखमी अतिहि अबीह। अनुपम फूलनी माला, निरमल शशी सुकमाला। २। तेज तरणि अति दीपे, इन्द्रधजा जग जीपे। पूरण कलश पंडूर पदम सरोवर पूर। ३। इग्यारमें रयणायर, देखे माताजी गुणसायर। बारमें भुवन-विमान, तेरमें रत्न-निधान। ४। अगनि शिखा निरधूम, देखे माताजी अनूपम। हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकासे। ५। जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पुत्र मनोहर। इन्द्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये। ६।

। वस्तु छंद । पुराय उदय पुराय उदय, उपना जिन नाह। माता तब रयणी-समे देखि सुपन हरखंत जागिय, सुपन कही निजकंत ने सुपन अरथ सामलो सोभागिय। त्रिभुवन-तिलक महागुणी, होस्ये पुत्र-निधान। इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करसे सिद्धि-विधान। १। हाथ में अक्षत पुष्प ले खड़ा रहे।

। ढाल-३ ।

(रथा पराउलाना)

साहमपति आसन कंपियो, दई अवधि मन आणंदियो। मुझ आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रकट्या जहाज। १। भव अडवी पारग सत्थवाह, केवल नाणा इय गुण अगाह। शिवसाधन गुण अंकूर जेह, कारण उलट्यो आषाढ़ि मेह। २। हरसे विकसे तव रोमराय, वलयादिक मा निज तनु न माय। सिंहासण थी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंता जिन आनन्द कंद। ३। सग अट पय समुहा आवि तत्थ, करि अंजलि पणमिय मत्थ सत्थ। मुख भाखे ए अणु आनमार निय लोप पहू दीठा उदार। ४। रेर तिहुणो सुर लोप देव,

विषयानल-तापित तनु समेव । तसु शान्ति करण जलधर समान, मिथ्या-विष चूरण गरुडवान । ५ । ते देव जगत तारण समत्थ, प्रकटयो तसु प्रणमी हुवे सनत्थ । इम जम्पी शक्र-स्तव करेवि, तव देव-देवी हरखे सुणेवि । ६ । गावे तब रम्भा गीत-गान, सुर-लोक हुओ मंगल-निधान । नर-खेत्रे आरज-वंश-ठाम, जिनराज वधेसुर-हर्ष-धाम । ७ । पिता माता घरे उच्छव अशेष, जिन-शासन मङ्गल अति विशेष । सुरपति देवादिक हरष संग, सयम-अरथीजननें उमंग । ८ । शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ । सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइ वधाइ थई अतीव । ६ । हाथ में जो अक्षत हैं, उनसे प्रभु को वधावे । बाद तीन प्रदक्षिणा अथवा तीन खमासमण देकर बॉया घुटना खड़ा रख और जिवणा घुटना धरती पर लगा कर बैठना दोनों हाथ जोड़ कर इन्द्र—क्रिया का अनुकरण करता हुआ केवल शक्र—स्तव--नमुत्थुणं पाठ बोले ।

—शक्रस्तव— नमुत्थुणं—

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवताण, आइ—गराणं तित्थयराणं सयं—संवुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिस—सीहाणं पुरिस—वर—पुंडरीआणं पुरिस वर—गधहत्थीणं, लोगुत्तमाण लोग—नाहाण लोग—हियाण लोग--पईवाण लोग--पज्जोअगराण, अभयदयाण चक्खुदयाणं मग्ग-दयाणं सरण-दयाणं वोहि-दयाणं धम्मदयाणं धम्म—देसियाणं धम्म-नायगाणं धम्म-सारहीणं धम्म-वर-चाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण धराणं वियट्ट-छउम्माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तार-याणं वुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्व न्नूणं सव्वदरिसीणं सिव-मयलमरूअमणंतम—क्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति—सिद्धिगइ—नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअ-भयाणं । जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति-

णागएकाले। संपइय वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि। (यहां कई लोग चैत्यवन्दन यावत् जयवीयराय तक करते हैं।) नमुत्थुणं बोल कर हाथ में साथिया कर पञ्चामृत कलश ले खड़ा रहे।

। ढाल-४ ।

श्री तीरथपतिनो कलश मज्जन गाइयें सुखकार, नरखित्तमंडण दुह विहंडण भविकमन आधार। तिहा रायराणा हरख उच्छव थयो जग जयकार, दिशिकुमरी अवधि विशेष जाणी लह्यो हरख अपार। १। निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद, जिन जननि पासे आवी पहुँती गहगती आनन्द। हेमाय ! नें जिनराज जायो शुचि वधायो रम्म, अम जम्म निम्मल करण कारण करिसुं सूईय कम्म। २। तिहा भूमि शोधन[1] दीप[2] दर्पण[3] वाय वींजण[4] धार, तिहा करिय कदली-गेह जिनवर-जननि मज्जन कार। वर राखडी[5] जिन-पाणि बांधी दिये इम आसीस, जुग कोडा कोडि चिरंजीवो धरम नायक ईश।

। ढाल-५ ।

(देशी-एक बामाना)

जग नायकजी त्रिभुवन-जन हितकार ए। परमानमजी चिदानन्द-घन सार ए। जिण रयणी जी दह दिशि उज्जलता धरे, शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्र ते संचरे। जिन जन्म्याजी तिण अवसर माता घरे, तिण अवसरजी इन्द्रासण पिण थरहरे। (हरिगीत छन्द) थर हरे आसन इन्द्र चिंते कवण अवसर ए थयो, जिन-जन्म उत्सव काल जाणी अति ही आनन्द ऊपन्यो। निज सिद्धि सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगते ऊमह्यो, विकसंत वदन प्रमोद वधते

१-प्रभु के आगन बाद व भूमि शोधन करना। २-दीपक दिखाना। ३-दर्पण दिखाना। ४-पंखों से हवा करना। ५-मौली प्रभु के कौलते हाथ पर रखना।

देव-नायक गह गह्यो। १-ढाल। तव सुरपति जी घंटा[६] नाद करावए, सुर लोके जी घोषणा एह दिरावए। नर खेत्रेजी जिनवर जन्म हुओ अछे, तसु भगते जी सुरपति मन्दर-गिरी गछे। (हरिगीत छन्दः)— गछे मंदा शिखर उपर भुवन-जीवन जिन तणो, जिन-जन्म उच्छव करण-कारण आवजो सवि सुरगणो तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देवदेव निहालतां आपणां पातिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां। २- ढाल। इम सांभलिजी सुरवर कोडी बहु मिली, जिन-वन्दनजी मन्दरगिरि साहमी चली। सोहमपतिजी जिन, जननी घर आविया, जिन माताजी वंदी स्वामि वधाविया[७]। (हरिगीत छन्दः) वधाविया जिनवर हर्षे बहुले धन्य हूं कृतपुण्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए। हे जगत जननि ! पुत्र तुमचो मेरुमज्जन-वर करी, उत्संग तुमचे वलिय थापिस आतमा पुण्ये भरी। ३-ढाल। सुरनायकजी जिन निज कर-कमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमाये स्तव्या नाटक विधि जी तब बत्तीस आगल वहे, सुर कोड़ी जी जिन- दरशन ने ऊमहे (हरिगीत छन्द) सुर कोडा कोडी हाथ जोडी नाथ शुचि-गुण गावती, अपछरा कोडी हाथ जोडी हाव-भाव दिखावती। जय जयो तु जिनराज जगगुरु एम दे आसीस ए, अम्ह त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए। ४-ढाल-सुरगिरिवरजी पांडुक वन में चिहुं दिशें गिरशिलपरजी सिंहासन सासय वसे। तिहां आणीजी शक्रे जिन खोले ग्रह्या, चउसट्ठी जी तिहां सुरपति आवी रह्या। (हरिगीत छन्दः)- आविया सुरपति सर्व भगते कलश श्रेणी बणावए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व-वस्तु अणावए अच्चुय पति तिहां हुकम कीनो देव कोडाकोडीने, जिन-मज्जनारथ नीर ल्यावो सवे सुर कर जोडीने। ५-ढाल-आतम साधन रसी

६-घंटा बजाना। ७ प्रभु पर अक्षत उछालना। ८-नन्द करना।

देव कोडी हसी, उल्लसी ने धसी खीर सागर दिशि । पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई । १ । जाति अड कलश करि सहस अट्टोत्तरा छत्र चामर सिंहासणे शुभतरा । उवगरण पुष्फ चंगेरी पमुहा सवे आगमे भाखिया तेम आणी ठवे । २ । तीर्थजल भरिय करी कलश कर देवता, गावता भावता धर्म-उन्नति-रता । तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम सगति सुचि भगति इम भावता । ३ । समकित वाज निज आत्म आरोपना, कलश पाणी मिसे भगति जल सींचता । मेरु सिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देख मन गहगही ४ गाथा—हहो देवा ! हहो देवा ! अणाइ काले अदिट्ठपुव्वो, तिलोय-तारणो तिलोय-बंधु मिच्छत्त-मोहनिद्ध सणो, अणाइ तण्हा विणासणो देवाहि देवो दट्ठव्वो दट्ठव्वो हिययकामेहिं।१ढाल। एम पभणंति वण भवण जोईसरा देव वेमा-णिया भत्ति धम्मायरा । के वि कप्पट्ठिया के वि मित्ताणुगा, के वि वर-रमणि वयणेण अइ उच्छुगा ।१। वस्तु छंद - तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इंद आदेस, कर जोडी सवी देव-गणलेइ कलस आदेस पामिय अद्भुत रुव-सरूव जुय कवण पहु पुच्छंति सामिय इंद कहे जग तारणो पारग अम्ह परमेस । नायक दायक धर्मनो करियें तसु अभिषेक । २ ढाल—पुरण कलश शुचि उदक नी धारा जिनवर अंगे नामे । आतम निर्मल भाव करंता बधते शुभ परिणामे । अच्युतादिक सुरपति-मज्जन लोकप ल लोकन्त, सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अभिषेक करन्त । पूरण०१ । गाहा— तव ईसाण सुरिंदो, सक्कं पभणेइ करउ सुपसाओ । तुह अंके मह नाहो, खण मित्त अम्ह अप्पेह । तासविंझदो पभणइ साहम्मिय वच्छलम्मि बहु-लाहो, आणा एवं तेण गिण्हउ होउ कयत्था भो । यहां प्रभु चरणों पर कलश ढाले पंचामृत से प्रभु को अभिषेक करता हुआ गावे—

—ढाल—

सोहम -सुर-पति वृषभ रूप करी, न्हवण करे प्रभु अंग। करिय विलेपन पुष्प-माल ठवी, वर आभरण अभंग। सो० १। नव सुरवर बहु जय जय रव करि, नाचे धरिय आणंद। मोक्ष मारग सारथपति पाम्यो, भांजसुं हवे भव-फंद। सो० २। [1]कोड़ बत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वर नाद। सुरपति संघ असर श्री प्रभु ने, जननी ने सुप्रसाद। सो०३। आणी थापी एम पयपे, अम्ह निस्तरिया आज। पुत्र तुम्हारो धणिय हमारो, तारण तरण जहाज। सो०४। मात जतन करि राखजो एहने, तुम सुत अम आधार। सुरपति भक्ति सहित नंदीसर करे जिन भक्ति उदार। सो०५। निय निय कप्प गया सहु निर्जर कहता प्रभु-गुण सार। दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार। सो० ६। खरतर गच्छ जिन आणारंगी राज सागर उवज्झाय। ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक सुगुरु तणे सुपसाय। सो० ७। देवचंद्र जिन भगते गायो, जनम महोच्छव छन्द, बोध बीज अंकूरो उलस्यो संघ सकल आनन्द। सो० ८।

यहा भगवान को अंग लूहणा करे गावे—

—कलश—राग-बेलावल—

इम पूजा भगते करो, आतम हित काज। आतम हित काज। तजिय विभाव निज-भाव मां रमतां शिव राज। रम० इम ० १। काल अनन्ते जे हुआ, होस्ये जेह जिणंद। होस्ये जेह जिणंद। संपइ-सीमन्धर प्रभु, केवल ज्ञान दिणंद। इम० २। जन्म-महोत्सव इण परे श्रावक रुचिवंत। विरचे जिन-प्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत। इम० ३। देवचन्द्र जिन पूजना, करतां, भव-पार। जिन-पडिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार। इम० ४।

१—शक्ति अनुसार द्रव्य प्रभु पर उवार कर न्हवण में डालें।

जैनाचार्य श्रीमन्नि हरीसागर सूरिश्वर शिष्य श्री कवीन्द्रसागरोपाध्याय विरचिता

✻ रत्न त्रय–आराधना–पूजा ✻

(मङ्गल–पीठिका)

॥ दोहा ॥

सुख सागर भगवान जिन–हरिपूज्येश्वर आप । आतम परमातम भजो–मिटे मोह सन्ताप ।१। दुख को हम चाह नहीं नित चाहे सुख सार। पर दुख हा दुख पा रहे–कारण कौन विचार ।२। क्या सुख होता ही नहीं ? क्या दुख जीव सुभाव ? । क्या कोई दुख देत है ? क्यों यह बने बनाव ? ।३। औषध से दुख ना मिटे, मिटे न धन जन योग । आतम धर्माराधते–हो दुख मूल वियोग ।४। अपनी अपनी आतमा–का उपयोग विचार । जो पावें पावें सही–वे सुख अपरं पार । ५ । मृगमद मृग ढूंढत फिरे– पर ना पावे लेश । भटक भटक वह मर मिटे– केवल पावे क्लेश ।६। मैं मैं मैं करता फिरे पर ना जाने भेद । स्फटिक घरे कुत्ता यथा– मर मर पावे खेद ।७। पुण्य योग पाया यहा दर्शन जैन प्रधान । यहा सहज सुख सिद्धि का– पाया विशद विधान । ८ । सम्यग्दर्शन शुद्ध हो– ज्ञान चरण विस्तार । जनम मरण भव दुख का रहे न लेश विकार ।९। सम्यग्दर्शन ज्ञान मय चरण रत्न ये तीन । मोक्ष मार्ग साधक गुणी साध भाव अदीन ।१०। परम गुणी जिनराज हैं स्मारक निजगुण रूप । दर्शन वन्दन पूजना– करा भविक गुण भूप ।११।

(राग– धनाश्री–नव वर्णन गुण गान)

भाव रतन दातार, पूजा रे भवी जानराग पद सार ।टेर। राग आग जलता जन जीवन– पाता दुःख अपार । पूजो० । वीतराग पद सत्र सुधारस अनहद आनन्दकार । पूजा० १ । राग– द्वेष की गाठ खुलेगी– ज्योतिर्मय जयकार

। पूजो० । जीवन होगा पावन जगमें— अजरामर अविकार । पूजो० २ । आप पूज्य प्रभु पूजा न चाहें, पर पूजक आधार । पूजो० । द्रव्य— भावविध पूजो भविजन, गुरु आगम अनुसार । पूजो० ३ । जल चन्दन कुसुमादिक द्रव्ये— आठ अनेक प्रकार । पूजो० । सम्यग्दर्शन गुण तब प्रकटे— ज्ञान चारित्र श्रीकार । पूजो० ४ । पुण्य योग प्रभु दर्शन पायो— आतम गुण अधिकार । पूजो० । हरि कवीन्द्र करो गुण कीर्तन— हो जावो भव-पार । पूजो० ५ ।

❀ सम्यग्दर्शन—पूजा ❀

(दोहा)

तत्वारथ श्रद्धान है— सम्यग्दर्शन भाव । वह प्रकटो मेरे लिये— प्रभु पद पुण्य प्रभाव । १ । होती चित्त प्रसन्नता— प्रभु पद पूजा योग । पाऊँ गुण गाऊँ यहां— मिटे महा भव—रोग । २ ।

(तर्ज— अवधू सो जोगी गुरु मेरा आशावरी.)

प्रभु से करम भरम मिट जाय । टेर ।

काल अनादि उलटि गति— मति— सुलटी सहज उपाय । चाह नहीं धन धाम धरा की, सेवा प्रभु की सुहाय । प्र० १ । सुरमणि सुरतरु अधिक प्रभु हैं वांछित पद वरदाय । दूर दारिद्रय हुआ हुई मेरे- सेवा की यह आय । प्र० २ । सम्यक मिश्र मिथ्या तीनों, मोहनी मूल विलाय । सम्यग्दर्शन पाया मिटते, दर्शन मोह अपाय । प्र० ३ । आतम रूप अनादि अपना, भूल रहा भरमाय । आज किया निर्मल निश्चल वह, प्रभु पद सेव अमाय । प्र० ४ । मिटे अनन्तानुबन्धी ये कलुषित चार कषाय । हरिकवीन्द्र प्रभुपद—कृपया- जीवन ज्योति जगाय । प्र. ५ ।

(दोहा)

शंका आतम रूप की, मिट ते मन से आज। परमातम पद पालिया, पाया सुखद स्वराज। १। कान्ना जड़ता संग की, आज हुई निर्मूल। आतम गुण रमणीयता— प्रकटी शिव अनुकूल। २।

(तर्ज— सुअप्पा आप विचारो र०)

प्रभु से पायो दरशन दान, मिट गयो मोह अज्ञान॥ प्रभु० टेर॥

मानु धन दिन धन घड़ी मेरी, धन जीवन परमान। मिटी विचिकित्सा अब भव ही हो गये सफल विधान। प्र० १। आरोपित सुंदरता जड़की, असत अशिव पहिचान। सत्य तथा शिव सुंदर गायो, आतम रूप महान। प्र० २। भाव अनातम दूर हुआ अब, पाया आतम ज्ञान। कर्ता कर्म करण कारक सब हो गये आतम थान। प्र० ३। क्षायिक भावे क्षायिक समकित— ग्रन्थी भेद निदान। प्रभु की प्रभुता निज जीवन में— त्रिभुवन तिलक समान। प्र० ४। शम— संवेगी हो निरवेदी अनुकम्पा— परधान। हरि कवीन्द्र आस्तिक आतम गुण— अमरित कीनो पान। प्र० ५।

(दोहा)

निश्चय से व्यवहार स— एक अनेक सरूप। निजगुण समकित रत्न को— पात हैं गुण—भूप॥१॥ दीपक से दीपक यथा— लट भँवरी के न्याय। आतम हो परमातमा— समकित शुद्ध उपाय॥ २॥

(तर्ज— अखियां मिलाके जिया भरमाके चले नहीं जाना)

जिन शासन का सार यही है जिन शासन का सार।

समकित रत्न उदार यही है जिन शासन का सार॥

जिन दर्शन में दर्शन प्रकट— जिन निक्षेपा चार। चारों सत्य बतावें स्वामी

ठाणांग ठाण विचार । यही० १ । आचारांगे दुय सुयखंधे— निरयुक्ति निरधार । तीरथ दर्शन वन्दन पूजन— दर्शन भाव आधार । यही० २ । दर्शन सूरति श्री जिन मन्दिर— जिन प्रतिमा अविकार । पंच कल्याणक भाव प्रकटते- हो दर्शन अधिकार । यही० ३ । आनन्दादिक परम उपासक— भाव प्रतिज्ञा धार । जीवन पावन सुविहित विधि से- हो समकित साकार । यही० ४ । सुखसागर भगवान के दर्शन— करते आर्द्रकुमार । हरि-कवीन्द्र श्रेणिक अम्बड सम— हों अर्ह अवतार । यही० ५ ।

(दोहा)

अर्ह सिद्ध स्वरूप ये- आतम विकसित भाव । होते हैं अध्यातम में- दर्शन पुण्य प्रभाव ।१। राग द्वेष अरि नाशतें- वन्दन पूजन योग । होते अर्ह आतमा, स्वयं सिद्ध उपयोग ॥ २ ॥

(तर्ज— हा केसरियों कामण गारो)

हां आतमा अरिहंत होता—

सम्यग दर्शन भावमे परिणत जब होता रे ।

आतमा अरिहंत होता ॥ टेर ॥

नमो अरिहंताणं पद रटते भव-भावी सब भाव विघटते । कटते करम— कलेश लेश दुख का नहीं होता रे । आ० १ । अरिहंत पद के आराधन से, भाव अरि के सहज निधन से । धन जीवन हो जाय आय शिव सुखका होता रे । आ० २ । अरिहंत अंत सिद्ध हो जाते, अपुनर्भव शिव पदवी पाते । जहां नहीं जम-राज— राज अपना ही होता रे । आ० ३ । सम्यगदर्शन गुण अविकारी प्रभु पद आराधक अधिकारी । सुखसागर भगवान ज्ञान गुण उन को होता रे । आ० ४ । हरि कवीन्द्र आतम दर्शन हो— परमातम सम्यग् दर्शन हो । वन्दन—

पूजन योग भाव उपयोगी होता रे । श्रा० ५ ।

(हरिगीत- छन्द)

तत्त्वार्थ के श्रद्धान से हो भव्य सम्यग्दर्शनं,
आधार उसका एक है निज आत्म रूप सुदर्शनम् ।
दर्शन न आंखों का यहा है हृदय दर्शन दर्शनं,
जिनदेव दर्शन से मुझे हो दिव्य सम्यग्दर्शनम् ॥

मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने-अनन्तानन्त-सम्यग्दर्शन शक्तये ज म जरा मृत्यु निवारणाय सम्यग्दर्शन प्राप्तये अष्ट द्रव्य यजामहे स्वाहा॥

* सम्यग्ज्ञान-पद-पूजा *

(दोहा)

सब संसारी जीव में- होता है संज्ञान । पर जो जाने आत्मा- उनका सम्यग्ज्ञान ।१। आप रूप है आतमा- पर कर्मों के योग ॥ भूल सदा गति चार में भोग रहा दुख भोग ।२। बकरी टोले में रहा सिंह भूल निजरूप । लखते सिंह पराक्रमी- हो जाता वन भूप। ३। जैसे ही यह आतमा परमातम पद पाय। आतम ज्ञानी हो करे भव दुख भाव विनाश ॥४॥

(तर्ज— चित हरण धरा अनुभव रंगे नील परम पद सजियें)

जिन ज्ञानी की, सेवा दे- सुख मेवा आतम ज्ञान का । टेर।

परमातम पूरण ज्ञान कला, पद पूजा से जीवन सफला। मिट जाय अनादि करम बला, जिन ज्ञानी की० । १ । प्रद्वेष नहीं अपलाप नहीं, मात्सर्य नहीं अन्तराय नहीं। आसातन अरु उपघात नहीं, जिन ज्ञानी की० । २ । आश्रव मिटते संवर होता, ज्ञानावरणी क्षय भी होता । ज्ञानोदय जीवन में होता, जिन ज्ञानी की० ।३ । है ज्ञेय रूप संसार सभी, उसमें पड

अपना रूप कभी। दीखे हो सम्यग्ज्ञान तभी, नित ज्ञानी की० ॥ ४ ॥ सुख सागर पद भगवान मिले, हरि कवीन्द्र कीर्तित ज्ञान खिले। फिर मोह महादृढ दुर्ग हिले, नित ज्ञानी की० । ५ ।

(दोहा)

ज्ञानी के सतसंग से– होता आतम ज्ञान। जडविज्ञानी जीव का- मिटता है अभिमान ।१। पट कुटयादिक आवरण से- ज्यों सूर्य- प्रकाश। तरतम भावे होत है– ज्ञान–प्रकाश विकास ॥

(तर्ज— प्रभु धर्मनाथ मोहे प्यारा, जग जीवन०)

पूजो ज्ञानी जिन जयकारी, दें ज्ञान परम उपकारी ।टेर। जन आराधक अधिकारी, तज भेद अभेद विहारी। क्रमशः मति श्रुत अनुसारी·पूजो ज्ञानी जिन जयकारी ॥ दें० १ ॥ आतम परमातम होता, जब पूर्ण ज्ञान गुण होता। मीमांसक मति गति हारी, पूजो ज्ञानी जिन जय कारी ॥ दें० २ ॥ यह अगम अगोचर भावी, गुण ज्ञान है पूर्ण प्रभावी। पाते जन जो अविकारी, पूजो ज्ञानी जिनजय कारी ॥ दें० ३ ॥ नय निक्षेपा विस्तारें, अनुयोग विशेष विचारे। हो यह प्रमाण पद धारी, पूजो ज्ञानी जिनजय कारी ॥ दें० ४ ॥ मति श्रुत अवधि मनज्ञानी, केवल सर्वज्ञ विधानी। हरि कवीन्द्र ज्ञानि बलिहारी, पूजो ज्ञानी जिनजय कारी ॥ दें० ५ ॥

(दोहा)

ज्ञान स्व पर अवभासकर होता है सुप्रमाण। आराधन से आतमा, हो अनन्त गुण खाण ॥ एक देश व्याख्यान से, होता नय विज्ञान। सर्व देश व्याख्यान से, हो प्रमाण गुण ज्ञान ॥

(तर्ज— कव्वाली— [illegible])

नय मे प्रमाण मे हो— जन आत्म ज्ञान धारी। आतम—गुणाभिरामी— ज्ञानी सदा नमामि ॥ टेर ॥ जो जानत है जगको— वह धृत जानधारी। जो जानते स्व—पर को— ज्ञानी सदा नमामि ॥ आ० १ ॥ पंचास्ति काय में से— जीवास्तिकाय महिमा। ज्ञानी है ज्ञान द्वारा— ज्ञानी सदा नमामि ॥आ०२ जड़ रूप द्रव्य सारे— हैं जीव एक चेतन। गुण ज्ञान—ज्योति पूरन— ज्ञानी सदा नमामि ॥ आ० ३ ॥ आनन्द—धाम आतम— तम तोम से रहित हो। ज्ञान प्रकाश होने— ज्ञानी सदा नमामि ॥ आ० ४ ॥ गाते हरि कथीन्दर— गुण ज्ञान आतमा का। परमातम भाव पूरण— ज्ञानी सदा नमामि ॥ आ० ५ ॥

(दोहा)

ज्ञान रतन अनमोल का— जतन करो मतिमान। फिर ताके पाओ नहीं— [illegible] प्रधान ॥१॥ ज्ञान भरी वाणी सुधा [illegible] भगवान। पीते भविजन [illegible] अमर [illegible] ॥२॥

(तर्ज— [illegible])

यह पाया पुण्य प्रधान शासन जैन का

निज [illegible] शासन जैन का ॥टेर॥ [illegible] रतन [illegible] है [illegible] ॥ शा० १॥ [illegible] त्रिभुवन [illegible] ॥ शा०२॥ [illegible] ॥ शा० ॥ यह [illegible] में [illegible]— है त्रिभुवन [illegible] ॥ शा० ३॥ [illegible] प्रभु [illegible] ॥ शा०४॥ [illegible] महान। शा०६ [illegible] ॥ शा० ७॥ [illegible]

शाश्वत शिव-पथ एक ॥ शा०७॥ सम्यग्दर्शन- ज्ञान से जो हो आतम सम्बन्ध ॥ शा० ॥ हरि कवीन्द्र तो होगई, वह सोने बीच सुगन्ध ॥ शा०८॥

॥ हरिगीत छन्द ॥

ससार को जाना न जाना आतमा को धूल है. वह जानकारी जान लो बस मूल में ही भूल है । निज आतमा को जानना परमात्म-पद का मूल है, वह दिव्य सम्यग्ज्ञान हो भव शूल भी सब फूल है ॥

॥मन्त्र॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त सम्यग्ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय अष्ट-द्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

❀ सम्यक् चारित्रपद पूजा ❀

(दोहा)

आतम दर्शन प्रकट हो हो आतम का ज्ञान । चरण आतमा के प्रति-मोक्ष मार्ग विज्ञान ॥१॥ ये तीनो ही सत्य है ये तीनों शिव रूप। तीनों सुन्दर भाव है, और सभी भवकूप ।२। पर द्रव्यो की रमणता, जहां न होवे लेश । केवल आतम रमणता, रहे न होवे क्लेश ॥३॥ हिंसा हो न असत्य हो, हो न अदत्ता-दान । मैथुन ममता हो नहीं. व्रत ये पांच महान ॥ ४ ॥ सुव्रतधारी आतमा-स्वय बुद्ध अवतार । परमातम होवें सही- पूजो विधि— विस्तार ॥ ५ ॥

(कलीगडा— तर्ज— क्यों रुलता ससार तीर्थ है तेरे तरने को

अशरण शरण सरूप चरण पा भव वन भटको ना ॥टेर॥ सम्यग्दर्शन— ज्ञान सुलोचन, देख करो आतम आलोचन, चलो चाल जंजाल जाल मे जीवन पटको ना ॥ अ० १ । सुगुरु सुदेव सुधर्माराधो, आतम से परमातम साधो हो परमातम आप पाप-दुर्गति में लटको ना ॥ अ० २ ॥ देश सर्व चारित्र दुविध है, सामायिक आदि पंच विध है आराधक के लिये रहे फिर करम को खटको ना ।अ० ३।

बने अहिंसक आतम— हेतु भव सागर तारक यह सेतु, वैर-भाव हो शान्त अभय भव-भय से अटको ना ॥अ० ४ ॥हरि कवीन्द्र बोले अनिहरसे, उत्तरोत्तर गुणठाणा फरसे, दिव्य चरण पा भरो विषय विष अंतर घटका ना। अ०५।

(दोहा)

आठ रूप है आतमा— चारित्रातम खास । आठ कर्म चय रिक्त हो—हो चारित्र प्रकाश ॥१॥ आचारज पाठक मुनि धर चारित्राचार । पंचाचार विचारसे परमेष्ठी अधिकार ॥ २ ॥

(तर्ज— धन धनअवध दर भगवान, पुतला धर्मविचारण वाले)

सुखी होते हैं व नर नार आतम संयम धन पाने वाले। नहीं जन मन रंजन का काम, निशदिन रहते जो निष्काम ॥ नहीं निंदा स्तुति से आराम, आतमा में नित रमने वाले ॥ सु० १ ॥ हृदयमें पहिले तोल तोल, बोलते सच्चा मीठा बोल । नहीं रहती है उनमें पोल, सहज सक्रिय नवजीवन वाले ॥ सु०२ ॥ धरते हैं परमातम ध्यान, ज्ञान–विज्ञान आतम परधान ।जिन्हजीवनमें है अभिमान, त्याग वैराग बढानेवाले ॥सु०३॥ तजते विषयों का विष मान सजते सतसंगी सुविधान । परम चारित्र धर्म बखान, जगत को सदा सुनानेवाले ।सु०४। लेते नहीं अदत्तादान, दिया लेते पाते अनिदान । उनका हरि कवीन्द्र गुण गान कर धन संयम जोवन वाले ॥ सु० ५ ॥

(दोहा)

भोग राग सम जानते— करत योगाभ्यास। निन्दा विकथा त्याग कर— भव से रहे उदास ॥१॥ सागर सम गंभीर जो— मेरु सम जो धीर । महावीर संसार के— पहुँचे अन्तिम तीर ॥ २ ॥

(तर्ज— जिन घर स्वामी मोरा ब्रह्मचारी राग रामनाथ)

पूजो व्रतधारी हो अधिकारी त्रिभुवन तारणहार। रहते ब्रह्मचारी नित अविकारी जगमें जय जयकार ॥ टेर ॥
नवविध ब्रह्म सुगुप्त गुप्ता, शील रतन रखवाल। कलुपित काम- कुसंग न करता, हरता जग जंजाल रे ॥ पू० १ ॥ दिन में रात में एक अनेक में सोते जागते आप। पाप रहित जीवन हो जिनका– वे सच्चे माँ बाप रे ॥पू० २ ॥ द्रव्य क्षेत्र और काल भाव से नित रहते सावधान। जड़ चल जगकी जूंठन जाने पुद्गल द्रव्य-विधान रे ॥ पू० ३ ॥ शब्द रूप रस गन्ध विषय मे, रहते आप अलीन। आप अपाप रहे पर के जो, प्रेरक रहे प्रवीन रे ॥ पू० ४ ॥ व्रतधारी होते हैं जग में– सुख सागर भगवान। हरि कवीन्द्र नमो व्रतधारी- चारित्र धर्म– प्रधान रे ॥ पू० ५ ॥

(दोहा)

समता तज समता धरे– धरे न तामस तार। सार रूप संसार में– संतोषी व्रत धार ॥१॥ पाप परिग्रह मानते- सत्याग्रही महान। दूर दुराग्रहते रहे-वर पावन प्रणिधान ॥ २ ॥

(तर्ज— माला काटे रे जाला जीवको तन मन में फेरो)

रत्नत्रय धारी पूजो उपकारी श्रीभगवान को ॥ टेर ॥ द्रव्य रूप पूजो पकरण सब– प्रभु चरणो मे चाढो। सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण में- कर राखो मन गाढ़ो रे ॥ र० १ ॥ प्रभु परिग्रह राग रखे ना- वीतराग गुण धारी। लगा परिग्रह हमसे छूटे– तो जीवन बलिहारी रे ॥ र० २ ॥ समोसरण में आठ महाप्रतिहारज- प्रभु के छाजे। पूजातिशयी प्रभु की पूजा– करो पाप सब भाजे रे ॥ र० ३ ॥ जिनदर्शन निजदर्शन करके, तीन रतन वर लेते। प्रभु सेवा शिव–सुख–मेवा पा- सहज शक्ति भर लेते रे ॥ र० ४ ॥

हरि कवीन्द्र वर तीन रतन से भरो भडारा अपना। यही एक संसार सार है- और सभी ज्यां सपना रे॥ र० ५॥

❀ हरिगीत छन्द ❀

मिटाजाय पुद्गल की रमणता आतमा में रमण हो, अशरण शरण ऐसे चरण का भावना में भरण हो। रत्नत्रयी आराधना से सफल जीवन मरण हो, दिव्य शिवपुर गमन हो और यद, भव का भ्रमण हो॥ मन्त्र- ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त-चरण-शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

❀ कलश ❀

तज कर तीन विराधना- तीन रतन आराध। आतम हो परमातमा- शिव सुख अव्याबाध॥

(तर्ज— तुम्हें नाथ नैया तिराना पड़ेगा)

तीन रतन से धार तु मनवा, भव- सागर हो पार तु मनवा। टेर। सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है, मिटता इन से जनम मरण है। इनसे जोड़ तु तार रे मनवा तीन०॥ जिन शासन भासन हो जावे- तीन रतन परगट हो जावे। कर इन पे अधिकार रे मनवा॥ तीन२०॥ सुविहित खरतर विधि आचरणा सुखसागर भगवान का शरणा कर तू प्रकट प्रचार रे मनवा॥ तीन० ३॥ जिन हरिसागर सद्गुरु कृपया। आनन्दसागर सूरि सदया। बीकानेर मझार रे मनवा। तीन०४। कवीन्द्र पाठक तीन रतन की पूज रची निज आतम जतन की। घर घर मंगलाचार रे मनवा॥ तीन० ५॥ दोहजार बारह संवत में विजया दशमी पावन दिन में जीवन जय जयकार रे मनवा॥ तीन०६॥ शाजिन जिनेश्वर अन्तर्यामी चरण कमल को नित्य नमामि सम्पूरण सुखकार रे मनवा॥ तीन०७॥

जैनाचार्य श्री मज्जिन हरिसागर सूरीश्वर शिष्य श्री कवीन्द्र सागरोपाध्य विरचिता

* श्री पार्श्वनाथ प्रभु-पूजा *

❁ मंगल पीठिका दोहा ❁

ॐ अर्हं ज्योतिर्मयी- पुरुषादानी पास । दर्शन- वन्दन- पूजना- करूं प्रकट सुखराश ॥१॥ शिव-सुख-फल वृद्धि करें- श्रीफलवृद्धि पास गुरु तीर्थ के शरण में- पाउ परम-प्रकाश ॥ २ ॥ प्रभु गुण-साधन रूप है-निज गुण साध्य विशेष । साधक साधन योगते- साधे साध्य हमेश ॥३॥ पर-संगी यह आतमा पाया असुख अपार । परमातम संगी हुआ- सुख सागर अधिकार ॥४॥ प्रतिमा के परकाश में- प्रभुपूजा सुविधान । सम्यग्दर्श हो सही- परमातम गुण थान ।५।

❁ प्रथमा-च्यवन कल्याणक पूजा ❁

(ढाल- १ दोहा)

सम्यग्दर्शन आदि दे, प्रभु के दश अवतार । राग द्वेष संसार फल, वीतराग शिव सार ॥ १ ॥

(तर्ज— पन्छी बावरिया)

प्रभु जीवन अवधारो विवेकी नर नारी । राग द्वेष तज डारो विवेकी नरनारी/टेर।कमठ कुटिल रत विषय विकारे, भाई मरुभूति को मारे। तजो विषय विष भारी, विवेकी नरनारी ॥ प्र० १ ॥ राजा अरविन्द भाव विचारें, साधु हो निजकाज सुधारें । साधु बनो अधिकारी, विवेकी नरनारी ॥ प्र० २ ॥ मरुभूति मर होता हाथी- अरविन्द साधु संत संगाथी । समकित पाया, पाओ- विवेकी नरनारी ॥ प्र० ३ ॥ कुर्कुट सांप कमठ हो डसता, मरुभूति गज को परवशता । महामोह की देखो, विवेकी नरनारी ॥ प्र०४ ॥ हाथी शुभध्याने सुर लोके- पहुँचा रहना भाव अशोके । बनो सदा शुभ ध्यानी-विवेकी नरनारी

॥ प्र० ५ ॥ कमठ साप दावानल में जल– गया नरक में पाप करम बल तजो पाप दुखकारी– विवेकी नरनारी ॥ प्र० ६ ॥ मरुभूति चौथे भव राजा– किरण वेग हो साधु सुकाजा। करो सुकाज उदारा– विवेकी नरनारी ॥ प्र०७ ॥ कमठ नरक निकला अहि होता– किरणवेग को डश खुश होता। करम राज बलि हारी– विवेकी नरनारी ॥ प्र० ८ ॥

(ढाल २ दोहा)

करम बड़े बलवान हैं, जो हैं पुद्गल रूप। कर्म योग हारे अरे। बड़े बड़े नर भूप ॥ ६ ॥

(तर्ज— तावड़ा धीमो पड़जार)

करम बल जीते जिन ज्ञानी–विजयो श्रीजिनदेव चरण कज पूजो भवि प्राणी टेर।

बारहवें सुरलोक गये ने किरणवेग योगी। कमठ सरप मर हुआ नरक पंचम में दुख भोगी ॥ क० १ ॥ छट्ठे मरुभूति हुए– नृप वज्रनाभनामा ॥ क्षेमंकर जिन सदुपदेश हो– साधु सुगुणधामा ॥ क० २ ॥ कमठ हुआ मर भील बाण से– साधु प्राण हरे। वज्रनाभ मध्यम ग्रैवेयक सुर सुख भोग करे ॥ क० ३॥ मरा भील वह गया सातमी नरके दुख भोगे। पुण्य पाप कृत करम उदय सुख दुख इह परलोगे ॥ ४ ॥ अष्टम भव में स्वप्न चतुर्दश सूचित हो चक्री। स्वर्णबाहु शुभनाम प्रकृति जिनकी थी अवक्री ॥ क० ५ ॥ बीस–स्थानक महातपस्या कर आतम–शोधी। तीर्थंकर पद नाम–कर्म शुभ बांधा अविरोधी ॥ क० ६ ॥ नरक निकल वह कमठ–सिंह हो चक्री को मारे। मर कर भी हो गये अमर–प्राणत सुख अधिकारे ॥ क०७ ॥ कमठ नारकी हुआ अधम यह पुण्य पाप खेला। करो पुण्य का तजो पाप को दो दिन का मेला ॥ क० ८॥

(ढाल—३ दोहा)

चढ़ते पड़ना जगतमें, होता है आसान। पड़ चढ़ते जो आनमा, होते हैं भगवान॥१॥

(तर्ज— काटो लाग्यो रे करमन को मोहे॰)

करम के कांटों को दें तोड़ दौड़कर पूजा जो करते। मिटे मरण-भय हुए अभय जिन पुजा जो करते ॥टेर॥ लगे करम का कांटा तब तो, घड़े बड़े पड़ते। कांटे के आंटे से निकले— जन ऊँचे चढ़ते क॰ १॥ दशम देवलोके मरूभूति- जीव देव रचते। शाश्वत जिन-प्रतिमा पूजा कर पापों से बचते ॥क॰ २॥ अव्रत था जीवन में फिर भी- व्रत लिप्सा धरते। महाव्रती साधु—सन्तों की—सेवा ये करते ॥क॰ ३॥ अपने उज्ज्वल भावों-में अति पुष्ट भाव भरते। भोग रहे थे भोग योग पर मन में आदरते ॥ क॰ ४ ॥ कीचड़ में हो कमल बढ़े जल से पर अलग रहे। महा भोग को करे भाव निर्लेप सदैव रहे ॥ क॰ ५ ॥ इन्द्र नाम दुश्च्यवन च्यवन का भारी दुख भरते। छह महीनों पहिले से ही सुर जीते भी मरते ॥ क॰ ६ ॥ पर तीर्थंकर जीव च्यवन का दुःख नहीं धरते। मरने को मंगल गिनते पद अजर अमर वरते ॥ क॰ ७॥ च्यवन मरण—निर्वाण मरण कल्याणक अनुसरते। हरि कवीन्द्र प्रभु च्यवन कल्याणे- जय जय जय करते ॥क॰८॥

❀ शार्दूल विक्रीडितम् ❀

सम्यक्त्वाप्ति भवाब्धवे नवमके यो देवलोका च्च्युतः, प्राप्तो यो दशमं भवं प्रभुवरः कल्याण—कल्पद्रुमः भव्यानां—फल वृद्धि कारकवरो वाराणसीश गृहे, सद्द्रव्यैः प्रयजामहे तमनिशं श्रीपार्श्वपरमेष्ठिनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्यु-निवारणाय श्रीपार्श्वनाथ परमेष्ठिने जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ द्वितीया जन्म कल्याणक-पूजा ॥

(ढाल- १ दोहा)

धन नगरी वाराणसी- धन अश्वसेन नरेश । धन वामा रानी सती- पाये प्रभु परमेश ॥ १ ॥

(तर्ज— रर र रर र रर र ररर- राग काफी)

भर रे भर रे भर रे आनन्द आतम में नित भर रे । प्रभु जीवन रस निज जीवन में भर पावन पद वर रे ॥ टेर ॥ अश्वसेन नृप वामाराणी शीलवती सुख कर रे । सुखसोती चौदह सुपनों- को दख मुदित मनहर रे ॥ भर० १ ॥ जग जानी मन भाती आती, निज पियु पास सुघर रे । हित सुख वाञ्छित देखे सुपने रात के अंत-प्रहर रे ॥ भर० २ ॥ क्या शुभफल होगा ? पियु मेरे ! चाहु सुनु सुमधुर रे । नृप भाषे जय-विजय विशेषी-स्वप्न सफल चित धर रे ॥ भर० ३ ॥ दम्पति माने धन अवतारा- आनन्द मगल कर रे । प्रियतम आज्ञा महल पधारी- हंसगति मृदुचर रे ॥ भर० ४ ॥ धर्म कथा कर रात बीताई- सूर्योदय तमहर रे । स्वप्न पाठक आवें आमन्त्रित- बोलें फल सुन्दर रे ॥ भर० ५ ॥ प्रजा प्रजापति सुन सुख पाये, सुत होगा त्रिभुवन वर रे । विन बादल वर्षा बस है यह, आया सुरतरू घर रे ॥ भर० ६ ॥ स्वप्न पाठक सन्मानित जाते- हर्ष हृदय में भर रे । जो नर सुनता वह सुख पाता- यह सुन्दर अवसर रे ॥ भर० ७ ॥ गर्भ रहे प्रभु वढत ऐसे शुक्ल दूज चन्दर रे । हरि कवीन्द्र हुए मन प्रमुदित- बोलें जय जय कर रे ॥ भर० ८

(ढाल २ दोहा)

भाग्यवान भगवान के पुण्यनार संचार । अवधि ज्ञाने इन्द्र लख, पाया मोद अपार ॥ १ ॥

(तर्ज— ठुमरी— आओ नाथो नेमि पिया तोरीगति जानी रे)

पाये पाये आज प्रभु हित सुख कारा रे।

धन्य भाग्य आज पाये प्राण आधारारे ॥ पा० टेर ॥

सिंहासन इन्द्र तजे, हृदय विनय सजे। सात आठ डग आके, करे नमस्कारा रे ॥पा० १॥ नमो नमो अरिहन्त, भाव भरे भगवन्त। शासन के आदि कर्ता, तारण हारा रे ॥ पा० २ ॥ स्वयं संबुद्ध स्वामी, पुरुषों में उत्तम नामी। लोक प्रदीप प्रभु लोक हित कारा रे ॥ पा० ३ ॥ अभय को देनेवाले, जीवोदय करने वाले। धरम सारथि मार्गदर्शनकारा रे ॥ पा० ४ ॥ अबाधित ज्ञानवाले, शिवगति पानेवाले। आओ आओ करूं प्रभु स्वागत तुम्हारा रे ॥ पा० ५ ॥ इन्द्र विनय वन्दे— हृदय में चिर नन्दे। माने आज मेरा धन धन अवतारा रे ॥ पा० ६ ॥ नंदीश्वर द्वीप जाते— शाश्वत जिन पूज रचाते। सुर सुरपति मन मोद अपारा रे ॥ पा० ७ ॥ हरि कवीन्द्र ऐसे— करो भवि पूजा वैसे। प्रभु पूज कर भवि पाओ भव पारा रे ॥ पा० ८ ॥

(ढाल— ३ दोहा)

पोष वदी दशमी पुनित— जनमे श्री भगवान। सुख प्रकाश फैला तभी— हुआ जगत कल्यान ॥ १ ॥

(तर्ज - चन्दा प्रभु जी से ध्यान रे०)

आज आनंद अपार रे प्रभु जनम महोत्सव। जन्म महोत्सव हरे दुख भव दव ॥आ०टेर॥ गर्भवती सती वामामाता पूर्ण दोहद थी थी सुख साता। पूर्ण समय जयकार रे प्रभु जन्म महोत्सव ॥ आ० १ ॥ छप्पन दिग कुमरी मिल आवे, सुती करम सुख साज सजावे। उत्सव विविध प्रकार रे, प्रभु जनम महोत्सव ॥ आ० २ ॥ चौसठ इन्दर अवधि ज्ञाने, प्रभु जन्मोत्सव सुरगिरि ठाने

वादल ज्यों, त्रिभुवन तारणहार ॥ द० १ ॥ मति--श्रुत--अवधि ज्ञानी स्वामी--जनम समय जयकार। अङ्गुष्ठामृत--पान--पुष्ट--कमनीय कला अवतार ।द०२। बाल--कुमार--किशोरावस्था पार करें भगवान। जीवन सार्थी मनावती नृप--कन्या हुई प्रधान ॥ द० ३ ॥ एक अनादि प्रभु रूप के जो नहीं थे अवतार। विकसित मानवता से जिनमें थी प्रभुता साकार ॥ द० ४ ॥ करुणा कोमलता भावों में रही वीरता सग। नव कर नीलवरण तन सुन्दर- स्याम सलोने अंग ॥ द० ५ ॥ जनम जनम संस्कार सजाते जीवन में नवरंग। सस्कारी थे प्रभु जीवन में अजब निराले ढग ॥द०६ ॥ अश्वसेन-वामा रानीसुत- पारस पारस रूप। सतसंगी जन- लोहा होता- सुवरन सहज सरूप ॥ द० ७ ॥

(ढाल २ दोहा)

हुआ विरोधी कमठ शठ- वह भी ब्राह्मण पूत।
जनम दरिद्री जगत ठग- नाम मात्र अवधूत ॥ १ ॥

(तर्ज— अज्ञानी जीवे मरवे हैं बिन कारण बेभान)

अज्ञानी ऐसा करते हैं, ज्ञानी की गत ओर ॥ टेर ॥ चार दिशामें आग लगी हो- उपर धूप कडी। बीच वैठ जो तपे वही पंचाग्नि तपस्या वडी ॥अ० १ ॥ कमठ हठी शठ ब्राह्मण होता घर दारिद्रय भरा। जगपूजा निज उदर निमित्त साधु वेश धरा ॥ अ० २ ॥ लोक वोक- सब दर्शन खातिर दौड़ा दौड़ करी। प्रभु पारस माँ साथ पधारे, दिलमें दया भरी ॥ अ० ३ ॥ नाग देव योगी! लक्कड़ मे तेरे देख जले। हिंसा युत यह योग तपस्या-कैसे कहो फले? ॥ अ० ४ ॥ योगी कहता तुम क्या जानो- घोड़े पडे घुमाओ। योग अगम है इसमें अपना क्यो तुम समय गुमाओ ॥ अ० ५ ॥ नाग-युगल अधजला प्रभु लक्कड़ से तुरत निकालें। परमेष्ठी वर मंत्र सुना-योगी! पाखण्ड हटा ले ॥अ०६

धरणींदर पद्मावती होते, प्रभु पारस पदसंगी। विषधर विष को अमृतकरता, प्रभु करणी थी चंगी ॥ अ० ७ ॥ भंडा फोड़ हुआ लख अपना, भगा कमठ अभिमानी। असुर मेघ माली मर होता— मनमें दुश्मन जानी ॥ अ० ८ ॥

(ढाल ३ दोहा)

पारस ऋतु वसन्त में— चित्रित नेमि वरात ।
देखें भावित होगये— वैरागी विख्यात ॥ १ ॥

(राग— भैरवी— तर्ज— तू मेरा आधार प्रभुजी तु०)

संयम से होगा बेड़ा पार ॥ सं० टेर ॥

लोकान्तिक सुर विनती करते— जय जय जगदा धार। संयम ले स्वामी उपदेशो— भव्यातम उद्धार ॥ स० १ ॥ सुरपति नरपति महा महोत्सव आश्रम पद उद्यान। चार महाव्रत धार स्वामी— देय सवत्सर दान ॥ सं० २ ॥ पोष वदी ग्यारस दिन धन धन— नगर काशी देश। मात पिता धन, वे जन धन धन—जिन पाये परमेश ॥ सं० ३ ॥ तेला तपधारी प्रभुजी तप— पाये चौथा ज्ञान। नर शत तीन हुए सह दीक्षित— देव दुष्य परिधान ॥ सं० ४ ॥ प्रभु दीक्षा कल्याणक उत्सव— सुरवर ठाठ अपार। नंदीश्वर जा मंगल पूजा पाठ सुभाव विचार ॥ सं० ५ ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान सहित हो— जो संयम स्वीकार। मवन—आश्रव टलत टलना—चार गति संसार ॥ स० ६ ॥ कर्म निर्जरा सहज निपजनी— होता केवल ज्ञान। अपुन र्भव भावी जीवन फिर— योनी रूप महान ॥ सं० ७ ॥ सुख—सागर भगवान प्रभु परमातम पारसनाथ। हरि कवीन्द्र संयम पथ साथी— ध्यान मेरा हाथ ॥ सं० ८ ॥

(शार्दूल विक्रीडितम्)

त्यक्त्वा राज्य—रमा प्रिया सुपरमा देवासुरैर्वन्दित, सम्बुद्ध स्वयमर य

धरणींदर पद्मावती होते, प्रभु पारस पदसंगी। विषधर विष को अमृतकरता, प्रभु करणी थी चंगी ॥ अ० ७ ॥ भंडा फोड़ हुआ खल अपना, भगा कमठ अभिमानी। असुर मेघ माली मर होता— मनमें दुश्मन जानी ॥ अ० ८ ॥

(ढाल ३ दोहा)

पारस ऋतु वसन्त में— चित्रित नेमि वरान ।
देखे भाविन होगये— वैरागी विख्यात ॥ १ ॥

(राग— भैरवी— तर्ज— तू मेरा आधार प्रभुजी तु०)

संयम से होगा बेड़ा पार ॥ सं० टेर ॥

लोकान्तिक सुर विनती करते— जय जय जगदाधार। संयम ले स्वामी उपदेशो— भव्यातम उद्धार ॥ स० १ ॥ सुरपति नरपति महा महोत्सव आश्रम पद उद्यान। चार महाव्रत धारें स्वामी— देय संवत्सर दान ॥ सं० २ ॥ पौष वदी ग्यारस दिन धन धन— गंगा काशी देश। मात पिता धन, वे जन धन धन—जिन पाये परमेश ॥ सं० ३ ॥ तेला तपधारी प्रभुजी तब— पाये चौथा ज्ञान। नर शत तीन हुए सह दीक्षित— देव दुष्य परिधान ॥ सं० ४ ॥ प्रभु दीक्षा कल्याणक उत्सव— सुरवर ठाठ अपार। नंदीश्वर जा मंगल पूजा पाठ सुभाव विचार ॥ सं० ५ ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान सहित हो— जो संयम स्वीकार। अव्रत—आश्रव टलते टलता—चार गति संसार ॥ स० ६ ॥ कर्म निर्जरा सहज निपजती— होता केवल ज्ञान। अपुन र्भव भावी जीवन फिर— ज्योती रूप महान ॥ सं० ७ ॥ सुख—सागर भगवान प्रभु परमातम पारसनाथ। हरि कवीन्द्र संयम पथ साथी— झालें मेरा हाथ ॥ सं० ८ ॥

(शार्दूल विक्रीडितम्)

त्यक्त्वा राज्य—रमा प्रिया सुपरमा देवासुरैर्वन्दित, सम्बुद्ध स्वयमेव य

सह शतैः पुम्भिस्त्रिभि र्दीक्षितः। सम्यग्दर्शन-शुद्धये सुविधिना सद्वार-गन्धा-दितैः, सद्द्रव्यैः प्रयजामहे प्रतिदिनं श्रीपार्श्वनाथं जिनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवा-रणाय श्री पार्श्वजिननाथाय जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

❀ चतुर्थी– केवलज्ञान– कल्याणक पूजा ❀

(ढाल १ दोहा)

ग्राम नगर पुर विचरते– श्री प्रभु पारसनाथ।
आतम गुण आराधना– करते संयम साथ॥ १॥

(गझल तर्ज— मिना प्रभु पास के देखे०)

निजातम ध्यान की महिमा- कहो क्या दूसरा जानें ?। सुधा पी और ने तो रस-- कहो क्या दूसरा जानें ?॥ टेर॥ परम योगी प्रभु पारस, विचरते योग- मस्ती में। प्रभु की योग मस्ती को, कहो क्या दूसरा जाने॥ नि० १॥ न अपना या पराया था-- जगत उनके लिये सारा। आत्मवत् भावना उनकी कहो क्या दूसरा जाने॥ नि० २॥ तजी निज देह की चिन्ता-- रहे रत आतम चिन्तन में। प्रभु के आतम चिन्तन को-- कहो क्या दूसरा जाने॥ नि० ३॥ समिति गुप्ति अनुत्तर थी अपूरव साधना उनकी। प्रभु की साधना विधि को-कहो क्या दूसरा जाने॥ नि० ४॥ तपस्या पारणा प्रभु ने-- किया धन सेठ के घरमें। सुरों ने की महा महिमा-- कहो क्या दूसरा जाने॥ नि० ५॥

(ढाल २ दोहा)

प्रकृति धातु उपसर्ग से-- पलटे अपना रूप।
प्रभु प्रकृति पलटी नहीं-- महिमा यही अनूप॥ १॥

(तर्ज– जगतमें नवपद जयकारी० लावणी)

विचरते पारस व्रतधारी, सदा सुख दुख में अविकारी ॥ टेर ॥ देहकी ममता थी त्यागी, सुरतियाँ आतम में लागी। मोहकी महिमा थी भागी, ज्योतिया जीवन में जागी। कुण्ड सरोवर तीर पर स्वामी धरते ध्यान। वनगज निज कर पूज कर पाया अमर विमान। कली कुण्ड तीरथ अनुरागी विचरते पारस व्रतधारी ॥ १ ॥ कादम्बरी अटवी प्रभु आये द्वेष मन असुर कमठ छाये। डराने प्रभु को मन भाये, सिंह और साप रूप लाये। प्रभु सागरगंभीर थे-थे मेरु समधीर। डरे नहीं डर वह गया-था फूटे तक्दीर ॥ कमठ शठ क्रोध अधिक धारी- विचरते पारस व्रतधारी ॥ २ ॥ घनाघन उमड़ उमड़ आये, बिजलियाँ कडक २ जाये। मुसल धारा जल बरसाये, जगत सब जलमय हो जाये। प्रभु ध्यान में लीन थे, वह उपसग मलीन। समता तामस की लगी, होडा होड प्रवीन। तीन दिन यों बीते भारी- विचरते पारस व्रत धारी ॥ ३ ॥ नाक तक जल चढ़ता आया- ध्यान प्रभु मनमें था छाया। नागपति आसन कंपाया-अवधि से प्रभु को लख पाया। धरणीन्द्र पद्मावती-आये भक्ति अपार। निजकंधे प्रभुको लिये-सेवा भाव विचार। मानते जीवन जयकारी-विचरते पारस व्रतधारी। ४ कमठ की माया जल जानी-नागपति आग हुए पानी। बोलते सुनरे अभिमानी-धूलक्यों करता जींदगानी। अजा कृपाणी न्याय से-क्या मिटना है कीट !। प्रभु सताये आयना-तू जायेगा पीट। लगा ले अरे करम कारी-विचरते पारस व्रत धारी। ५। टरा वह आया नत होना-करम अपने से हत होता। हृदय से आया मे रोना-विरोधी मन मल को धोना। चरण शरण प्रभु का लिया-मन का मिटा विरोध। भव भव का दुःख खोगया-पाया आतम बोध। अन्त वह होगा शिवचारी-विचरते पारस व्रत धारी। ६। शत्रु या मित्र भले होना,

सामने जन उत्तम होना। लोह भी हो जाये सोना, नीच संग खोना ही खोना।
धरणीन्द्र पद्मावती, करते प्रभु गुण ग्रान। गये स्वयं निज धामको अहिछत्रा
वह धाम ॥ हुआ तीरथ धन वलिहारी—विचरते पारस बन भारी। ७।

(ढाल—३ दोहा)

त्यासी दिन छद्मस्थ में रहते श्री भगवान।
चैत वदी मिति चौथ को, पाये केवल ज्ञान।

(तर्ज—नाचत सुर इन्द्र चन्द्र०)

धारत प्रभु आत्म--ध्यान, ज्ञान हितकारी। टेर। अनुक्रम गुणठान
चढे, घाति करम काट कढे। आतम पद पाठ पढे, बेला तप धारी। धा० १।
धातकी सुवृक्ष तले—विशाखा सुचन्द्र वले। लोकालोक सर्वकले— केवल
ज्ञान धारी। धा. २। प्रातिहार्य प्रकट आठ—समवसरण पुण्य ठाठ। दुःख
गये दूर नाठ--सुप्रभावकारी। धा. ३। सागर सुखों के नाथ-देते अशरण
को साथ। पकड़ हाथ पार करे--भव समुद्र भारी। धा. ४। हरिकवीन्द्र धन्य
धन्य--जीवन वह पुण्य जन्य आतमा अनन्य तीर्थ, थापें प्रभु चारी। धा. ५।

(शार्दूलविक्रीडितम्)

आत्म-ध्यान-तपो-बलेन भगवा नावारकं कर्म यो दूरी कृत्य निजात्मना
सुपरितःसर्वज्ञभावं श्रितः। लोकालोक-विलोकन-प्रकथन-प्रौढप्रतिष्ठा गुणाः
सद्द्रव्यैः प्रयजामहे सविधि तं सर्वज्ञपार्श्व-प्रभुम् ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं परमात्माने
अनन्तानन्त--ज्ञान शक्तये श्री पार्श्वनाथ--सर्वज्ञाय जलादि अष्टद्रव्यं
याजमहे स्वाहा।

❀ पञ्चमी निर्वाण कल्याणक पूजा ❀

(ढाल १ दोहा)

समवसरण में बैठ कर— स्वामी दें उपदेश ।
आतम धर्म आराधते— मिटता मूल कलेश ॥ १ ॥

(तर्ज— माला कट र जाना जीवका)

भव्यातम तिरते प्रभु के तीरथ में आतम ध्यान से ॥ टेर ॥ अश्वसेन नृप नामा राणी— प्रभावती गुणगाणी । प्रभु उपदेश महानत धारी— हुए साधु-गुण ठाणी रे ॥ भ० १ ॥ शुभ आदिक दश गणधर होते—प्रभु प्रवचन परचारी । द्वादशाग गणिपिटक प्रणेता— दर्शन दर्शनकारी रे ॥ भ० २ ॥ स्यादवाद सर्वोदय कारण—प्रभुवाणी अधिकारी । आतम—भावी जन होते हैं— परमातम— पद धारी रे ॥ भ०३ ॥ सर्व—विरतिधर देश—विरतिधर— अनगारी सागारी । द्विविध धरम धारक हो होते भवपारी नरनारी रे ॥ भ० ४॥ कनक कमल पद कमल धारते— ग्राम नगर पुर स्वामी । आलोकित करते प्रभु विचरे— त्रिभुवन अन्तर्यामी रे ॥ भ० ५ ॥ तीस वरस घर वास रहे प्रभु त्यासी दिन छद्मस्था । सात दिवस नवमास गुनतर वर्ष केवलावस्था रे ॥ भ० ६ ॥ शत वर्षी पूर्णायु जीवन जीना जिनने जाना । जीयो जीन दो औरों को प्रभु आदर्श महाना रे ॥ भ० ७ ॥

(ढाल— २ दोहा)

श्री समेत गिरि उपरे— प्रभु अन्तिम चउमास ।
ठाया शिवपाया वहीं— धन तीरथ वह खास ॥ १ ॥

(तर्ज— पाम जिनदा प्रभु मर मन वसिया)

तीर्थंकर प्रभु पार्श्व सांवरिया— नाथ विराजें समेत शिखरिया तीन तीस साधु प्रभु साथी— एक मास अनशनवर धरिया ॥ ती० १ ॥ चन्द्र विशाखा योगी होते— श्रावण सुद आठम शिव वरिया ॥ ती० २ ॥ प्रभु

निर्वाण हुआ सुर आये-- खेद हरख दोनों दिल भरिया ॥ ती० ॥ ३ ॥
कल्याणक उत्सव सुर रचते-- जय जय जय प्रभु तारण तरिया ॥ ती० ४ ॥
शिवगामी स्वामी नहीं आवें-- भव में भव सागर निस्तरिया ॥ ती० ५ ॥
एकान्तिक आत्यन्तिक सुख में - ज्योति स्वरूप अनंत गुण दरिया ॥ ती० ६ ॥
हरि कवीन्द्र प्रभु कारण कर्ता-- धन जो अपना आतम उधरिया ॥ ती० ७ ॥

(शार्दूल विक्रीडितम्)

कृत्वा कर्मचय-क्षयं स्वयमथो गत्वा शिवं सर्वथा, संसारं पुनरेति नो जिनपतिः सिद्धश्च बुद्धश्च यः । तं ज्योतिर्मय मात्म- नारणकृते निर्वोपितान्तर्मनः सद्रव्यैः प्रयजामहे प्रतिदिनं श्री पार्श्व पारङ्गतम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान-शक्तय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्री पार्श्व-पारंगताय जलादि अष्ट द्रव्य यजामहे स्वाहा ।

❀ कलश ❀

पञ्च कल्याणक से हुए-- जन अनन्त कल्याण ।
बीज न्याय साधो सभी-- आगम विधि--प्रमाण ॥

(तर्ज — आज मैंने प्रभुजी को न्हवण करायो०)

पारस गुण रस पायो, आज मैंने परम आतम सुख पायो ॥ टेर ॥ पास फलोदी चरण शरण में-- चौमासो थिर ठायो ॥ आ० १ ॥ श्री प्रभु पञ्च कल्याणक गाते, अनन्त कल्याण उपायो ॥ आ० २ ॥ शिवनयन विधु-ख-युग बरसे, ज्ञान पञ्चमी वरदायो ॥ आ० ३ ॥ पारस पारस पारस पावन रसना रस बरसायो ॥ आ० ४ ॥ सिरी फलोदी पार्श्वविद्यालय-बालक संघ सवायो ॥ आ० ५ ॥ सुखसागर भगवान परमगुरु-जिन हरि चरण पसायो ॥ आ० ६ ॥ वर्तमान जिन आनन्दसागर सूरि जश जश छायो ॥ आ० ७ ॥ पुण्यदानी पारस दर्शन- दिव्य कवीन्द्र मन भायो ॥ आ० ८ ॥

जैनाचार्य श्रीमज्जिन-हरिसागर-सूरीश्वर शिष्य श्री कवीन्द्र सागरोपाध्याय विरचिता

✻ श्रीमहावीर स्वामी पूजा ✻

❁ मंगल-पीठिका-दोहा ❁

ॐ अर्हं ज्योतिर्मयी– महावीर भगवान । पूजूं प्रणमूं प्रेम से– प्रकटे बोधिप्रधान ॥ १ ॥ प्रभु जीवन कल्याणमय– अभय गुणी अभिराम । भव्यातम कल्याणकर– भयहर भावोद्दाम ॥ २ ॥ सदा अबाधित एक रस– अनुपम अविसंवाद । शासन पति चोइसवें– पूजो तजो विवाद ॥३॥ निक्षेपण सदरूपता– वीतराग अरिहन्त । द्रव्य भाव से पूजियें, भजियें भाव अनन्त ॥ ४ ॥ हैं भव श्रीजिनवीर के–सत्ताईस उदार । हेय ज्ञेय आदेय पद–आराधक अधिकार ॥ ५ ॥

॥ प्रथमा–सम्यक्त्व प्राप्ति–पूजा ॥

(दोहा)

काल अनादि आतमा– रहा अनातम रूप ।
समकित कारण कार्यपद– पूजो प्रभु गुण भूप ॥१॥

(तर्ज— लगुना मेरे मन माना०)

भवि ! रमो प्रभु जीवन में– जीवन आन द भवन में रे ॥ भ० टेर ॥ पहिले भव श्रीनयसारा– नय विनय सार गुण धारा । मार्गानुसारि उदारा रे– ग्राम चिन्तक जन हितकारा ॥ भ० १ ॥ वर काष्ट हेतु वन जावे– खाऊं मैं खिलाकर भावे । जो मिलें अतिथि अविकारा रे– तो मानूं धन अवतारा ॥भ० २ ॥ पथ भूले साधु पधारे–सन्मुख नयसार सिधारे । विन बादल वृष्टि समाना रे– धन सन्त मिले सुखदाना ॥ भ० ३ ॥ शिष्टाचारी पद वन्दे– दे भात पानी चिर नन्दे । हो सतसंगी सुखकारी रे– सम्यग्दर्शन अधिकारी ॥ भ० ४ ॥

कृत अतनु कर्म तनु करणं, कर यथा-प्रवृत्ति करणं। निज भाव अपूरव लावे रे, जड चेतन भेद उपावे ॥ भ० ५ ॥ मुनि द्रव्य मार्ग तब पाये, नयसार भाव-पथ आये। जब पुण्य कमल है खिलता रे, सुरभित- आतम-रस मिलता ॥ भ० ६॥ भव गिनती समकित करता, गति शुक्ल पक्ष अनुसरता। समकित सुखसागर सीरारे, सेवो भगवान सुधीरा ॥भ० ७॥ हरि कवीन्द्र धन नरनारी- सव्यातम समकित धारी। पूजें प्रभु समक्ति हेतु रे- शिवपथ-भव जल निधि सेतु ॥ भ० ८ ॥

(शार्दूल विक्रीडितम्)

यो ऽकल्याण-पदं कथञ्चिदपि नो स्वस्मिन्परस्मिन्क्वचित्, सोढा प्रौढ-दृढारम-वीर्य बलवान् सूर्यो ऽन्धकारं यथा। तं कल्याण-निधिं स्वयं परकृते कल्याण-कल्पद्रुमं, सद्द्रव्यै र्जगतां प्रभुं जिनपतिं श्रीवर्द्धमानं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीमहावीर स्वामिने जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ द्वितीया श्री तीर्थंकर पद-सूचन-पूजा ॥

(दोहा)

नय प्रमाण संगत सदा- जिन शासन जयवन्त।

त्रिहुंकाले त्रिहुं लोक में- पूजो जिन भगवन्त ॥ २॥

(तर्ज— महावीर भगवान शरण सुख होता भारी है)

त्रिभुवन तारणहार वीर प्रभु पूजा प्यारी है। समकित भाव स्वरूप आतम उज्ज्वलनाकारी है ॥ टेर ॥

(शेर)

गये प्रथम सुर लोक में- दूजे भव नय सार। शाश्वत जिन प्रतिमा वहां- पूजे भाव अपार। पुण्य फल भोग विहारी है ॥ त्रिभुवन० १ ॥ तीजे

भव चक्री भरत- पुत्र मरिचि गुण-धाम। ऋषभ प्रभु उपदेशतें- लें दीक्षा अभिराम। करमगति विकट विकारी है ॥ त्रिभुवन० २ ॥ मरिचि हन्त ! दीक्षा तजें- धरें त्रिदण्डी वेश। समवसरण बाहिर रहे- दें मुमुक्षु उपदेश। कई भव्यातम तारी हैं॥ त्रिभुवन० ॥ ३ ॥ यहा तीर्थ पति जीव क्या है ? कोई है नाथ। भरत प्रश्न प्रभु से करें, सविनय जोड़े हाथ। प्रभु भाषें अविकारी है। ॥ त्रिभुवन० ४ ॥ वासुदेव चक्री तथा- अन्तिम तीरथनाथ । होगा मरिचि भावि में- पदवी पुण्य सनाथ। भरत वन्दें अधिकारी हैं॥ त्रिभुवन० ५ ॥ दादा तीर्थंकर हुए, चक्री है मम तात। तीर्थंकर चक्री अधिक, वासुदेव हूं जात । वाह मेरी बलिहारी है॥ त्रिभुवन० ६ ॥ सुखसागर संसार में, जो होंगे भगवान। कर्म वलीने कर दिया, उनपर प्रतिविधान । करम बल कुटिल अपारी है ॥ त्रिभुवन० ७ ॥ कर्म काट कर जो हुए- करके आत्म विकास। हरि कवीन्द्र पूजो वही- शासन नायक खास। पूज्य-पूजा उपकारी है ॥ त्रिभुवन० ८ ॥

॥ काव्यम् ॥ यो ऽक्खाण पद०॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ ॅ श्री महावीर स्वामिने जलादि अष्टद्रव्य यजामहे स्वाहा।

❀ तृतीया- कर्म-महिमा सूचन पूजा ❀

(दोहा)

प्रबल बला है कर्म की, ज्ञानी रहे अलीन।
ज्ञानी की पूजा करो, करें कर्म मल छीन ॥ १ ॥

(तर्ज— छोटे से बलमा मोरे आगन में गुल्ली खेलें)

वीर प्रभु भगवान पूजा आनन्दकारी। कर्म अभाव प्रधान- शिवपद दे अविकारी ॥ टेर ॥ कर्म फंसे बलवान- निर्बल हैं नरनारी। मरिचि महा गुण वान थे पर क्रम विकारी ॥ वी० १ ॥ चारित्र मोह प्रभाव- दीक्षा त्यागी

पहिले। बाद असाता योग– मिथ्यामति विसतारी ॥ वी० २ ॥ साधु न पूर्छे सार– निस्पृह ये अणगारी। शिष्य बनाऊं मैं मुख्य– आज्ञा-सेनाकारी ।वी०३ आया कपिल कुमार साधु-धर्म बताया। भेजा प्रभुजी के पास– नहीं पा सका अतारी ।। वी० ४ ॥ कपिल को शिष्य विशेष– स्वारथ हित कर डाला। उत्सूत्र भाषण भोग भीषण बहु संसारी ॥ वीर० ५ ॥ करस भरस भय भेद-- खेद भावीवश होते। मरिचि गये ब्रह्म लोक– परिव्राजक गतिधारी ॥ वी० ६ ॥ कर्म महा विकराल– जड़ हैं जगमें किन्तु। चेतन के सहयोग– देते दुःख अपारी ॥ वी० ७ ॥ सुखसागर भगवान्– जिनहरि पूज्य प्रभु की पूजा कवीन्द्र करो भाव– अकर्मक पद दातारी ॥ वी० ८ ॥

॥ काव्य ॥ यो ऽकल्याण पदं०। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री महावीर स्वामिने जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ चतुर्थी श्री वासुदेव–पद–प्राप्ति पूजा ॥

(दोहा)

पुण्य पाप दो रूप है– कर्म शुभाशुभ भाव।
पुण्य रूप पूजा करो-- उत्तरोत्तर गुणदाव ॥ १ ॥

(तर्ज— करम गति– टारी नाहि टरे)

प्रभु की पूजा पुण्य भरे-- पाप सन्ताप हरे ॥ प्र० टेर ॥ उस उस कर्म उदय से मरिचि-- पाकर विविध विधान। छह परिव्राजक छह सुर भव कर-- भोगे पुण्य प्रधान ॥ प्र० १ ॥ सतरहवे भव राजगृही मे-- विश्वभूति शुभ नाम। कपट देख झट साधु होते-- ज्ञान तपो गुण धाम ॥ प्र० २ ॥ देख विरोधी हँसी मुनीश्वर-- हन्त! निदान करें। तप--फल हो आगामी भवमें-- मारूं तुझे अरे ॥ प्र० ३ ॥ अष्टादश भव महाशुक्र में-- अद्भुत लील करे।

सुतापति पोतन पुर नृप घर सात स्वप्न अवतरे ॥ प्र० ४ ॥ वासुदेव पहिला त्रिपृष्ट वह प्रचल बन्धु बलदेव। पूर्व विरोधी सिंह हनन कर सफल निदान करेव ॥ प्र० ५ ॥ प्रति केशव अश्वग्रीव विजय से जय वरमाल वरे। शय्या पालक गीत विनोदी सीसा कान भरे ॥ प्र० ६ ॥ समरथ को नहीं दोष-रोष फल किन्तु विकट खरे। सुख सागर भगवान प्रभु पद में सब अन्त करे ॥ प्र०७॥ हरि कवीन्द्र जन भव्य प्रभु से प्रभुता सहज वरे। दीपक से दीपक प्रकटे ज्यों अन्धकार टरे ॥ प्र० ८ ॥

॥ काव्यं ॥ यो ऽकरणाणपदं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री महावीर स्वामिने जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ पञ्चमी चक्रवर्ती पद प्राप्ति-पूजा ॥

(दोहा)

उच नीच व्यवहार से कर्म रूप व्यवहार।
निश्चय से परमात्म पद- पूजो विगत विकार ॥१॥

(राग- माढ- तर्ज— भीनासर स्वामी अतरजामी वारो पारस नाथ०)

निज कर्म सुधारो नित निरधारो प्रभु पूजा जयकार ॥ नि० टेर ॥ कर्मो का संसार है यह सुख दुख कर्म विपाक। अंतमति गति त्रिपृष्ट सप्तम नरक में दुःख अथागरे ॥ नि० १ ॥ इकवीसम भव सिंह हुए वह हिंसक जीव विशेष बाइसम भव चौथी नरके पाये दुःख क्लेश रे ॥ नि० २ ॥ लघु भव बीच किये कई आखिर - पा नर जन्म उदार। सुकृत कर्म उपार्जन कीना भोग महाफल सार रे ॥ नि० ३ ॥ अवर विदेहे मूका नगरी पुण्य विराजित देश। राय धनजय धारिणी राणी सुत प्रिय मित्र विशेष रे ॥ नि० ४ ॥ चौद महा स्वपनों से सूचित— चौदह रत्न निधान। चक्री प्रियमित्र पावन गुणमय

परमाश्चर्य प्रधान रे ॥ नि० ५ ॥ चक्रवर्ती पद भी है चञ्चल— जान तजें भव भोग। संयम साधन सावधानता— धारें आतम-योग रे ॥ नि० ६ ॥ अन्तमें अनशन आतमयोगी— तेइसम भव जान। चौइसम सतम-सुर लोके—सुर सुख भोग महान रे ॥ नि०७ ॥ हरि कवीन्द्र सुकीर्तित वन्दित—शासनपति महावीर ध्यावो सेवो भविजन ! भावे— मानो धन तकदीर रे ॥ नि० ८ ॥

॥ काव्यं ॥ यो ऽकल्याण पदं० ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं श्री महावीर स्वामिने जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ षष्ठी तीर्थंकर–पदाराधन–पूजा ॥

(दोहा]

तीर्थंकर पद साधना, तीर्थंकर पद हेत ।
तीर्थंकर पूजा करो, सहज सिद्धि संकेत ॥

(तर्ज— प्रभु धर्म नाथ मोहे प्यारा जगजीवन०

भवि ! पूजो परमाधारा, तीरथ पद तारणहारा। पाओ भव-सिन्धु-किनारा तीरथपद तारण हारा ॥टेर॥ सरीता जल जैसे वहता, देवायु थिर नहीं रहता। च्यव पचवीसम भव सारा, पाये नर जन्म उदारा ॥ भ० १ ॥ छत्राभा नगरी भारी, जीत शत्रु नृपति अधिकारी। भद्रा कूखे अवतारा, श्रीनन्दन नाम कुमारा ॥भ०२॥ बल तेज रूप गुणवाना, राज्यादिक सुख अधिकाना। पोट्टिल-सूरि गणधारा, वन्दे आनन्द अपारा ॥ भ० ३ ॥ गुरु बोध सुधारस पीना, वहिरातम भाव विहीना। अंतर-आतम अधिकारा— लें धन संयम सुखकारा ॥ भ० ४ ॥ अरिहन्तादिक उपयोगे, सुविहित साधन विधियोगे। वीस—स्थानक सुखकारा, आरावे भाव अपारा ॥ भ० ५ ॥ कर्मों से जंग जमाया, जिन नाम कर्म शुभ पाया। लाख वर्ष निरन्तर धारा, तप मास-खमण बलिहारा ॥भ०६॥

वन्दों नन्दन मुनि राया—अंतिम अनशन शुभ ठाया। प्राणत सुरलोक सिधारा पुण्योदय अपरंपारा ॥ भ० ७ ॥ हरि कवीन्द्र शासन स्वामी— होंगे जिननायक नामी। प्रभु महावीर चितधारा— भवि वालो जय जय कारा ॥ भ० ८ ॥

॥ काव्यं ॥ यो ऽक्लयाणपद्० ॥ उँ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीमहावीर स्वामिने जलादि अष्टद्रव्य यजामहे स्वाहा।

❀ सप्तमी च्यवन कल्याणक पूजा ❀

(दोहा)

च्यवन दुःख जिनको न था— ये भावी भगवान।
च्यवे दशम सुर—लोक से— पूजो हो कल्यान ॥

(तर्ज— माला काटे रे जाना जीवड़ा०)

दुख को नहीं जाने आतम भावे थिर हो जो आतमा ॥टेर॥ प्राणत नामक देव लोक से आयु स्थिति कर पूरी। च्यवन कल्याणक होते प्रभु ने— मेटी भव शिव दूरी रे ॥ दु० १ ॥ जंबुद्वीपे दक्षिण भरते, माहणकुण्ड सुनयरे। प्रभु अवतरे हस्तोत्तर में, देवानन्दा उयरे रे ॥ दु० २ ॥ नीच गोत्र कर्मोदय था पर, जीवन पुण्य प्रधाना। चौद सुपन लखती वह माता—जय जय च्यवन कल्याना रे ॥ दु० ३ ॥ लखे सुधर्माधिप इन्दर यह— घटना अवधिज्ञाने। शक्रस्तव से करे वन्दना— निज जीवन धन जाने रे ॥ दु० ४ ॥ इन्द्रादेशे हरिणगमेषी— देव दिव्यगति आवे। हस्तोत्तर में गर्भहरण कर कल्याणक प्रकटावे रे ॥ दु० ५ ॥ नीचगोत्र कर्म क्षय होते जग कल्याण निकेतु। ब्राह्मण से क्षत्रिय कुल आये महावीरता हेतु रे ॥ दु० ६ ॥ क्षत्रिय कुण्ड नगर नृप सिद्धा रथ पट राणी त्रिशला। चौद सुपन लखती प्रभु पात्र महासती मति विमला रे ॥दु० ७॥ कल्पसूत्र में भद्रबाहु प्रभु जीवन घटना योधे। हरि कवीन्द्र आराधक जन—

निज जीवन गुण परिशोधे रे ॥ दु० ८ ॥

॥ काव्यं ॥ यो ऽकल्याणपदं० ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीमहावीर स्वामिने जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ अष्टमी जन्म कल्याणक पूजा ॥

(दोहा)

प्रजा प्रजा--पनि विबुधमुख-- दिव्य--स्वप्न--फल जान।
भये मुदितमन जनमते— भाग्यवान भगवान ॥ १ ॥

(तर्ज— स्याम मोहे चाकर राखोजी० रसिया)

भुवन में छाई सुखकी लहर- जनम जिनवर का होने से। चैत सुद तेरस दिन जयकार-- जनम जिनवर को होने से ॥ टेर॥ छप्पन दिग कुमरी मिल आवे, सूति करम करे। चौसठ इन्दर प्रभु जन्मोत्सव, रचे मेरु शिखरे ॥ भु० १ ॥ प्रभु वामपद अंगूठेसे— मेरु कांप उठे। अवधिज्ञान जान प्रभुजी को-- शचिपति शंक मिटे ॥ भु० २ ॥ सिद्धारथ नृप प्रभु जन्मोत्सव-- दश दिन ठाठ करे। धन जन वैभव वर्द्धमान- गुणमय शुभ नाम धरे ॥ भु० ३ ॥ आमलकी क्रीडा में निर्जर ऊंचा ताड़ तने। बाल प्रभु निज मुष्ठि प्रहार-- हरा कर वीर बने। भु० ४ ॥ सुरपति प्रश्न करें उत्तर दें, प्रभुजी बिना पढे। मति श्रुत अवधि उत्तम लख जन जन सुख प्रभु चढे ॥ भु० ५ ॥ तीन भुवन जन नयन मनोहर-- रूप अनूप भरे। निरख निरख जन पुनि पुनि निरखें, शान्त सरूप वरें ॥ भु० ६ ॥ राजसुता गुणवती यशोदा— पाणिग्रहण करें। भोग योग उपयोग सदा-निर्लेप रूप विचरे ॥ भु० ७ ॥ हरि--कवीन्द्र प्रभु गर्भ--अभिग्रह संयम रोक रहे। निज अग्रज नंदीवर्द्धन का भी धन विजय वहें ॥ भु०-८ ॥

॥ काव्यं ॥ यो ऽकल्याणपदं० ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीमहावीर स्वामिने

जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ नवमी दीक्षा-ज्ञान प्राप्ति पूजा ॥

(दोहा)

लोकान्तिक अभ्यर्थना— दे संवत्सर दान
भाव प्रव्रज्या को गहें—स्वयं बुद्ध भगवान ॥१॥

(तर्ज— गिरनारी जातां राख लीज्योजी-मारवाडी)

धन वीर प्रभु भगवान संयम पथ आदरे होजी । निज पुरुषारथ परधान, सयम पथ आदरे हो जी ॥टेर ॥ सुरपति नरपति ठाठ से हो जी, कोई उत्सव विधि विसतार, जगत जय कारणा हो जी । लोकान्तिक सुर प्रार्थना हो जी, प्रभु देइ सवत्सर दान, करें व्रत धारणा हो जी ॥ध० १॥ आप अकेली आतमा हो जी काइ परमातम अवतार तारणहार लोक के हो जी । जन जय जय नन्दा कहे हो जी, काइ जय भद्रा मनधार, हारक भयशोक के हो जी ॥ ध० २ ॥ द्रव्य भाव मुण्डित भये हो जी, कोई पंच मुष्ठि कर लोच, आलोचे आतमा हो जी । मनपर्यव वर ज्ञान से हो जी, कोई ज्ञान क्रिया विधि योग करे कर्म खातमा हो जी ॥ ध० ३ ॥ शूलपाणि चण्डकोशिया हो जी, काइ संगमसुर गोवाल, कान खीला भरे हो जी । सुर नर तिर्यंच का सहे हो जी, काइ प्रभु उपसर्ग महान—महातप आदरे हो जी । ध० ४ ॥ महा अभिग्रह धारते हो जी कोई चन्दना पुण्य प्रभाव, प्रभु पारणो करे हो जी । साधिक बारह वर्ष में हो जी प्रभु छद्मस्थ रहे अप्रमाद— नींद ने वोसिरे हो जी ॥ ध० ५ ॥ वैशाख सुद दशमी दिने हो जी, कोइ हस्तोत्तर शुभयोग, घाती कर्म मिट गये हो जी केवल ज्ञान सुदर्शने हो जी, प्रभु देखें लोकालोक, अर्हं पद पागये हो जी ॥ स्याद्वाद प्रवचन सुधा हो जी, पी समवसरण में जीव, अमरपद पागये हो जी

गौतम गणधर आदि सें हो जी, श्रीसंघ चतुर्विध थाप, तीरथपति होगये हो जी ॥ ध० ७ ॥ देश सरव व्रत साधना हो जी, कोई साधक साध्य विचार, करें भवि आतमा हो जी । हरि कवीन्द्र करें वन्दना हो जी, जो जन जिन दर्शन आराध, बने परमातमा हो जी ॥ ध० ८ ॥

॥ काव्यं ॥ यो ऽकल्याणपदं । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीमहावीर स्वामिने जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

॥ दशमी—निर्वाणपद प्राप्ति पूजा ॥

(दोहा)

सुख दुख कर्ता आतमा, और निमित्त अनेक ।
वीर प्रभु उपदेश यह, दर्शन जैन विवेक ॥ १ ॥

(तर्ज— झंडा ऊंचा रहे हमारा)

शासन पति की जय हो जय हो । वीर प्रभु की जय हो जय हो ॥ टेर ॥ आतम को समझे सो ज्ञानी— वीर प्रभु की पावन वानी । जो जाने वह ही निर्भय हो—वीर प्रभु की जय हो जय हो ।१। क्षत्रिय-कुण्डमें जनमें स्वामी—थे त्रिभुवन जन के हितकामी। उनका शासन सदा हृदय हो, वीर प्रभु की जय हो जय हो ।२। अपकारी के थे उपकारी— भक्त अभक्तों के हितकारी। जिनसे जीवन सदा अभय हो— वीर प्रभु की जय हो जय हो ।३। स्त्री शूद्रों को मार्ग बताया— साम्यभाव सत रूप जगाया । दुखियों पर जो रहे सदय हो— वीर प्रभु की जय हो जय हो ।४। श्रेणिक को आतम समझाया— अव्रत रहते भी अपनाया। जिन-दर्शन से परम उदय हो— वीर प्रभु की जय हो जय हो ।५। वर्ष बहुत्तर आयुष पाये-काति अमावस सिद्ध कहाये गौतम स्वामी मोह विजय हो-वीर प्रभु की जय हो जय हो ।६। मोक्ष भूमि पावापुर धन धन-

जिससे ज्योति पाते जन जन। प्रवचन उनका प्रमाण नय हो— वीर प्रभु की जय हो जय हो। सुखसागर भगवान हमारे— ज्योतिर्मय जग के उजियारे। हरि कवीन्द्र विशेष विनय हो— वीर प्रभु की जय हो जय हो।

॥ काव्यं ॥ यो ऽकल्याणपदं० । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीमहावीर स्वामिने जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ कलश ॥

(दोहा)

होता है निर्वाण जब— घड़ी न बढती एक ।
वीर प्रभु फरमान से इन्दर किया विवेक ॥१॥

(तर्ज— अवधु सो योगी गुरु मेरा— आशावरी)

प्रभुजी आप शरण हम आये ॥ टेर ॥ प्रभु निर्वाण हुआ सुनते ही गुरु गौतम दुख पाये। विलापात करते या बोले, छोड हमें क्यों सिधाये ॥ प्र०१॥ जाना था तो दूर न करना था, हमको हे स्वामी। पूरी हो न सके ऐसी यह, पड़ी हमारे खामी ॥ प्र० २ ॥ गौतम गौतम कौन कहेगा, कौन रहेगा साथी। कौन हरेगा भेद भरम सब, हम हैं हाय अनाथी ॥ प्र० ३ ॥ वीर वीर करते यों गौतम निज आतम लय लाये। मैं हूं मेरा और न कोई, केवल ज्ञान उपाये ॥ प्र० ४ ॥ सुखसागर भगवान परमपद— गामी अन्तरयामी। महावीर प्रभु गौतम स्वामी— मविनय सदा नमामि ॥ प्र० ५ ॥ दो हजार बारह संवत में बीकानेर दीवाली। महावीर पूजा यह गाने, हुई आतम खुशियाली ॥प्र०६॥ श्रीजिन हरिगुरु दिव्य दयामय—बोध बुद्धि दातारी। वतमान आनंद गुणाधिप अनुशासन अधिकारी ।प्र०७। कवीन्द्रसागर पाठक प्रभु गुणोत्कीर्तन जय जयकारी सम्यग्दर्शन ज्ञान विकासी हो नित मंगलकारी ॥प्र०८॥

॥ श्रीजिन हरिसागर सूरीश्वर शिष्यरत्न—रचित ॥

❀ श्रीकवीन्द्र—सागरोपाध्यायकृत ❀

* चौसठ प्रकारी—पूजा *

॥ पूजा—विधि ॥

शुभ मुहूर्त में जल यात्रा चढा कर तीर्थोदक लाना चाहिये। अष्ट कर्म-निवारण हेतु रंगीन चॉवलों से मण्डल बनाना चाहिये। आठ पॉखुडी सफेद चॉवलों से भरनी चाहिये। कमल की रेखायें पांच वर्णी चॉवलों से बनानी चाहिये। रक्त गुलाल से श्री सिद्ध भगवान के आठ गुणों को प्रत्येक पॉखडी में क्रमशः आलेखित करने चाहियें। मन्त्र पद ऐसे लिखने चाहियें—

१ ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणिभ्यो नमः। २— ॐ ह्रीं अनन्त—दर्शन गुणिभ्यो नमः। ३— ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुणिभ्यो नमः। ४— ॐ ह्रीं अनन्त चारित्र गुणिभ्यो नमः। ५— ॐ ह्रीं अक्षय स्थिति गुणिभ्यो नमः। ६— ॐ ह्रीं अमूर्त गुणिभ्यो नमः। ७— ॐ ह्रीं अगुरुलघु--गुणिभ्यो नमः। ८— ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुणिभ्यो नमः।

मध्य गोल कर्णिका पीत वर्ण के चांवलों से भरनी चाहिये। वहां सोने चांदी का आठ शाखाओं वाला एक सौ अट्ठावन पत्तोंवाला पेड़ बनवा कर चढावे। इस कर्म—वृक्ष के काटने के लिये एक सोना चांदी का बना कुल्हाडा कर्म-वृक्ष की जड़ों में रखना चाहिये।

समवसरण में त्रिगड़े में भगवान श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापन करे। अखण्ड दीपक ज्योति जगावे। धूप करे। भगवान् के अभिषेक के लिये उत्कृष्ट चौसठ कुमार कुमारिकायें, मध्यम आठ कुमार कुमारिकायें और जघन्य एक कुमार-कुमारी स्नानादि से शुद्ध-पवित्र वस्त्र पहने हुए होने

चाहियें। आठ दिन तक वहीं प्रत्येक कर्म निवारण के लिये अष्ट प्रकारी पूजा पढ़ाई जानी चाहिये। प्रतिदिन- नये २ नैवेद्य नये २ फल फूलों का उपयोग करना चाहिये।

आठ दिन तक प्रभु भक्ति गुरु भक्ति साधर्मी भक्ति करनी चाहिये। रात्री जागरण प्रभु गुण कीर्तन-सिद्ध पद का ध्यान-यथाशक्ति तपश्चर्या करते हुए करना चाहिये। यथाशक्ति याचकों को दान देना चाहिये। इससे भव भवान्तरों में बंधे आठ कर्मों का प्रचूर मात्रा में क्षय होता। नवमें दिन उस कर्म- वृक्ष को महोत्सव पूर्वक जिन मंदिर में चढ़ा देना चाहिये।

— पहेले दिन ज्ञानावरणीय कर्म-निवारण-पूजा पढ़ावे —

ज्ञानावरणीय-कर्म निवारण-पूजा

॥ मङ्गल पीठीका ॥

॥ दूहा ॥ ॐ अर्हं परमातमा, श्रीफलवृद्धि पास। जिन हरि पूज्य सदा नमू, तारक तीरथ खास ॥ १ ॥ मिथ्यात्वादिक हेतु से, आतम से जो काम। किया जाय बन्धन वही, कर्मरूप भव धाम ॥ २ ॥ सन्ततिरूप अनादि है, सादि कर्म विशेष। कर्मरूप संसार है, रहता यहीं क्लेश ॥ ३ ॥ भाव अकर्मक हो गये, वीतराग परमेश। वीतराग आराधना हरती कर्म क्लेश ॥४॥ आराधन के भेद भी गुरुगम सुन अनेक। तप कर प्रभु पद पूजिये, द्रव्य भाव सविवेक ॥ ५ ॥ कर्म तिमिर हर है यहा, तपवर ज्योति विशेष। कर्म निवारण तप करो, पूजो प्रभु हमेश ॥ ६ ॥ आठ आठ दिन कीजियें, यथाशक्ति तप सार। सरल अशठ भावे भविक, प्रकटे गुण अविकार ॥ ७ ॥ कर्म वृक्ष शाखा जहा, घाति

अघाती आठ। उत्तर प्रकृति पत्र हैं, कटते होवे ठाठ ॥ ८ ॥ सुवरन सुन्दर कीजियें, तप कुठार वर-भाव। ज्ञान सहित प्रभु पूजियें, प्रकटे पुण्य प्रभाव ॥ ९ ॥ पूजा कर्म विशेष से, कटता कर्म कलेश। कांटे से कांटा यथा, पूजा करो हमेश ॥०१॥ जल-चन्दन-कुसुमादिये, अष्ट द्रव्य विधियोग। प्रभु पूजा से होत हैं, भव-भय-भाव-वियोग ॥ ११ ॥

❀ प्रथमा-जल-पूजा ❀

(दोहा)

जल-रस-अमृत भाव से- पूजा करो हमेश ।
रस अमृत प्रकटे मिटे- जीवन ताप-क्लेश ॥ १ ॥
जीवन में जड़ता भरी- उसे बहा दो दूर ।
जल पूजा प्रभु की करो- पाओ सुख भरपूर ॥ २ ॥

(तर्ज— अवधू मो जोगी गुरु मेरा आशावरी)

अर्हं पद अविकारी पूजो, शासन पति सुखकारी। महावीर उपकारी पूजो परमातम पद धारी॥ पू० टेर॥ नन्दन भव में वीस पदो के आराधक अधिकारी। प्राणत स्वर्गे च्यवन कल्याणक, प्रभु का मंगलकारी ॥ पू० १ ॥ देवानन्दा गर्भ विराजें- व्यासी दिन अवतारी। हरिणगमेषी इंद्रादेशे- निजकर्तव्य विचारी ॥ पू० २ ॥ गर्भ हरण कर त्रिशला- कूखे लावे धन बलिहारी। उँच्च गोत्र कल्याणक भूमि- त्रिभुवन तारणहारी ॥ पू० ३ ॥ चैत सुदी तेरस दिन उत्तम- जिन जनमे जयकारी। जिन जन्मोत्सव सुरपति करते, समकित दर्शन-धारी ॥ पू० ४ ॥ राज रमणी सुख-भोग त्याग कर-तीस वरस में भारी। संयम ले तप कर्म खपाये- केवल कमला धारी ॥ पू० ५ ॥ शासन वर्ताया शिव पाया-जो हो गये भवपारी। आतम भावे प्रभु को पावें-धन धन वे नरनारी ॥पू० ६॥

हम संसारी भव में भटकें–प्रभु हैं शिव संचारी। कैसे दर्शन पायें? गुरु गम आगम के अनुसारी॥ पू० ७॥ प्रभु अनन्त ज्ञान के स्वामी–बोधबीज दातारी हरि कवी द्र भक्ति जल सींचो– हो अनन्त विस्तारी॥ पू० ८ ॥

॥ काव्यम्॥ लोकैषणाति तृष्णोदयवारणाय, सद्बोधिबीज जनिताङ्कुर वर्द्धनाय। स्वान्तर्मलापनयनाय यजामहे श्री– वीरं विशेष–गुण भाव जलेन भक्त्या। ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने जन्म जरा मृत्यु निवारणाय ज्ञानावरणीय–कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीरजिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

❀ द्वितीया–चन्दन–पूजा ❀

॥ दूहा॥ ज्ञानावरणी कर्म से, रुकता आतम ज्ञान। आखों पर पाटा लगे कैसे होवे भान॥ १॥ होता है अज्ञान में, भव भावी सन्ताप। प्रभु पद चन्दन योगतें, मिटे मिले सुख धाप॥ २॥

(तर्ज— माला वाग र नाला जाववा)

गुण ज्ञान हमारा कर्मों ने रोका काटो कर्म को। शासन पति प्रभु की पूजा कर पाओ आतम धर्म को॥ टेर॥ ज्ञान अनन्ता है आतम में, जड़ कर्मों ने घेरा। अज्ञानी यातें देता है, चोरासी लख फेरा रे॥ गुण० १॥ भाव अभाव नहीं होता है और अभाव न भावा। यातें आतम का नहीं मिटता, चेतन मूल सुभावा रे॥गुण० २॥ अक्षर ज्ञान अनन्त भाग में– कम अनावृत रहता। इस कारण आतम गुण चेतन– नित्य निरन्तर वहता रे॥ गुण० ३॥ आतम चेतन, कर्म ये जड़ है, सन्तति संग अनादि। जड़ संगी चेतन भव भटके होती है बरबादी रे॥ गुण० ४॥ कस्तूरी नाभि रहती है, मृग ढूंढे कहीं ओरा। त्यों अज्ञानी आतम ढूंढे, निज सुख को पर ठोरा रे॥गुण०५॥ देव गुरु सतसंगी आतम अपना रूप पिछाने। सुखसागर भगवान बने वह–नित चढ़ते गुणठाने

रे ॥ गुण० ६ ॥ करम करम का काट करेंगे, कर्म-आराधक ठानो। पूज्य पुरुष पद वन्दन-पूजन, द्रव्य-भाव से ठानो रे ॥गु० ७॥ पूज्य न चाहें परकृत पूजा, पूजारी गुणकारी। हरि कवीन्द्र प्रभु चन्दन पूजा, पाप ताप संहारी रे ॥ गुण०८॥

॥ काव्यं ॥ पापोतापशमनाय महद्गुणाय– दुर्गंध भावि--भव--रोग-निवारणाय। आतम-प्रमोद करणाय यजामहे श्री वीरं विशेष गुण चन्दन-सद्रसेन। ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त-ज्ञान-शक्तये जन्मजरा-मृत्यु--निवारणाय ज्ञानावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

❀ तृतीया–पुष्प पूजा ❀

(दोहा) काल अनादि कर्म वश– मुरझाया जो ज्ञान। ज्योतिर्मय प्रभु दरशतें–फूले फूल समान ॥ १ ॥ विकसित आतम ज्ञान से–परमातम परधान। पद पाओ पूजो यथा-फूलों से भगवान ॥ २ ॥

(तर्ज— प्रभु धर्म नाथ मोहे प्यारा राग– वनभाग)

जिन-दर्शन-पावन पावे– मन कुसुमकली खिलजावे। मति ज्ञान सुगन्ध बढ़ावे– जो प्रभुपद कुसुम चढावे ॥ टेर ॥ आतम जड़ रस में जब लों– मति ज्ञान आवरण तब लों। मति अज्ञानी दुख पावे– जिन दर्शन ज्ञान उपावे ॥ जि० १ ॥ समरण संज्ञा पुद्गल की– चिन्ता रहती गर कल की। पर घर तज निज घर आवे– परमातम पद प्रकटावे ॥ जि० २ ॥ व्यञ्जन अर्थावग्रह से– प्रभु दर्शन गुण संग्रह से। ईहा अपाय इक धारा– आतम गुण ज्ञान संभारा ॥ जि० ३ ॥ क्षय-उपशम मिश्रित भावे-- तरतमता ज्ञाने आवे। अट्ठाइस भेद विचारे-- मति ज्ञानी गुण विस्तारे ॥ जि० ४ ॥ विनयादिक चार प्रकारी- मति आतमपद अधिकारी। हो जिन पद पूजा ठावे–पद-पूज्य निजी प्रकटावे। जि०५। जिन प्रतिमा जिन सम देखें-- मति ज्ञान उन्हीं का लेखे। कुतरक करी बात

मनावें– मिथ्या मन मैल सनावें ॥ जि० ६ ॥ कारण से कारज होता, कारण से जगता सोना। कारण पद प्रभु अवधारो, कर दर्शन काज सुधारो ॥ जि०७ हरि कवीन्द्र आतम भावें, गुण गावें गुण को पावें। प्रभु पूज कुसुम वर दावे जीवन विकास हो जावे ॥ जि० ८ ॥

॥ काव्यं ॥ चञ्चरसुपञ्चवर वर्ण विराजिभिर्वै– सद्गन्धिभिश्च विशदै सुविकास शीलै। स्वान्तर्विकास विधये हि यजामहे श्री– वीरं विशेष -गुण पुष्प वरैं समन्तात् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय ज्ञानावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्री वीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

❀ चतुर्थी–धूप–पूजा ❀

॥ दूहा ॥ मति पूर्वक श्रुत ज्ञान हो, श्रुत के भेद अनेक। गुरु गम श्रुत संयोगतें प्रकटे, परम विवेक ॥ १ ॥ परम विवेकी आतमा, उर्ध्वगमन हित सार धूप पूज प्रभुकी करें, द्रव्य भाव सुविचार ॥ २ ॥

(तर्ज— तर पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान)

प्रभु की पूजा करो सुजान। प्रभु का पूजातिशय महान् नमो अरिहंताणं धर ध्यान– सूत्र का समझो अर्थ विधान ॥ प्र० टेर ॥ बोलता है केवल श्रुत ज्ञान– अबोले और चार हैं ज्ञान। द्रव्य श्रुत आश्रय से भगवान बतावें जड़ चेतन विज्ञान ॥ प्र० १ ॥ आतम आश्रित समकित सार मिथ्या जड़ गत भाव विचार। विवेकी करें प्रभु दर्शन पान परम पद का है यही निशान ॥ प्र० २ ॥ श्रुत के चौदह बीस विशेष समझो भेद रहे ना क्लेश। पाओ श्रुत को तज अभिमान आवरण मिटे मिटे अज्ञान ॥ प्र० ३ ॥ अक्षर एक करे अपलाप, होवे भव अनन्त की छाप। शील तप होते हैं अप्रमाण, टालो श्रुत

आसातनधान ॥ प्र० ४ ॥ काल में विनय सहित बहुमान— धारो सद्गुरु गम उपधान, अनिह्नव १भावे हे मतिमान् व्यञ्जन अर्थ तदुभय मान ।प्र०५। ज्ञान के ये वर आठ आचार-- श्रुत में ही रहते श्रीकार। करें जो श्रुत का अनुसंधान, अन्त वे पाते केवल ज्ञान ॥ प्र० ६ ॥ गीतारथ का मार्ग बताया, गीतारथ आश्रित या पाया। नहीं है और कोई पन्थान, करमका जिससे हो मन्थान ॥ प्र० ७ ॥ करते हरि कवीन्द्र गुण गान, ऊरध गति हित-- श्रुत अवधान। प्रभु पद पूजो धूप विधान, धूप से हो आरोग्य अमान ॥ प्र० ८ ॥

॥ काव्यं ॥ स्फूर्जत्सुगन्ध--विधिनोर्ध्वगति प्रयाणे--दुर्भावरोग--शमने प्रतिबद्धकत्ताः। सम्यक्श्रुतार्थगतयो हि यजामहे श्रीवीरं विशेष--गुण--धूप--वरैः समन्तात् ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त-ज्ञान-शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय ज्ञानावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर-जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा

— पञ्चमी—दीपक पूजा —

(दोहा)

जगदीपक जिनराज के— च्यवन जनम कल्याण ।
होते अवधि ज्ञानमय— पूजो दीप--विधान ॥ १ ॥
अन्धेरा मिटता तभी— होता पुनित प्रकाश ।
प्रभु दीपक पूजा करो-- हो निज ज्योति विकास ॥२॥

(तर्ज — केसरिया ने जहाज को लोक तिरायो)

पूजो जगदीपक जिनराया, धन भाग जो दर्शन पाया ॥ पूजो० टेर ॥ मोह महा अंधेरा मिटता पुण्य-प्रकाश उपाया। प्रभु दीपक से जीवन दीपक ज्योति से ज्योति जगाया ॥ पू० १ ॥ द्रव्ये क्षेत्रे काले भावे. अवधि ज्ञान बताया। दीपक सम तरतमता योगी, क्षायोपशमिक सुझाया ॥ पू० २ ॥

अनुगामी वर्द्धमान प्रतिपाती– सेतर छह भेद गाया। रूपी द्रव्य को जाने अवधि– ज्ञानावरण विलाया ॥ पू० ३ ॥ सुरनारक भव प्रत्यय अवधि–सुर प्रभु पुजा रचाया। सम्यग्दर्शन निर्मल होते– उत्तरोत्तर शिव पाया ॥ पू० ४ ॥ लब्धि प्रत्यय नर तिर्यंचे, भेद असंख्या दिखाया सम्यगदर्शन अवधिज्ञानी, मिथ्या विभग कहाया ॥ पू० ५ ॥ अवधि द्रव्य अनन्ता देखे, लोक असंख्य लहाया काल असंख्या भाव अनंता, रूपीविषय विधाया।पू० ६। परमावधि होता शिव गामी,निश्चय यह मन भाया। सुख सागर भगवान की सेवा–मेवा दे सुखदा सा॥ पू० ७॥ हरि कवीन्द्र सुपातर मनमें प्रभु पद स्नेह भराया। तन्मय वृत्ति दीपक उयोते परमातम लख पाया ॥ पू० ८ ॥

॥ काव्य ॥ सम्पूर्ण सिद्धि– शिवमार्ग सुदशनाया नन्तात्म कर्म तमसा परिभेन्नाय। दिव्य प्रकाश करणाय यजामहे श्री– वीरं विशेष गुण दीपक– दीपनेन ॥ ५ ॥ मन्त्र ॥ उँ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय ज्ञानावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय दीपकं यजामहे स्वाहा।

॥ षष्ठी अक्षत–पूजा ॥

(दोहा)

मन चिन्तन आतम हुआ– द्रव्य भाव मन योग ।
प्रभु अक्षत पूजा करो, हो अक्षत उपयोग ॥ १ ॥
द्रव्य भाव मन योग को– प्रभु पद अक्षत धार ।
मन पर्यायी ज्ञान का– नर पावे अधिकार ॥ २ ॥

(तर्ज— मोपन प्यारे बसा मधुबन में ०)

तन मन अक्षत प्रभु पूजन कर, जन जीवन अक्षत गुण धर रे ॥ टेर ॥ तन

आश्रित मन की गति चञ्चल करना यह प्रतिबन्ध सार नर रे। परमातम का ध्यानालम्बन सहज समाधि स्थिरता धर रे। त० १॥ निज मन पर्यायों पर संयम धर मन-पर्यवज्ञानी हो नर रे। नर क्षेत्रे सब संज्ञी चिंतित जानें रूपी द्रव्य प्रकार रे॥ त० २॥ साधारण ऋजुमती जाने, विपुलमती अति निर्मलतर रे। छट्ठे से बारह गुण थानक तक इसकी रहती है सत्तर रे॥ त० ३॥ मन-पर्यव ज्ञानावरणी को-काटें जग जो साधु प्रवर रे। दीक्षा लेते ही मन-पर्यव-ज्ञानी होते तीर्थंकर रे॥ त० ४॥ तीर्थंकर की पूजा करते, भव सागर होता है सुतर रे। अकपट भावे आतम अर्पण, पूजन होता शिवसुख कर रे॥ त० ५॥ पूजक जन जग पूज्य बने हैं, प्रभु पूजा सत्य शिव सुन्दर रे। जन्म मरण मिटता है उस का, कर्ता नर हो जाय अमर रे॥ त० ६॥ ज्ञानी की सेवा ज्ञान बढ़ावे-ज्ञान बिना नर होता खर रे। ज्ञानावरणीय कर्म विपाके दूर दूर रहता निज घर रे॥ त० ७॥ च्यवन कल्याणक जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक उत्सव पर रे। हरि कवीन्द्र अक्षत विधि दर्शन-वन्दन पूजन आनन्द कर रे॥ त० ८॥ — काव्यम् ॥ कृत्वाक्षतैः सुपरिणामगुणैः प्रशस्तैः, सत्स्वस्तिकं लघु चतुर्गति वारकं च। आत्माक्षतोत्तमगुणाय यजामहे श्री- वीरं वराक्षत गुणैक विशेष-भावम् ॥ ६ ॥ मन्त्रः। ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने जन्मजरा मृत्यु निवारणाय अनन्तानन्त-ज्ञान-शक्तये ज्ञानावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर-जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा।।

सप्तमी-नैवेद्य-पूजा

(दोहा)

जड़ चल जग जूठन सभी- पुद्गल रूप अनेक ।
भोगे सुखकी भूख ना- मिटी हुआ अतिरेक ।

प्रभु गुण अमृत जो मिले– भूख दुख हो दूर।
प्रभु पद में नैवेद धर– चाहू वही हजूर ।
(तर्ज— तुम चिन्घन चंद आनन्द लाल तोर दर्शन०)

प्रभु गुण अमृत धाम स्याम तोरे शासन में सुख भारी ॥ स्या० टेर ॥ पुद्गल सोचा पुद्गल रोचा, पुद्गल से हो विकारी ॥ स्या० ॥ आतम मूल भूल अपनी सें, भव भटका हो भिखारी ॥ स्याम० १ ॥ उलटा कारण उलटा कारज होता संगत सारी ॥ स्या० ॥ ज्ञानावरण वढा अज्ञानी आतम दुख अपारी ॥ स्याम० २ ॥ घोर घटा घन की जब छाये, छिप जाता तिमिरारि ॥ ॥ स्या० ॥ वायु वेग वढे घन हटते, प्रकटे ज्योतीधारी ॥ स्याम० ३ ॥ आतम सर्व प्रदेश अबाधित ज्ञान भरा अविकारी ॥ स्या० ॥ कर्मों का परदा हटने से ज्योति सरूप उदारी ॥ स्याम० ४ ॥ केवल ज्ञान कला प्रकटेगी, क्षायिक भाव प्रकारी ॥ स्य० ॥ पुद्गल संगी तर्क विचारे, मीमासक मति हारी ॥ स्याम० ५ जन होता भगवान अनंते, भगवान है जयकारी ॥ स्या०॥ आतम सत्ता अपनी अपनी दर्शन जैन विचारी ॥ स्याम० ६ ॥ धर नैवेद्य प्रभुपद पूजो मागें हो अधिकारी ॥ स्या० ॥ परमातम ज्ञानामृत भोजन की कर दो दातारी ॥स्याम० ७ ॥ द्रव्य कारण है भाव का होता, यातें द्रव्योपचारी ॥ स्या० आतमपद अर्थी प्रभु पूजें हरि कवीन्द्र जयकारी ॥ स्याम० ८ ॥ काव्यम् ॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधामधुर प्रचारै-र्नैवेद्यवस्तु विविधै विधिनोपढौकय । नित्यं बुभुक्षित पद-क्षतये यजामो, वीर निजात्म-परमामृत-दायकं तम् ॥ ॥ मन्त्र- ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान-शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय ज्ञानावरणीय कर्म-समूलोच्छेदाय श्रीवीरजिनेंद्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।

❀ अष्टमी-फल-पूजा ❀

(दोहा)

शिव सुख फलदाता प्रभु-पूजो फल धर भेंट ।
कर्ममूल कारण कटे- पाओ सुख भर पेट ॥ १ ॥
फल प्रभुजी चाहें नहीं- प्रभु नाम यह त्याग ।
त्यागी वैरागी बने- वीतराग महाभाग ॥ २ ॥

(तर्ज— हां मर्गीजी ने पेड़ा भावे)

आतमा शिवफल पावे—प्रभु पद में फल धार ॥ आ० टेर ॥ करम संतति काल अनादि- वश चेतन खोई आजादी। प्रभु पूजा शुभ कर्म कर्ममल दूर हटावे रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु पूजा में पाप खतावे, ज्ञानावरणी पाप उपावे। सत्ता-बंध-उदय ध्रुव तीनोंही हो जावे रे ॥ आ० २ ॥ जीव-विपाकी जड़ता धारे, अपरावर्तमान विचारे। आदिम नव गुण थानक तक नित बॅधती जावे रे ॥ आ० ३ ॥ ज्ञानावरज प्रकृति यह माती, देश सरव रूपे हो घाती । निज आतम गुण ज्ञान भाव को अरे मिटावे रे ॥ आ० ४ ॥ आठ सात छह साथे बंधे, ज्ञानावरणी सब अनुसंधे। होते भूयस्कार भवो भव गोता खावे रे ॥ आ० ५ ॥ कोडा कोडी सागर तासा, ज्ञानावरणी बंध विशेषा। तजो विराधक भाव अरे सद्गुरु समझावें रे ॥ आ० ६ ॥ परमातम पूजा चित धारे, ज्ञानावरणी दूर निवारे। आराधक आतम परमातम खुद हो जावे रे ॥ आ० ७ ॥ सुख सागर भगवान हमारे, जीवन फल के हैं दाता रे। हरि कवीन्द्र धर दिव्य भाव जय नाद उचारे रे॥आ०८॥ काव्यम् ॥ पीयूष पेशल-रसोत्तम-भावपूर्णैः—दिव्यैर्फलैर्गुणमयैं र्वलशालिभिश्च। भक्त्या समर्प्य विधिना प्रयजामहे श्री-वीरं सदाशिवफलाप्तिकृते समन्तात् ॥ मन्त्र- ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय ज्ञानावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्री वीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।



— दूसरे दिन दर्शनावरणीय कर्म निवारण पूजा पढावें —
प्रारंभ में मंगल पीठिका के दोहे और अन्त में कलश पहले दिन की पूजा से देख कर बोलें।
प्रति पूजा में काव्य भी पहिली पूजा के समान ही बोलने होंगे। मन्त्रों में कर्म नाम बदलना होगा।

दर्शनावरणीय-कर्म-निवारण-पूजा

मंगल पीठिका दोहा

पूर्ववत्

प्रथमा-जल-पूजा

(दोहा)

वस्तु तत्त्व सामान्य का- जहा होता है बोध।
दर्शन कहते हैं उसे, करे आतम गुण शोध ॥ १ ॥
प्रभु दर्शन निर्मल जले, निज मन मैल मिटाय।
प्रभुपद जल-पूजा करो, दर्शन गुण प्रकटाय ॥ २ ॥

(गजल तर्ज — कुशल गुरु देव के दर्शन मेरा दिल होत है पावन)

मिले परमात्म पद दर्शन- घड़ी धन भाग वह जानो। अगर हो आतम गुण दर्शन- घड़ी धन भाग वह जानो ॥ टेर ॥ लगा है आवरण पहरा- उसी गुण दिव्य दर्शन पर। हटाया जाय उसको तो घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि० १ ॥ प्रभु दर्शन प्रभु वन्दन प्रभु पूजन के करने से। प्रकटता भाव गुण दर्शन घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि० २ ॥ तपोधन ज्ञानधन जीवन सुजन विधि वर विधाता से। यहा पाने वहा पाने घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि० ३ ॥ अचक्षु चक्षु दर्शन से सदा जड़ भावमें रमते। यदा भव भय हटे वह तो घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि० ४ ॥ अचक्षु चक्षु दर्शन में-करो संयम

बनो योगी। प्रकट हो सत्य शिव सुन्दर- घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि०५॥ करें नर आत्म दर्शन वे– यहां भगवान होते हैं। करो पद वन्दना उनकी-घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि० ६ ॥ जगत सत चेतना चेतन–अचेतन तज भजो चेतन। सहज में हो सुदर्शन भी– घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि० ७॥ हमेशा हरिकवीन्द्रोंने– प्रभु दर्शन के गुण गाये। रसोदय आत्म सुख पाये– घड़ी धन भाग वह जानो ॥ मि०८॥ काव्यम् ॥ लोकैषणेति तृष्णोदयवारणाय० ॐ ह्री अर्हं परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर-जिनेन्द्रायजलं यजामहे स्वाहा।

द्वितीया–चन्दन–पूजा

(दोहा)

आतम दर्शन आवरण– क्षय उपशम हो भाव।
जो प्रभुपद दर्शन करें– प्रकटे पुण्य प्रभाव ॥ १ ॥
प्रभु दर्शन चन्दन रसे– अर्चित चर्चित रूप।
पाप ताप मिट जाय हो– जीवन शान्त–सरूप ॥२ ॥

(तर्ज— सदा भजो ब्रह्मचारा मे वारिजाउ)

प्रभु दर्शन सुखकारा मैं वारिजाउं पाउं धन अवतारा ॥ टेर॥ बावना-चन्दन शीतल स्वामी– पाप ताप दुख हारा मैं वारिजाउं पाप०। चन्दन पूजा विधि आराधन– जिन आगम अनुसारा-मैं वारिजाउं जिन० ॥ प्र० १ ॥ प्रभु द्वेषी अपलापी घाती, वैरविघन-आधारा मैं वारिजाउं वैर०। आसातन कर्ता को आश्रव–होता है दुख-भारा मैं वारिजाउं होता० ॥ प्र० २ ॥ आश्रव बन्ध हेतु होने से, कर्म बना प्रतिहारा मैं वारिजाउं कर्म०। दर्शन रोक लगाता हरदम, जीवन होता खारा मैं वारिजाउं जीवन०॥ प्र० ३ ॥ सत्ता बन्ध उदय

होते हो, दर्शन का न सहारा में वारिजाउ दर्शय० । जड़ अभिमुख पाता जन जीवन, चारगति संसारा में वारिजाउ चार० ॥ प्र०४॥ चक्षु अचक्षु अवधि-केवल दर्शनचार प्रकारा में वारिजाउ दर्शन० । आवरणे नहीं हो पाता है, दर्शन दिव्य विचारा मे वारिजाउ दर्शन० ॥ प्र० ५ ॥ बहिरातम रहता है आतम-भूलभुलैयाकारा में वारिजाउ भूल भुलैया० । अंतर आतम फिर परमातम पद न मिले अधिकारा मे वारिजाउ पद० ॥ प्र० ६ ॥ पुण्योदय से दुर्गति हटते सुर नर भव अवतारा मे वारिजाउ सुर० । सद्गुरुगम प्रभु दर्शन पायो चार निक्षेप प्रकारा मे वारिजाउ चार० ॥ प्र० ७ ॥ स्याद्वाद सुन्दर प्रभु दर्शन त्रिभुवन तारणहारा में वारिजाउ त्रिभुवन० । पाया हरि कवीन्द्र गुण कीर्तन गाया जय जयकारा में वारिजाउ गाया० ८ ॥— काव्यम् ॥ पापो पताप शमनाय महद् गुणाय० ॥ मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्री वीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

❁ तृतीया पुष्प पूजा ❁

(दोहा)

जीवन कुसुम विशेष को प्रभु चरणे दो चाढ ।
आतम में परमातम पद - दर्शन गुण हो गाढ ॥ १ ॥
कुसुम विकासी आतमा कली कली खिल जाय ।
प्रभु दर्शन के योगतें गुण सौरभ भर जाय ॥ २ ॥

(तर्ज — झीन्ला का— धन्य प्रभु जिन चन्द्र नमो हितकारी र०)

प्रभुपद कुसुम चढाओ, पुण्य चढाओ रे नर चतुर सुजान । जीवन कुसुम कली विकसित हो जावे रे सुजान ॥ टेर ॥ आखों से प्रभु दर्शन चक्षु दर्शन रे— नर चतुर सुजान । प्रभुपद फरस हरस मन मरना भावे रे—सुजान

॥ प्र० १ ॥ प्रभु गुण रस निज रसना योगे गाओ रे--नर चतुर सुजान। गुण सुगन्ध जो पावे, वहु सुख पावे रे--सुजान ॥ प्र० २ ॥ प्रभु गुण कीर्तन श्रवण मनन लय लावे रे--नर चतुर सुजान अचक्षु दर्शन यो पुण्य कमावे रे-सुजान ॥ प्र० ३ ॥ अवधि दर्शन सुरनर पशु भी पावे रे--नर चतुर सुजान। प्रभु दर्शन पा पावन पदवी भावे रे-- सुजान ॥ प्र० ४ ॥ यो विकास होते जन केवल पाता रे-- नरचतुर सुजान। भाग्यवान भगवान वही बन जावे रे-- सुजान ॥ प्र० ५ ॥ दर्शन रोधक प्रकृति दूर हटावे रे-- नर चतुर सुजान। मञ्जुल महिमा गुण सौरभ उपजावे रे-- सुजान ॥ प्र० ६ ॥ ध्रुव बन्धी ध्रुव उदयी ध्रुव सत्ता-की रे--नर चतुर सुजान। देश सरव घाती का घात करावे रे--सुजान ॥ प्र०७॥ हरि कवीन्द्र प्रभु चरणे कुसुम चढावे रे--नर चतुर सुजान। कुसुम विकासी आतम भाव बढावे रे--सुजान ॥ प्र० ८ ॥ काव्यम् ॥ चञ्चरसुपञ्चवरवर्णविराजि मिर्वै०। मन्त्र— ॐ ह्रीं अ० परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

चतुर्थी–धूप--पूजा

(दोहा)

काल अनादि नींद का-- आतम को है रोग।
प्रभुपद धूप विधान हो--जागृत जीवन योग ॥ २ ॥
धूप ऊर्ध्वगति को करे-- ऊर्ध्वगमन अधिकार।
प्रभु पद में वर धूप कर--चलो चारगति पार ॥ २ ॥

(तर्ज— पूजो पार्श्वनाथ भगवान शरण सुख कारणा रे)

पूजो प्रभुपद धूप सुगन्ध ऊर्ध्व गति कारणारे। प्रकटे निजगुण भाव निरोग-परम सुख कारणारे ॥टेर॥ आतम काल अनादि सोता, सोनेवाला निज धन खोता।

निर्धन रोना फिरना होता– भव दुख भारणा रे ॥पू० १॥ निद्रा निद्रानिद्रारूप प्रचलाप्रचला चूप। स्त्यान नर्दिका रूप अनूप– करे गुण हारणा रे ॥ पू० २॥ दर्शन आवरणे यह योग, पाचों निद्रा का भव रोग। मेटो धारो आतम योग– राग परिहारणा ॥ पू० ३ ॥ छट्ठे गुण ठाणे तक पाच, निद्रा करती गुण की खाच। उत्तम अप्रमाद गुण आच, धृप गुण धारणा रे ॥ पू० ४ ॥ बारहवें गुण ठाणे आप, निद्रा द्विक मिट जाता पाप। लगी तब वीतरागता छाप, करो सुविचारणा रे ॥ पू० ५ ॥ करम जड़ पुद्गल होता बंध, आतमा का रहता सम्बन्ध। क्रिया करते हो आतम अंध– न दर्शन सारणा रे ॥ पू० ६ ॥ पाया क्षय उपशममय भाव– प्रकटा आतम पुण्य प्रभाव। करके करम मूल में घाव भवोदधि तारणा रे ॥ पू० ७ ॥ पूजो सुखसागर भगवान– करते हरि कवीन्द्र गुणगान। भाव दर्शांगी धृप विधान– पूज विस्तारणा रे ॥ पू० ८ ॥ काव्यम् ॥ स्फुर्जरसुगन्धविधिनो र्ध्वगति प्रयाण०। मन्त्र– ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

पञ्चमी दीपक-पूजा

(दोहा)

गुण दीपक प्रभुकी सदा–दीपक ज्योति विधान।
पूजा कर तमतोम को–मेटो चतुर सुजान ॥१॥
प्रभु दर्शन ज्योतिर्विना– पथ नहीं पाया एक।
दीपक पूजा आतम पथ– पाओ परम विवेक ॥ २॥

(तर्ज— तुम को लाखों प्रणाम)

जगदीपक जिनराज प्रभु को लाखों प्रणाम। करूं सुदीपक धार प्रभु को लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥ करम दर्शनावरण उदय से– अन्धेरा छट गया हृदय

से। खिन्न हुआ भव भय से– प्रभु को लाखों प्रणाम ॥ जग० १ ॥ नव प्रकृति भव में भटकावे– विन दर्शन पद पद अटकावे। अब प्रभु पद आधार-प्रभु को लाखों प्रणाम ॥ जग० २ ॥ बाहर दीपक अन्तर दीपक–ज्योत जगी मिथ्यातम जीपक। प्रभु दर्शन बलिहार– प्रभु को लाखों प्रणाम ॥ जग० ३ ॥ युगपत दो उपयोग न होते– क्रमभावी जीवन में होते। प्रभु का ज्ञान प्रमाण--प्रभु को लाखों प्रणाम ॥ जग० ४ ॥ तर्क दलीलों से नित उपर–रहना है आतम गुण सुन्दर। अगम अगोचर रूप– प्रभु को लाखों प्रणाम ॥ जग० ५ ॥ दिव्य ज्ञान– दर्शनमय होता– उपयोगी जीवन दुःख खोता। अधिक अधिक अधिकार– प्रभु को लाखों प्रणाम ॥ जग० ६ ॥ सर्व द्रव्य प्रदेश अनन्ते-- उनसे गुण पर्याय अनन्ते। ज्ञान अनन्तानन्त– प्रभुको लाखों प्रणाम ॥ जग० ७ ॥ सब द्रव्यों में आतम मुखिया–ज्ञान दरस गुण होता सुखिया हरि कवीन्द्र नत भाव– प्रभु को लाखो प्रणाम ॥ जग० ८ ॥

॥ काव्यम्— सम्पूर्ण सिद्धि शिवमार्ग सुदर्शनाय०। मन्त्र–ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्री वीर जिनेन्द्राय दीपकं यजामहे स्वाहा।

षष्ठी–अक्षत--पूजा

(दोहा)

अक्षत गुण स्वस्तिक रचो-- चार गति हो चूर।
प्रभु सन्मुख स्वस्तिक करो-- भरो स्वस्ति गुणपूर ॥१॥
अक्षत उज्ज्वल सरलतम-- भावों से भगवान।
पूजो प्रणमो भविक जन-- पावो पद कल्यान ॥२॥

(तर्ज– पछी बावरिया०)

प्रभु पूजो अविकारी तिरो भव दुख दरिया। प्रभु शासन सुखकारी वसो नर शिव पुरिया ॥ टेर ॥ चक्षु अचक्षु अवधिदरसन–धारी प्रभु पूजें चित दरसन। केवल दरसन वरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र० १ ॥ भक्तिमार्ग में नींद निवारो, जागृत जीवन व्रत चित धारो। कर प्रभु पूजन चरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र० २ ॥ पंचम अंगे सती जयन्ती - सुपन जागरण प्रश्न करती। कर आतम जागरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र० ३ ॥ जीव अजीवाश्रित आश्रव से, होता सम्बन्धित भव भव से। करो करम संवरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र० ३ ॥ प्रकृति स्थिति रस बन्ध प्रदेशा होते होता आतम कलेशा। बंध रूप निरजरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र०५ ॥ कारण वश किरियायें होती, बन्धन परिणति उनसे होती। सावधान निसतरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र० ६ ॥ दर्शन रोक हटे प्रकटे वह, प्रभु दर्शन आतम दर्शन सह। होवे अजर अमरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र० ७ ॥ हरि कवीन्द्र प्रभु दर्शन पाया परमातम अक्षत गुण गाया। अक्षत गुण अधिकरिया वसो नर शिव पुरिया ॥ प्र० ८ ॥ काव्यम् ॥ कृत्वाऽक्षतै सुपरिणाम गुणे प्रशस्ते। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्ह परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्री वीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा।

❀ सप्तमी–नैवेद्य–पूजा ❀

(दोहा)

प्रभु आगे नैवेद्य धर मागू यह वरदान।
भवभवभूख रहे नहीं भाव भरो भगवान ॥१॥
मन मोदक मेरे प्रभु अमृत रूप अनूप।
नैवेद्य पूजा भाव में-- चाहूं शाश्वत रूप ॥ २ ॥

(तर्ज— गिरवरिये रो वासी प्यारो लागे मोरा राजींदा)

अमरापुर रो वासी प्यारो लागे म्हारा राजिंदा । भव वन वास म्हने अब खारो लागे म्हारा राजिंदा ॥ टेर ॥ अहारक गुण ठाण सयोगी, समुद्घातमें राजिंदा । तीन समय तक सर्व आहारे, रहित अन्त में राजिंदा ॥ अ० १ ॥ भव्य नैवेद्य धरो प्रभु दरशन, ध्यान लगाओ राजिंदा। ध्याता ध्याने ध्येय एकता ज्योत जगाओ राजिंदा ॥अ०२॥ पर्याता संज्ञी पंचेंद्रिय सब उपयोगी राजिंदा छाद्मस्थिक अन्तरमुहुरत मित-दर्शन भोगी राजिंदा ॥ अ० ३ ॥ केवल ज्ञान सुदर्शन होता, एक समय मिति राजिंदा । नह पाउं फल पा जाउं तब-सादि अनन्त थिति राजिंदा ॥अ०४॥ पर्याता चउरिन्द्रि असन्नि पञ्चेद्रिन्य में राजिंदा चक्षु अचक्षु दर्शन दोनों होय उभय में राजिंदा ॥ अ० ५ ॥ एकेन्द्रि से तेई-न्द्रिय तक दर्शन होता राजिंदा । एक अचक्षु प्रभु दर्शन विन, खाते गोता राजिंदा ॥ अ० ६ ॥ प्रभु दर्शन पाया धन अपना, जीवन जानो राजिंदा । प्रभु दर्शन से पावन अपना, दर्शन ठानो राजिंदा ॥ अ० ७ ॥ प्रभु दर्शन-पूजन में भावे नैवेद चाढो राजिंदा । हरि कवीन्द्र हो विजयी दर्शन निज गुण गाढो राजिंदा ॥ अ० ८ ॥ काव्यम् ॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधा मधुर प्रचारै० । मन्त्र ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।

❀ अष्टमी-फल-पूजा ❀

(दोहा)

फल पूजा फल त्याग कर– करो सदा मनरंग ।
शिव सुख फल पाओ तभी, सादि अनन्त अभंग ॥१॥
फल से फल होता यहां– देखो वर विज्ञान ।
प्रभुपद भाव अमोघ फल– पूजो विनय विधान ॥ २ ॥

(तर्ज-माढ-मरुधर म्हारो देश म्हाने प्यारो लागेजी)

म्हारे जीवन को आधार प्रभुपद प्यारो लागेजी। जो है त्रिभुवन तारण हार प्रभुपद प्यारो लागेजी ॥ टेर ॥ वस्तुगत सामान्य रहे, रहे भाव विशेषविशेष । दर्शन ज्ञान है बोध उन्हीका करता दूर कलेश रे। पद प्यारो० १ ॥ भेद अभेदे वर्णित होता स्याद्वाद विचार। पूर्वापर सब भावापेक्षित दर्शन पदनिर्धार रे। पद प्यारो०२ ॥ आज्ञा अपाय विपाक विचयसं-स्थान विचय धर्म ध्यान। जो कर पाते प्रभु पूजन में पा जाते कल्यान रे ॥ पद० ३ ॥ चौथे से सप्तम गुण थानक तक होता धर्म ध्यान। प्रभुपद दर्शन वन्दन पूजन में होता विज्ञान रे ॥ पद० ४ ॥ धर्मध्यान से शुक्ल सुलेश्या होता शुक्ल सुध्यान। ध्यान पवन घन घोर घटा हो-दूर करम व्यवधान रे ॥ पद० ५ ॥ शुक्ल ध्यान भी चार प्रकारी-पहिले के दो प्रकार। पूरवधर श्रुत केवली धारें- दो केवल पद धार रे ॥ पद० ६ ॥ ज्ञान को रोके दर्शन रोके- वह आवरण विकार, कर्म कहावें कर्म से काटो- तो हो बेडा पाररे ॥ पद० ७ ॥ सुखसागर भगवान प्रभुपद- निज पद में अवतार। हरि कवीन्द्र सफल विधिपूजो, पाओ शिवफल साररे ॥पद०८

॥ काव्यम् ॥ पीयूषपेशलरसोत्तम-भाव-पूर्णै ० ॥ मन्त्र- ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने दर्शनावरणीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर- जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।



— तीसरे दिन वेदनीय कर्म-निवारण पूजा पढावें —

प्रारम्भ में मगल पीठिका के दोहे और अन्त में कलश पहेले दिनकी पूजा से देख कर बोलें। प्रति पूजा में काव्य भी पहेली पूजा के समान ही बोलने होंगे। मन्त्रों में कर्म-नाम बदलना होगा।

* वेदनीय-कर्म-निवारण-पूजा *

मंगल पीठिका दोहे

पूर्ववत्

❀ प्रथमा जल पूजा ❀

(दोहा)

सुख दुख इस संसार में- होता कर्म विकार ।
समभावी हो मेट दो, पाओ पद अविकार ॥१॥
अविकारी भगवान हैं, भक्ति भाव जल धार ।
पूजो पूजा से बनो- पूज्येश्वर अवतार ॥ २ ॥

(तर्ज— तेरा इंतजार है नयनों में आकर बसना तेरा०)

होगा पार पार तूं- प्रभु की सेवा कर भवसे होगा पार पार तूं ॥ टेर ॥ सुरनर गति में सुखिया हो, नारक तिरिमें दुखिया हो। भूला ए गमार तूं- ॥ प्रभु की० १ ॥ मधु लिप्त खडग की धारा, साता व असाताकारा। खाई मार मार तूं ॥ प्रभु की० २ ॥ सुख दाद खाज के जैसा, दुख आग-जलन के जैसा। अनुभव सार सार तूं। प्रभु की० ३। सुखमें न फूलते जाना- दुखमें न कभी घबड़ाना। समाधि धार धार तूं ॥ प्रभु की०४ ॥ सम भाव बीज विकसेगा मुरझाया मन विहंसेगा। जोड़ तार तार तूं ॥ प्रभु की० ५ ॥ तीरथ जल कलेशा भरके, प्रभु की पद पूजा करके। मनडल हार हार तूं

॥ प्रभु की० ६ ॥ है द्रव्य भाव का हेतु— भवसागर तारक सेतु। मन में धार धार तू ॥ प्रभुकी० ७ ॥ हरि कवीन्द्र जय जय गाते, प्रभु पूजा ठाठ रचाते— सोचले वार वार तू ॥ प्रभु० ८ ॥ काव्यम् ॥ लोकेषणातितृष्णोदय वारणाय० ॥ मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने, वेदनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

द्वितीया-चन्दन-पूजा

(दोहा)

जन मानस दुख दहकना— पाप ताप भरपूर।
प्रभु चन्दन पूजा विधि— सहज समाधि सनूर ॥१॥
दुख असाता वेदनी— वश मन मूर्च्छा रोग।
प्रभु चन्दन पूजा रमे— शान्त बढे शिव भोग ॥२॥

(तर्ज— थारी गई र अनादि नींद० राग माड)

प्रभु चन्दन पूजा योग रोग मिट जाना है सही। निज शान्त समाधि विचार सार सुख आना है सही ॥ टेर॥ प्राणाभिसार प्रभु वैद्य मिले हैं, आराधो यही। सुविहित विधि पथ्य विधान, सदा शिव साधो तो सही ॥ प्र०१ ॥ अब निदान निश्चित जीवन में आया है यही। पर को दुख देकर लेश आतम-सुख पाया है नहीं ॥ प्र० २ ॥ मूल भूल यह मिटी जीव को जाना ही नहीं। दुख ही है दुख का मूल करम छिटकाना है सही ॥ प्र० ३ ॥ पुद्गल संगी सुख में फूले, फिरना है नहीं। सम भावी होकर सार तरह-भव तिरना है सही ॥ प्र० ४ ॥ अनुकम्पा और अभयदान की महिमा है यही। हो आतम शक्ति अनन्त कहीं भय होता ही नहीं ॥ प्र०५ ॥ आचारांगे पर हिंसा को, अपनी ही कही। हिंसक को होना दुख विपाके देखो गह गही ॥ प्र० ६ ॥ भाव अहिंसक प्रभु

पूजा में होता है सही। आतम परमातम रूप समझ में आता है यहीं ॥ प्र० ७ ॥ हरि कवीन्द्र नित नित आराधो पूजा पुण्य मही। कर द्रव्य भाव से पूज्य बनोगे, मिथ्या है नहीं ॥ प्र० ८ ॥ काव्यम् ॥ पापोपताप शमनाय महद् गुणाय०। मन्त्र– ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने वेदनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर-जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

❀ तृतीया–पुष्प–पूजा ❀

(दोहा)

फूलों से पूजा करो– फूले जीवन वेल ।
गुण सौरभ की हो यहां भारी रेलं पेल ॥१॥
प्रभु चरणों में फूलसा– जीवन अर्पण आप।
कर दें भर दें पुण्यसे– हो न पाप सन्ताप ॥२॥

(तर्ज— जाओ जाओ अय मेरे साधु रहो गुरु के संग)

पूजो पूजो प्रभु फूल विकासे, होता आत्म विकास। पुण्य प्रकाशे अवि–नाशी पद की प्रकटेगी सुख राश ॥ टेर ॥ शिव में भव में सुख होता है-वेदनी कर्म अघात। पुण्य योगतें साता बंधे बन्धे पाप असात ॥पू० १॥ छट्ठे गुण ठाणे तक होता, साता असाता बन्ध। उपर में तेरह तक होता, केवल सत्ता बन्ध ॥ पू० २ ॥ तेरहवें गुण ठाणे तक हो, उदय असाता साता। सत्ता प्रकृति उदय अयोगी गुण ठाणे विख्यात ॥ पू० ३ ॥ उदीरणा दोनों की होती, तक छठा गुण-ठाण। साढ़ी तेरह तक दो सत्ता साता, अंत सुजाण ॥ पू० ४ ॥ तेरहवें गुण ठान परीषह, ग्यारह रूप असात। पर साता कर वेदें प्रभुजी, यह शासन की बात ॥ पू० ५ ॥ दुख को सुख में बदल सके- यह श्रीजिन शासन सार। गोबर को गुड़ कर देने की शक्ति विशद विचार ॥ पू० ६ ॥ बनी बिगाड़ें बात

अज्ञानी उनका उलटा ढंग। बिगड़ी बात बनावें ज्ञानी, करो सदा सतसंग॥ पूजो० ॥ दुख में परम सहायक होता, जिन दर्शन दृढ रंग। हरि कवीन्द्र पाकर के उसको जीतो जीवन जग॥ पू०८॥ काव्यम्॥ चञ्चत्सुपञ्च वर वर्ण विरा जिभिर्वे०। मन्त्र – ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने वेदनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

॥ चतुर्थी–धूप–पूजा ॥

(दोहा)

खेवें धूप दशाङ्गको– हरे हृदय दुर्गन्ध।
वायु मण्डल शुद्धिसे– लगे पाप प्रतिबन्ध॥१॥
पूजा धूप विशेषको– करते पुण्य-प्रसंग।
प्रभु महिमा मे आतमा– परिचित हो दृढरग॥२॥

(तर्ज— जाग जाग तू प्रभात काल भयो आतर)

करम करम से कटे, मिटे सभी विकार रे। धूप धूम धार धार, प्रभु सेव सार रे॥ धू० टेर॥ प्रभु सेव आतमा निमित्त चित्त धार रे। कर्त्ता कर्म कारकों में आतमा उतार रे॥ धू० १॥ प्रवाह से अनादि काल आतमा में कर्म जाल। फैल रहा दुःख महा– दे रहा कराल रे॥ धू० २॥ कर विवेक नेक चेत, चेत आतमा अचेत!। चेत गये रहे, तू शीघ्र हो सचेत रे॥धू०३॥ वेदनीय है अघात–किन्तु घात कर्म तात। अधिक अधिक होय घात, पेच नहीं आत रे॥ धू० ४॥ तीस कोड़ा कोड़ि बंध– सागर उत्कृष्ट धध। अंध भार हो रहा है वेदनी संबंध रे॥ धू० ५॥ प्रभु चरण शरण पाय आचरण शुद्ध ठाय। हो अमाय पुण्य काय– ध्यान लय लाय रे॥ धू० ६॥ पुण्य सूत्र कात कात बंध हो सदैव मात। प्रभु पूज दिवस रात– और कर न बात रे॥धू०७॥

देव लोक में अशोक-- शाश्वत जिन धोक धोक। हरि कवीन्द्र लोक करें-कीर्ति थोक थोक रे॥ धू०८॥ काव्यम्॥ स्फूर्जत्सुगन्ध विधिनोर्ध्वगति प्रयाणैः० ॥ मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने वेदनीय--कर्म--समूलोच्छेदाय श्रीवीर-जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

❀ पञ्चमी-दीपक-पूजा ❀

(दोहा)

जगदीपक परकाश में- पुण्य पाप का भेद ।
कर पाओ पाओ तभी- भेद रहे ना खेद ॥१॥
प्रभु सन्मुख दीपक धरो-भरो हृदय में जोत ।
अंधेरा मिट जायगा- होगा जग उद्योत ॥ २ ॥

(तर्ज— झंडा ऊँचा रहे हमारा)

पूजो श्री जिन जयजय कारा- दीपक भाव भरो अविकारा॥ टेर ॥ जग दीपक की ज्योति विचारा- भव सागर का मिला किनारा। झटपट होगा अव निसतारा॥ पूजो०१ ॥ दुख को सुख माना संसारे, उसमें उलझे हो दुखियारे। चौरासी लख चक्कर मारा ॥ पूजो० २ ॥ सुख में फूले भूले स्वामी, होकर केवल काम हरामी। जीवन में छाया अन्धियारा ॥ पूजो० ३ ॥ उपशम श्रेणि साता बंधे, गिरना होता करम संबंधे। देव हुए जहँ भोग अपारा॥ पूजो० ४॥ सरवारथ सिद्धे हो देवा, आतम परमातम समरेवा। अनुपम उनका है अधि-कारा॥ पूजो० ५ ॥ प्रभु गुण समरण कीर्तन करते, द्रव्य भाव अरचन आच-रते। अंत रूप उनका संसारा ॥ पूजो०६ ॥ भव दुख को दुख जो नहीं माने। आतम परमातम पद ध्याने उनका वजता विजय नगारा॥ पूजो० ७ ॥ हरि कवीन्द्र श्री प्रभु पद साधा, आतम सुख अव अव्यावाधा अजर अमर पद

हुआ हमारा ॥ पूजो० ८ ॥ काव्यम् ॥ सम्पूर्ण सिद्धि शिवमार्ग सुदर्शनाय० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने वेदनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय धूप यजामहे स्वाहा ।

❀ षष्ठी–अक्षत–पूजा ❀

(दोहा)

अक्षत स्वस्तिक विरचते– भरो स्वस्ति भण्डार ।
पुण्य प्रशस्ति जगतमें– फैले विगत विकार ॥१॥
अक्षत अक्षत भाव हों, सरस सुकोमल सार ।
प्रभु पूजा अक्षत विधि– क्षत विक्षत संसार ॥२॥
(राग– आशाउरी– (तर्ज — मंदिरा मिद्ध चक्र पद वन्दो)

प्रभु शासन में आओ रे भविका, निज हित सहज उपाओ । भविका प्रभु शासन में आओ ॥ टेर ॥ सरल अशठ अक्षत गुण धारी, प्रभु पूजो अविकारी । प्रभु गुण से निज गुण प्रकटाओ, आतम सुख अधिकारी रे ॥ भ० १ ॥ दुख मत दो मत सोच कराओ, मत सतापो कोई । क्यों कि ऐसा करने से ही, बंध असाता होई रे ॥ भ० २ ॥ औरों का न रुलाओ किसी को, मत मारो हे भाई । हँस हँस बांधे कर्म न छूटे, रो रो कर मर जाई रे ॥ भ० ३ ॥ मन से खोटे घाट घड़ो ना, मुख न अमंगल बोलो । काया से कुचेष्टा करके, दुर्गति द्वार न खोलो रे ॥ भ० ४ ॥ चौड़े छाने किये करम का, बन्ध अवश्य होवेगा । देर अबेर भले हो किन्तु, आखिर फल आयेगा रे ॥भ०५॥ साधु सता ये जीव दुखाये, कभी भला नहीं होगा । आप ही आप समय आने पर, अंत भुगतना होगा रे ॥ भ० ६ ॥ पाप करो मत पड़ जायेगा, बन्ध असाता भारी । सुनो विपाके मिरगा लोढा, देखो कुष्ट भिखारी रे ॥ भ० ७ ॥ हरि कवीन्द्र जब

श्रीजिन शासन-जीवन साता कारी। अक्षत पूजा पुण्य उपाओ-आनन्द मंगल कारी रे॥ भ० ८॥ काव्यम्॥ कृत्वाक्षतैः सुपरिणाम गुणैः प्रशस्तैः ०॥ मन्त्र ॐ ह्रीं अर्ह परमात्मने वेदनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर- जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा।

❀ सप्तमी-नैवेद्य-पूजा ❀

(दोहा)

पेट पाप का मूल है, पेट रोग आधार।
प्रभु पूजो नैवेद्यसे, मिटे पेट व्यापार॥१॥
सञ्ज्ञा जो आहार की, लगी अनादिकाल।
प्रभु पद आराधो मिटे, महा मोह की चाल॥२॥

(तर्ज— वीच्छुडे री काटी पदमण चाली हो विच्छुडा ल्हेदार विच्छुडा)

पेट पाप का मूल न सेवा सारी हो सांवरिया। यही अनादि भूल, लगा दुख भारी हो सांवरिया। दया करो हे गुणदरिया। दुख को मेटो सांव-रिया॥ टेर॥ भर नैवेद को थाल धरूं प्रभु आगे हो सांवरिया। त्याग भाव मय अनाहारता जागे हो सांवरिया। दया० पेट० १॥ त्याग भावना त्यागी जीवन देता हो सांवरिया, वीतराग पद पूरण त्यागी होता हो सांवरिया॥दया० पेट० २॥ भूल गये रंग राग भूल गये छकड़ो हो सांवरिया। पुगद्ल संगे पुद्गल परिणति पकड़ी हो सांवरिया॥ दया० पेट० ३॥ प्राणी अनुकम्पाहित पुद्गल त्यागूं हो सांवरिया। साधु सेवा लागूं अमृत मांगूं हो सांवरिया॥ दया० पेट०४ सुर्वां मेव। देती सेवा करते हो सांवरिया। साता प्रकृति वंध उदय अनुसरते हो॥ सांवरिया॥ दया० पेट० ५॥ साता प्रकृति पुण्य बन्ध से मिलते हो सांवरिया। दुर्लभ चारों अंग अंग में खिलते हो सांवरिया॥दया० पेट०६।

मानवता पा श्रुतमें श्रद्धाधारी हो सावरिया। संयम धर विचरू आतम अधि कारी हो सावरिया ॥ दया० पेट० ७॥ हरि कवीन्द्र जन अगम अगोचर होवा हो सावरिया। परमातम पद पाऊँ करम मल खोता हो सावरिया ॥दया० पेट० ८ ॥ काव्यम् ॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधामधुर प्रचारै० ॥ मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने वेदनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर–जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

❁ अष्टमी–फल–पूजा ❁

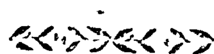
(दोहा)

करो अमरफल क लिये, फल पूजा विस्तार।
मिटे असाता फल मिले– साता शिव अनुसार १ ॥
फल चाहो फल को धरो, प्रभु पूजा में खास।
क्रिया कार्य साधक कही, ज्ञान क्रिया शिववास ॥ १ ॥

(तर्ज– माला काँ र आला चीरजा)

पूजन कर पाओ साता सुख पाओ मेरी आतमा ॥टेर॥ कर्म वेदनी सात असाता प्रकृति उभय अघाती। बंध उदय अध्रुव जो होती, सत्ता ध्रुव कह– लाती रे ॥ पू० १ ॥ कोड़ा कोडी सागर तीसा, स्थिति उत्कृष्टी होती। चय करके जीवन अपने में, प्रकटा दो गुण ज्योती रे ॥ पू० २ ॥ पुण्य रूप से साता होती, सुर नर में अधिकाई। पाप असाता तिरि नारक में होती है दुखदाई रे ॥ पू० ३ ॥ सुरगति में शाश्वत जिन पूजो जिन कल्याणक योगे उत्तम नर भव प्रभु पूजन कर, पूरण प्रभुता भोगे रे ॥पू०४॥ प्रभु पूजा द्वेषी पापोदय नरक महादुख पावे। परमाधामी तीव्र विपाके, रोरो समय बितावे रे ॥ पू०५ ॥ भूख तृषा और पराधीनता, वध बन्धन तिर्यंचे। प्रकृति असाता बँध जाती है, जीवन पाप प्रपंचे रे ॥ पू० ६ ॥ सात असाता क्षय कर होने अर्हं

आप अयोगी। सिद्ध रूप होते हैं स्वामी, शिव सुख फल के भोगी रे ॥ पू० ७ ॥ सुख सागर भगवान परम गुरु हरि पूज्येश्वर स्वामी। कवीन्द्र आतम शिव फल दाता, पूजो अन्तर्यामी रे ॥ पू० ८ ॥ काव्यम् ॥ पीयूषपेशल रसोत्तम भाव पूर्णैः० । मन्त्र — ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने वेदनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर-जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।



* चौथे दिन मोहनीय कर्म निवारण पूजा पढ़ावें *

प्रारम्भ मे मङ्गल पीठिका के दोहे और अन्त मे कलश पहले दिन की पूजा से देख कर बोलें। प्रति पूजा मे काव्य भी पहली पूजा के समान ही बोलने होंगे। मन्त्र में कर्म नाम बदलना होगा।

⁂ मोहनीय–कर्म–निवारण–पूजा ⁂

मंगल पीठिका के दोहे

पूर्ववत्०

❀ प्रथमा–जल–पूजा ❀

(दोहा)

मोह महाबलवान है-- जीते सो जिन देव ।
जिन पूजा से जय विजय,--होती है स्वयमेव ॥१॥
जल पूजा विधियोग से– अन्तर्मल मिट जाय।
मोह महा तृष्णा हटे, बोध बीज विकसाय ॥२॥

(तर्ज— झंडा ऊँचा रहे हमारा० राग चउपई)

जो जल से जिन पूजा करेंगे। पाप ताप मल दूर हरेंगे ॥टेर॥ मोह करम दल बल अतिभारी। जीते जिनवर जग जयकारी। जिनपूजा जय-विजय वरेंगे।

जो जल से जिन पूज करेंगे ॥ पा० १ ॥ मोह करम मादक मदिरा सा। पुद्गल भोग विषय विष प्यासा। कर अभिलाषा दुःख भरेंगे। जो जल से जिन पूज करेंगे ॥ पा० २ ॥ दर्शन और चरण में होता। मोह अरे! आतम गुण खोता। आतम अर्थी दूर टरेंगे। जो जलसे जिन पूज करेंगे ॥ पा० ३ ॥ श्रद्धा ठीक हुई जिसके पर। मनमें रहती शंका घर कर। समकित मोह न भव्य धरेंगे। जो जलसे जिन पूज करेंगे ॥ पा० ४ ॥ साँच झूठ में भेद न जाने। मिश्र मोह खल गुड सम ठाने। ज्ञानी उसमें नहीं परेंगे। जो जल से जिन पूज करेंगे ॥ पा० ५ ॥ चेतन केवल जड़ अभिमुख हो। मिथ्या मोह न आतम सुख हो। सुजन सदा जड़ सग डरेंगे। जो जल से जिन पूज करेंगे॥ ॥ पा० ६ ॥ दर्शन मोहे तीन प्रकारा। सद्गुरुगम कर विशद विचारा। आतम अपनी गति पसरेंगे। जो जलसे जिन पूज करेंगे ॥ पा०७ ॥ हरि कवीन्द्र जन दर्शन मोहे। नारक तिरि दुरगति अवरोहे। समकित धर शिवगति विचरेंगे। जो जल से जिन पूज करेंगे ॥पा०८॥ काव्यम् ॥ लोकेषणाति तृष्णोदयवारणा०॥ मन्त्र — ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने मोहनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर-जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

॥ द्वितीया-चन्दन-पूजा ॥

(दोहा)

मोहनाग विष आग से- सन्तापित सब लोक।
प्रभुपद चन्दन सरस रस- होवें भाव अशोक ॥१॥
भेदाभेद विचार से- चन्दन होना आप।
प्रभुपद के सतसंग में- मिटे पाप सताप ॥२॥

(तर्ज— उठ जाग मुसाफिर भोर भया अब रैन कहां जो तू सोवत है०)

चन्दन पूजा के भाव भरो, खुद चन्दन रूप अनूप धरो। फिर मोहनाग-विषसे न डरो, सुख सहज-समाधि आप वरो ॥टेर॥ सित्तर कोडाकोडी सागर, उत्कृष्ट मोह थिति वन्ध कहा। हो सावधान उस को तोड़ो-- भव भाव उदासी हो विचरो ॥ चं० १ ॥ इस मोह करम दुखदायी की-- हैं आठ वीस प्रकृति आवो। मोहनीय तीन सोलह कषाय--नव नो-कपाय सब दूर करो ॥ चं० २ ॥ दर्शन चारित्र गुणों का घात-- करे यह घाती मोह करम। जो तोड़ सकें जन धन्य धन्य-- आदर बहुमान सदैव करो ॥ चं० ३ ॥ क्रोधादि अनन्तानुबन्धी-ये यावज्जीवन होते हैं। मिथ्यात्व इन्हीं में होता है, उस को अब चकना चूर करो ॥ चं०४ ॥ पर्वत रेखा सा क्रोध मान-खम्भा पत्थर का सा होता। घन वंश मूलसी माया लोभ-- कीरमची रंग का नाश करो ॥ चं० ५ ॥ जड़ चल जग-जूंठन पुद्गल की-- ममता से आतम बहिरातम। जड़ चेतन भाव विवेक सार अन्तर आतम पद आप धरो । चं० ६ ॥ तीर्थंकर कल्याणक-वीहार-- भूमी तीरथ तारण हारे। तीर्थंकर प्रतिमा के पावन-- दर्शन से दर्शन प्राप्त करो ॥ चं० ७ ॥ नित हरि कवीन्द्र प्रभु दर्शन से-प्रभुता जीवनमें प्रकटाओ। आतम गुण घाती मोह करम को- दूर दूर कर विघटाओ ॥ चं० ८ ॥ काव्यम् ॥ पापोप ताप शमनाय महद्गुणाय० ॥ मन्त्र- ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने मोहनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

— तृतीया–पुष्प–पूजा —

(दोहा)

पञ्च वरण के फूल से– प्रभु पञ्चम गतिमूल ।
पूजो दर्शन– योगतैं– मिटे अनादि मूल ॥ १ ॥
अप्रत्याख्यानी तजो– चार कषाय विशेष ।
भजो प्रत्याख्यान को– सेवो देव–जिनेश ॥ २ ॥

(तर्ज— नित गुण गावत सुर सुंदरी०)

प्रभु दर्शन दुख दूर करे, दर्शन सुख भर पूर भरे ॥ प्र० टेर ॥ फूल से पूजा श्री जिनवर की— फूल विकास विकास करे। चार कषाय अप्रत्याख्यानी, पुरुषारथ से दूर टरे ॥ प्र० १ ॥ पृथिवी रेखा क्रोध कहा है अस्थी सम है मान अरे। माया भेड़ सींग के जैसी, लोभ सुकर्दम रंग भरे ॥ प्र०२ ॥ तिर्यंच गति मनि कारण हैं ये, चतुर न इनको चित्त धरे। जीव विपाकी घाती सारे, जीव विवेकी भेद करें ॥ प्र० ३ ॥ वध उदय चोथे नवमें गुण— थानक सत्ता अन्त करे। वह धन दिन अवसर वह होगा, अकषायी हो हम विचरे ॥ प्र० ४ ॥ ये कषाय अप्रत्याख्यानी— बारमास में नियत टरें। प्रति क्रमण संवत्सर यातें— जीवन पावन भाव भरे ॥ प्र० ५ ॥ अप्रत्याख्यानी गुण ठाणे—अविरत सम्यग दृष्टि धरे। सुरनर पति सविशेष रूप से— प्रभु पूजा कर पाप हरे ॥ प्र० ६ ॥ अप्रत्याख्यानी प्रकृति ये— सर्वघाति अति यातें डरे। प्रभु पूजा कर प्रभु से सविनय - अकषायी वर दान वरे ॥ प्र०७ ॥ हरि कवीन्द्र कुसुम वर भावे— आतम पूर्ण विकास करे। उत्तरोत्तर गुण थानक फरसे— आतम पहुंचे आप घरे ॥ प्र०८ ॥ काव्यम् ॥ चञ्चत्सुपञ्च वर वर्ण विराजिभि र्वे० । मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने मोहनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

❀ चतुर्थी–धूप–पूजा ❀

(दोहा)

प्रभु सन्मुख धर धूप को, भावो यह विचार ।
करम धुआ उड़त हुआ, गुण सुगन्ध विस्तार ॥१॥
प्रभु गुण पावन धूप से— धूपित आतम प्रदेश ।
भाव निरामयता लहे— यह सद्गुरु उपदेश ॥२॥

अक्षय पद पावो, अक्षत प्रभु पूजो भविजन भाव से ॥ टेर॥ कषाय सहचारी होते नव- नो कषाय जीवन में। दूर करो प्रभु पूजन करते, पूज्य बनो त्रिभुवन में रे ॥ अक्षय० १॥ रोगमूल खांसी होती है, झगड़े की जड़ हांसी है करनेवालों को लग जाती– मोह करम की फांसी रे॥ आतम० २ ॥ जड़ अनुभाग रति अरति वह– अप्रीति होती है। रति अरति करते आतम की मिटी महा ज्योती है रे ॥ आतम०३ ॥ अप्रिय घटना घट जाने से, या अप्रिय चिन्तन से। शोक प्रकटता उसे मिटाओ, परमातम पूजन से रे ॥ आतम०४॥ भय मत पैदा करो अन्य को, मत निजमें भय लाओ। आतम भावे निर्भयता धर, अजर अमर पद पाओ रे ॥ आतम० ५ ॥ घृणा निवारो तत्व विचारो, हो द्रव्यानुयोगी। आतम उपयोगी हो जाओ, परमातम पद भोगी रे ॥ आतम० ६ ॥ बन्ध उदय उदीरण सत्ता-कर्म-विपाक विचारो। हास्यादिक कुछ नहीं दीखें पर-महा भयंकर वारो रे ॥ आतम० ७॥ भय-कुत्सा ध्रुव बन्धी अध्रुव-बन्धी हास्यादिक हैं। हरि कवीन्द्र प्रभु ध्यान लीन हो-त्यागें धन्य अधिक हैं रे ॥ आतम० ८ ॥ काव्यम् ॥ कृत्वाक्षतैः सुपरिणाम गुणैः प्रशस्तैः ० । मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने मोहनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

सप्तमी–नैवेद्य–पूजा

(दोहा)

भाव अवेदी श्री प्रभु– पूजो धर नैवेद ।
द्रव्यालम्बन भाव से– मिटे वेद का खेद ॥ १॥
आप अवेदी आतमा– कर्म जनित हैं वेद ।
भाओ ऐसी भावना– वेद रहे ना खेद ॥२॥

(तर्ज— कागे लागो र दवरिया मोम मंग चल्यो ना जाय)

काम यो कैसे जीत्यो जाय। काम यो कैसे जीत्यो जाय। प्रभु पद को धर ध्यान— काम या ऐसे जीत्यो जाय ॥ टेर ॥ रसना लम्पट जन जीवन में जहा तहाँ भटकाय। नैवेद त्याग लाग प्रभु पूजा लम्पटता मिट जाय ॥का० १ ॥ सडन पडन विध्वसन भावी-- पुद्गल वना शरीर। नव दश द्वारों से मल झरना हम हैं वहीं अधीर ॥ का० २ ॥ न्हा धोकर कर टाप टीप सुन्दरता दिखलाते। रोम रोम से झरता है मल पर हम इठलाते ॥ का० ३ ॥ नरको नारी नारी को नर, प्यार परस्पर करते। पुद्गल से मिल जुल कर के हम जीते भी है मरते ॥ का० ४ ॥ दिन अन्धा कोइ अन्धा राते काम अन्ध दिन रात। नर नारी नपुनक वेदी, खेद दु ख नित पात ॥ का० ५ ॥ नवमे गुण ठाणे वेदों का मूल शूल कट जाय। प्रभु गुण से निज गुण विकसित हो, करम भरम मिट जाय ॥ का० ६ ॥ निर्वेदी प्रभु नैवेद पूजो निर्वेदी पद योग । अविकारी अविनाशी पाओ, निज आतम सुख भोग ॥ का० ७ ॥ मोह प्रकृति वेदों को छेदे जो बड़ भागी लोक। हरि कवीन्द्र करते नित उनके– श्रीचरणों में धोक ॥ का० ८ ॥ काव्यम् ॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधामधुर प्रचारै० ॥ मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने मोहनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा।

❀ अष्टमी-फल-पूजा ❀

सदा सफल पूजा करो, चित्त प्रसन्न प्रधान ।
सफल काम फिर होंय सब– भजो सदा भगवान ॥१॥
मोह महा बलवान को– जीते सो जिन होय ।
जिन पूजो जिन पद मिले– ज्ञाता लो अवलोय ॥२॥

([illegible])

यो मोह-करम [illegible]—जिनमें नाम [illegible] ॥ प्रभु पूजा

विनय विधान— सफल हो निज करनाजी निज करना ॥ टेर॥

दुख ही दुख पड़ना रहे— [illegible] ।

[illegible] सत देना [illegible]— [illegible] ॥

यों सनमारग उपदेश, जगको निज करनाजी निज करना ॥ यो० १ ॥

जीव अजीव नहीं नहीं— पुन्य पाप-परलोक ।

खाना पीना मौज में— रहना है इस लोक ॥

ये नास्तिकता के भाव, कभी मत अनुसरनाजी अनुसरना ॥ यो० २ ॥

देव द्रव्य का नाश मत— करना चतुर सुजान ।

देव प्ररूपित धर्म में— हो उपयोग विधान ॥

यह देश काल अनुमान, समझ कर निज करनाजी निज करना ॥ यो० ३ ॥

जिन जीवन को जान कर— अप कल्याण विधान ।

भूल न खोजो आपकी— होगी भूल महान ॥

प्रभु गुण पावन पुण्य प्रधान— हृदय में आदरनाजी आदरना ॥ यो० ४ ॥

संयमि साधु साध्वी—गण से करो न द्वेष ।

उनकी निन्दा से अरे— होगा भव भव क्लेश ॥

निंदा होती नरक की खाण— निन्दा परिहरनाजी परिहरना ॥ यो० ५ ॥

जिन प्रतिमा जिन सारखी— समोसरण में देख ।

पूर्व दिशा प्रभु ओर में-- प्रतिमा का उल्लेख ॥

यों आगम के अनुसार भाव से दिल भरनाजी दिल भरना ॥ यो० ६ ॥

मोह करम के नाश से-- सुखसागर भगवान ।

जिन हरि पूज्योश्वर बने– सेवो सफल विधान ।
सेवा मेवा हो तैयार– अमर पद नित वरनाजी नित वरना ॥ यो० ७ ॥
संघ चतुर्विध तीर्थ है– तीरथ तारण हार ।
तीरथ पति के तीर्थ में– मेटो मोह विकार ॥
कवीन्दर करते जय जय कार, तीरथ से नित तिरनाजी नित तिरना ॥यो०८॥
॥ काव्यम् ॥ पीयूष पेशल रसोत्तम भावपूर्णै० । मन्त्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मने मोहनीय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वा० ।

— पांचवें दिन आयुष्य कर्म-निवारण पूजा करावें —
प्रारम्भ में मगध पाठिका के दोहे और अन्त में कलश पहले दिन की पूजा से देख कर बोलें । प्रति पूजा में काव्य भी पहली पूजा के समान ही बोलने होंगे । मन्त्रों में कर्म-नाम बदलना होगा ।

※ आयुष्य-कर्म-निवारण-पूजा ※

मगध पीठिका के दोहे

पूर्ववत्

❀ प्रथमा–जल–पूजा ❀

(दोहा)

जीवन कारागार सा, आयु करम सम्बन्ध ।
होता चार प्रकार से, चारगति प्रतिबन्ध ॥१॥
पुरुषारथ प्रभु की दया, प्रभु पूजा अधिकार ।
निज प्रभुता प्रकटे मिटे, भव भय कारागार ॥२॥

(तर्जः— अवधू सो योगी गुरु मेरा—अशावरी)

प्रभु पूजा अधिकारे आतम निज प्रभुता प्रकटावे ॥ टेर ॥ कर्म महामल प्रति पल लगता, जल पूजा बह जावे। निर्मलता पाई प्रभुताई, शाश्वत निज सुख पावे ॥ आतम० १ ॥ जड़ चेतन दोनों की होती--स्थिति-आयुष्य कहावे। आयु कर्म अघाती होता, चारगति पहुंचावे ॥ आतम०२ ॥ समय समय में कारण योगे— सात करम बँधते हैं। ओघे काला अबाधा उदये—सुख दुख फल सँधते हैं ॥ आतम०३ ॥ जीवन के तीजे हिस्से जब— आयु कर्म उपावे। उसी समय में आठ करम का— बन्ध गुरु समझावें ॥ आतम० ४ ॥ आगामी भव आयुष बंधता, प्रति भव बस इकवारा। प्रायः पर्वतिथि में यातें, धर्म करो सुखकारा ॥ आतम० ५ ॥ भव भव में यों आयुष प्रकृति— हथकडियाँ पड़ती हैं। काटो इन को शिवपुर जाते— जो आड़ी अड़ती हैं॥ आतम०६ ॥ प्रति भव आयुष कर्म भोगते, काल अनन्त गमाया। प्रभु आगम जीवन अधिगम से— करम मरम समझाया ॥ आतम०७ ॥ सुखसागर भगवान प्रभु पद—द्रव्य-भाव जल धारा। पूजन जन कीरतियां गावें— हरि कवीन्द्र जयकारा ॥ आतम०८ ॥

॥ काव्यम् ॥ लोकेषणाति तृष्णोद्‌य वारणाय० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्ह परमात्मने आयुष्य कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

❀ द्वितीया—चन्दन—पूजा ❀

(दोहा)

भवगति आयुष योग ते, हो जाती है कैद ।
प्रभु पूजो प्रभु आप हैं, इसी रोग के वैद ॥१॥
आधि व्याधि उपाधि के-- त्रिविध ताप सन्ताप ।
प्रभु पूजा से हों नहीं-- प्रभु पूजो अब आप ॥२॥

(तर्ज— म्हारो कागमियो पणिहार्या लेग" र०)

पूजो चन्दन से, भव फन्द सभी कट जाय ॥ पूजो० टेर ॥ प्रभु चन्दन अनुरूप है, प्रभु तीन भुवन सिर भूप ॥ पूजो० ॥ आतम गुण उपयोग से– प्रभु दूर करें भव कूप ॥ पूजो० १ ॥ अध्रुव बन्ध उदय सत्ता में, आयु कर्म सरूप ॥ पूजो० ॥ कैद रूप काटो इसे– पद पावो आप अनूप ॥ पूजो० २ ॥ जीना मरना ये सभी हैं आयुष के अधिकार ॥पूजो०॥ चाहो ज्यों होता नहीं, होता कर्मानुसार ॥ पूजो० ३ ॥ वाह्य निमित्तों से कटे, आयुष अपवर्तन नाम ॥ पूजो० ॥ इतर अनपवर्तन कहा, जो पाता पूर्ण विराम ॥ पूजो० ४ ॥ देव मनुज तिर्यंच में आयु प्रकृति शुभ योग ॥ पूजो० ॥ नरक अशुभ आयुष्य का हो अपने आप वियोग ॥ पूजो० ५ ॥ श्वास न आयु हैं यहा ये हेतु हेतुमद भाव ॥ पूजो०॥ प्रभु पूजा में, श्वास की गति होती सहज सुभाव ॥पूजो०६॥ निश्चय नय घट बढ नहीं होती, घट वढे नय व्यवहार ॥ पूजो०॥ निश्चय वर व्यवहार उभयपद जिन दर्शन चित धार ॥ पूजो०७ ॥ जिन दर्शन पाये विना, यह आयुष यों ही जाय ॥ पूजो० ॥ हरि कवीन्द्र प्रभु दर्शने हो आयु सफल सुखदाय ॥ पूजो०८ ॥ काव्यम् ॥ पापो पताप शमनाय महद्‌ गुणाय० । मन्त्र– ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने आयु कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

❀ तृतीया–पुष्प–पूजा ❀

(दोहा)

अर्हं पद अधिकार में पूजातिशय विचार ।
हृदय कमल अर्पण करो तज दो विषय विकार ॥१॥
प्रभु पद कमल प्रभाव से कमल प्रभा कमनीय ।
जीवन पूर्ण विकास मय– होता जन नमनीय ॥२॥

(तर्ज— प्रभु गल सोहे मोतीयन को माला० श्याम कल्यान)

विकास को पाओगे करो प्रभु पूजा। विकास को पाओगे ।टेर। पूज्य की पूजा पूज्य बनावे, गिरते हुओं को तुरत उठावे। गुणी संग कर गुण आप उपाओगे ॥ करो० १ ॥ हिंसा करो मत, मत झूठ बोलो, चोरी करो मत, विषय न तोलो। रौद्र ध्यान नरकायु निपाओगे ॥ करो० २ ॥ अपने परायों से द्रोह करो ना। अपने परायों की घात करो ना। द्रोह घात नरकायु बढाओगे ॥ करो० ३ ॥ साधु गुणी की निन्दा न करना, निन्दक जनका संग परिहरना। निन्दा कुसंगे दुर्गति जाओगे ॥ करो० ४ ॥ काम क्रोध मद मोह विकारा, दूर निवारो बनो अविकारा। सविकारी दुख-भार कमाओगे ॥ करो०५ ॥ मिथ्यात्वे बंधता नरकायु, भांग पिये ज्यों बढता वायु। दुखदायी मिथ्यात्व गमाओगे ॥ करो०६ ॥ सात गुण स्थानक तक सत्ता, नरकायु को आगे धत्ता। देते हुए निज शक्ति लगाओगे ॥ करो०७ ॥ नारक भी सम्यक्त्वी होते, पूरब भव कृत पाप को धोते। हरि कवीन्द्र नरभव सुख पाओगे ॥ करो०८ ॥ काव्यम् ॥ चक्षुस्सुपक्ष्वरवर्ण विराजिबिंबैं०। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने आयुष्य कर्म-समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

चतुर्थी-धूप-पूजा

(दोहा)

धूप धरो ऊँचा चढो, पाओ सुगुण सुगन्ध।
रोग शोक व्यापे नहीं- मिटे पाप-दुर्गन्ध ॥ १ ॥
प्रभु पूजा की भावना- आतम-भाव प्रकाश।
परमातमता प्रकट हो- जीवन ज्योति विकास ॥२॥

(तर्ज— लटपट छाड नागर वेल करेलवा०)

भविक जन ! प्रभु आसातन टार । भविक जन प्रभु पूजन चितधार । भविक जन प्रभु आसातन टार ॥ टेर ॥ अर्हंपद आसातना काइ दुर्गति पद दातार । नरक और तिर्यंचका काइ आयुप बन्धन कार ॥ भ० १ ॥ एक तीन सत दश कहे काइ सतरा और बाईस । तेतीस सागर आयु क्रम काइ नरके विश्वावीस ॥ भ०२ ॥ हँस हँस होते पापसे काइ बंधते कर्म कठोर । रोते छुट-कारा नहीं काइ उदय समय दुख दौर ॥ भ० ३ ॥ दशविध होती वेदना काइ सुनते दु ख अपार । भोग समय हो क्या गति काइ जाने जगदाधार ॥भ०४॥ असुर निकायी देवता काइ पनरह परमाधाम । दुख देते जो भोगते काइ वचन अगोचर ठाम ॥ भ० ५ ॥ तिर्यंचायु को कहा काइ पुण्य रूप भगवान । पर बँधता है पाप से काइ होता दु ख की खान ॥ भ० ६ ॥ प्रथम भूमि नीगोद की काइ– जीव अनन्तानन्त । व्यवहाराव्यवहारसे काइ भाखें श्री भगवंत ॥ भ० ७ ॥ एक शरीरे एकटा काइ भोगे दु ख अनन्त । हरि कवीन्द्र ज्ञानी करें काइ उन दु खों का अन्त ॥ भ० ८ ॥ काव्यम् ॥ स्फुर्जत्सुगन्ध विधिनोर्ध्वगति प्रयाणे । मन्त्र० ॐ ह्रीं अर्ह परमात्मने आयु कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय धूप यजामहे स्वाहा ।

❀ पञ्चमी–दीपक–पूजा ❀

(दोहा)

प्रभु दीपक पूजा करो प्रकटे दीपक ज्ञान।
भाव अन्धेरा ना रहे– जानो सकल जहान ॥१॥
नरक निगोदी दु ख का ज्ञानी करते अंत ।
ज्ञानी की पूजा करो–हो सुख सिद्धि अनन्त ॥२॥

(तर्ज— करलो करलो र थ भविजन आयो शिवपुर वरलो र पजूमन करलो र)

पूजन करलो रे ओ भविजन भावे हित सुख वरलोरे ॥ पूजन० टेर ॥ पूजा पाप निवारे प्रभु की, पूजा हित सुखकारी रे। आगम दीपक देख अहिंसा पूजा प्यारी रे ॥ पू० १ ॥ प्रभु मुद्रा अप लाप करे और पूजा पाप बतावे रे। नरक निगोद भयंकर भव में बहु दुख पावे रे ॥ पूजा० २ ॥ एकेन्द्रिय बेइन्द्रिय जानो तेइन्द्रिय भी प्राणी रे। चौरेन्द्रिय पंचेन्द्रिय तिर्यंच हैं दुख खाणी रे ॥ पू० ३ ॥ प्राण और पर्याप्ति-शक्ति, अरे अविकसित होती रे। तिर्यंचों में आत्म चेतना, रहती सोती रे ॥ पू० ४ ॥ तिर्यंचायु वन्ध बिना गम-सास्वादन तक मानारे। उदय देशविरति सत्ता जय साने टाना रे ॥ पू० ५ ॥ स्वस्थ-पुरुष इक श्वासोच्छ्वासे साडी सतरा होते रे। क्षुल्लक भव यों भाव निगोदे दुख मय होते रे ॥ पू० ६ ॥ तीन पल्योपम उत्कृष्टी स्थिति, पञ्चेन्द्रिय की भारी रे प्रभु पूजा से पाप गति यह, दूर निवारी रे ॥ पू० ७ ॥ हरि कवीन्द्र प्रभु पद पूजन से नरक तिरि भव टालो रे। प्रभुपद दर्शन वन्दन पूजन, शुभगति पालो रे ॥ पू० ८ ॥ काव्यम्॥ सम्पूर्णसिद्धि शिवमार्ग सुदर्शनाय। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने आयुकर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वा०

षष्ठी–अक्षत–पूजा

(दोहा)

अक्षत गुण अक्षत करण– पूजो अक्षत धार।
अक्षत गुण होगे प्रकट– सक्षत हो संसार ॥१॥
भाव द्रव्य से होत है, बिना द्रव्य नो भाव।
होते हैं बाजार में– द्रव्य देखकर भाव ॥ २ ॥

(तर्ज— समुद्र के लाला हो गुण वाला, नेम नगीना तुम ही हो हो)

अक्षत द्रव्य धरो प्रभु पूजो– द्रव्य विना कोइ भाव नहीं है

श्रीजिन शासन वासित आगम द्रव्य भाव की जोड सही है ॥ टेर ॥ मूढ हृदय निर्दय जन कोई प्रभु पूजा विधि पाप कही है। शल्य सहित तिर्यंच का आयुष बन्ध गति सविशेष गही है ॥ अच०१ ॥ नारक तिरि आयु स्थिति बन्धक, आश्रव टालो जो पाना नहीं है। किरिया से कर्म औ कर्म से बन्धन– बन्धन से होता दुख ही है। अच०२ ॥ अल्प कषायी सदा सुखदायी पर उपकारी प्रवृत्ति रही है। गुण ग्राहक वरदान रूचि शुचि मानवता के हेतु यही है ॥ अच० ३ ॥ मानव में नव जीवन पावन प्रभु गुण समता सहज रही है। कर्मों स आवृत होने से, आज जगी दिव्य ज्योति नहीं है ॥ अचत० ४ ॥ चार गुणस्थानक नर आयुष, बन्ध स्थान की बात कही है। सत्ता उदये चौदह होते केवल ज्ञान की भूमी यही है ॥ अच० ५ ॥ प्रभु दर्शन से दर्शन पाकर, पूर्व जो आयुष बन्ध नहीं है। मोक्ष न हो तो वैमानिक की देवगति अति अदभुत ही है ॥ अच० ६ ॥ प्रतिभव में एकबार ही बँधता, ऐसा कर्म तो आयुष ही है। प्रति पल बँधते कर्म सभी इन, कर्मों को शम जरा भी नहीं है ॥ अच०७ ॥ आयुष कर्म की कैद कटे, अविनाशी शिवपुर राह यही है। हरि कवीन्द्र करो पुरुषारथ, प्रभु पूजा सुविचार कही है ॥ अच० ८ ॥ काव्यम् ॥ कृत्वान्तने सुपरिणाम गुणैं प्रशस्तैं। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने आयु कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा।

सप्तमी–नैवेद्य–पूजा

(दोहा)

जड कर्मा क जाग से, भारी लगती भूख ।
मिट मिट कर भी ना मिटी– यही यहा है दु ख ॥१॥
खड्डा पापी पेट का– भर जाये यह भाव ।
नैवद्य धर माधु मधुर– दो प्रभु यही स्वभाव ॥२॥

(तर्ज— हो उमराव थांरी बोली प्यारी लागे महाराज)

हो परमातमा की पूजा प्यारी लागे साधिकार। हो नैवेद पूजा करते जन हो जावें निर्विकार ॥ टेर ॥ संसारी सविकार हैं, चार गति विसतार। जनम मरण कर कर थकें, दीखे अंत न पार। हो परमातमा के पद कमलों में होगा बेडा पार ॥ हो पर० १ ॥

दुर्लभ नर भव पा लिया— चिन्तामणि अनमोल।
प्रभु सेवा परिणत करो, सद्गुरुओं का बोल।
हो आराधना में अपनी शक्ति लगाओ बार बार ॥ हो पर० २ ॥

साधन पूरे ना मिलें, ना शिव सिद्धि होय।
तोभी प्रभु पद पूजते, निश्चय सुरगति होय।
हो सुर लोक में भी शाश्वत श्री जिन पूजा अधिकार ॥ हो पर० ३ ॥

जिन कल्याण उत्सवे, विविध भक्ति चितधार।
मेरु नन्दीश्वर करें, सुर जिन—पूजा सार।
हो भव्यातमा सम्यग्दर्शन के पाते संसकार ॥ हो पर० ४ ॥

कचरा देव विमान का, हमें मिले जो आज।
तो दारिद्र्य रहे नहीं, सुर सम्पति अन्दाज।
हो देवता प्रभु पूजें पूजा हित-सुख-कार ॥ हो पर० ५ ॥

कम से कम देवायुका—वर्ष सहस दश मान।
जादा से जादा कहा— तेतीस सागर जान।
हो अन्त समये भोगी सुर सब भोगें दुःख— भार॥ हो पार० ६ ॥

अविरति मिट जाये मिले, हमें मोक्ष अधिकार।
नर भव हम पायें करें, निज आतम उद्धार।

हो देवता सम्यग्दृष्टि यों करते सद्‌विचार ॥ हो पर० ७ ॥

बन्ध सुरायु सात तक, उदय चार तक योग।

ग्यारह गुनठाने रहा, सत्ता का संयोग।

हो हरि कवीन्दर प्रभु भक्तों की बोलें जयकार हो पर० ८ ॥

॥ काव्यम ॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधा मधुर प्रचारे० ॥ मन्त्र– ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने आयुष्य कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

अष्टमी–फल–पूजा

(दोहा)

प्रभु पूजा का पुण्य फल–हित सुख क्षेम विशेष।

फल पूजा प्रभु की करो, हित सुख मिले हमेश ॥१॥

साथ रहे इस लोक में, चले साथ परलोक।

प्रभु पूजा का पुण्य–फल, भरदे भाव अशोक ॥२॥

(तर्ज— कहा हँसना कहा रोना इसी का नाम दुनिया है— गभन्न)

चतुर्गति दुःख फल हरणी–करो फल पूज जिनवर की। मिटे भव कैद शिव करणी करो फल पूज जिनवर की ॥ टेर ॥ नरक में दुःख था भारी–न पाया नाथ का दर्शन। सुदर्शन प्राप्त करने को करो फल पूज जिनवर की ॥ च० १ ॥ गति तिर्यंच में केवल– भरा अविवेक था भारी। हिताहित ज्ञान पाने को– करो फल पूज जिनवर की ॥ च० २ ॥ पड़ी पग पुण्य की बेड़ी–फँसे सुर भोग में हरदम। अगर स्वाधीनता चाहो करो फल पूज जिनवर की ॥ च० ३ ॥ मिला है देव दुर्लभ तन यहा नर जन्म जीवन में। रतन चिन्ता मणि जैसा– करो फल पूज जिनवर की ॥ च० ४ ॥ उड़ाने काग को जैसे–न भोगों में खतम करना। सफलता प्राप्त करने को, करो फल पूज जिनवर की

॥ च० ५ ॥ प्रभु खुद वीतरागी हैं, न पूजा को कभी चाहें । अगर चे पूज्य होना हो, करो फल पूज जिनवर की ॥ च० ६ ॥ सुखों के दिव्य सागर हैं, प्रभु भगवान उपकारी । दुखों को दूर करने को, करो फल पूज जिनवर की ॥ च० ७ अमर गणनाथ हरि पूजें- कवीन्द्र कीर्तियाँ गावें । सफल यश कीर्ति पाने को, करो फल पूज जिनवर की ॥ च०८ ॥ काव्यम् ॥ पीयूष पेशल रसोत्तम भाव पूर्णैः । मन्त्र — ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने आयुष्य कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।



* छट्ठे दिन नाम कर्म निवारण पूजा पढावें *
प्रारम्भ में मङ्गल पीठिका के दोहे और अन्त मे कलश पहेले दिन की पूजा से देख कर बोलें । प्रति पूजा मे काव्य भी पहिली पूजा के समान ही बोलने होंगे । मन्त्रों में कर्म नाम बदलना होगा ।

❁❁ नाम कर्म-निवारण-पूजा ❁❁

मंगल पीठिका के दोहे
पूर्ववत्
बोलो

प्रथमा-जल-पूजा

(दोहा)

तीरथ जल से जो करे, तीर्थंकर अभिषेक ।
करम मैल कट जाय हो- आतम गुण अतिरेक ॥१॥
जल पूजा मन मल हरे, होवे लोक ललाम ।
नाम काम अभिराम हो- परमातम परिणाम ॥२॥

(तर्ज—तन मन से फेरो माला, काटे रे नाला जीवका)

कर्मों के मल को हरती जल पूजा प्रभु की कीजियें। नाम करम नित रूप बनाता, यहां चितेरे जैसा। आतम आप अरूपी देखो, हो गया कैसा कैसा रे ॥ क० १ ॥ नरक तिरि नर सुर गति चारों, भटक भटक भरमाया। इक दो तीन चार पंचेन्द्रिय जाती जोर जमाया रे ॥ क० २ ॥ औदारिक वैक्रिय आहारक तेजस कार्मण जानो। आदि तीन के अंग उपांगा अंगोपाग पिछा नोरे ॥ क० ३ ॥ बन्धन सघातन शरीर के पाच पाच परकारा। लाख और दंताली जैसे- बध ग्रहण करतारा रे ॥ क० ४ ॥ वज्र ऋषभ नाराच ऋषभ-नाराच अध नाराचा। किली छेवठा छह संघयणे, मारो मोह तमाचारे ॥क०५॥ समचउरंस निगोह सादि और- कुब्ज वावना हुंडा। आतम योगी पुण्य उपावे और पाप का कुण्डा रे ॥ क० ६ ॥ वर्णगन्ध रस फरस बीस शुभ अशुभ सभी कहलाये। आनुपूर्वी हय लगाम ज्यों चार गति ले जाये रे ॥ क० ७ ॥ चाल शुभा शुभ गति विहायस् जीव सभी की होती। हरि करीन्द्र धन भाग गति मति आतम अभिमुख होती रे ॥ क० ८ ॥ काव्यम् ॥ लोकेषणाति तृष्णोदय वारणाय०। मन्त्र—ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नाम कर्म समूलाच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय जल यजामहे स्वाहा।

❀ द्वितीया-चन्दन-पूजा ❀

(दोहा)

मलयाचल चन्दन सरस- क्षेत्र विशेषिन भाव।
प्रभु पद पावन क्षेत्र में- प्रकटे पुण्य प्रभाव ॥१॥
चन्दन गुण सन्ताप हर- हैं प्रभु आप विशेष।
चन्दन से पूजा करो- मिटें करम के क्लेश ॥२॥

(तर्जः— अवधू सो योगी गुरु मेरा— आशावरी)

चन्दन पूजा करियें प्रभु की चन्दन पूजा करियें। पाप ताप परिहरियें प्रभु की चन्दन पूजा करियें ॥ टेर ॥ नाम करम की पिण्ड प्रकृतियाँ-- चौदह उत्तर जानो। पैंसठ होती आतम अभिमुख-- कर आतम पहिचानो ॥ प्र० १ ॥ बन्धन पांच कहे पनरा भी-- संघातन सहयोगी। वीस प्रकृतियाँ तन अन्तर्गत समझें आतम योगी ॥ प्र० २ ॥ वर्णादिक भी मूल चार हैं— उत्तर वीस बताई। कर्म विचार समास किया यों— सोला वीस घटाई प्र० ३ ॥ हैं प्रत्येक प्रकृतियाँ अट्ठा— वीस विशेष प्रकारा। सडसठ होती नाम करम की— प्रकृति समास विचारा ॥ प्र० ४ ॥ विस्तारे छत्तीस मिलाते-- होती एक सो तीन। आसक्ति तज नाम करम पर— विजयी होते प्रवीन ॥ प्र० ५ ॥ जीव विपाकी त्रस थावर त्रिक'- सुभग दुभग चउ जानो। श्वास जाति गति तीर्थ विहायो— गति अन्तर्गति ठानो ॥ प्र० ६ ॥ नाम ध्रुवोदयी प्रकृति बारह— तनु चउ अरु उपघाता। साधारण प्रत्येक उद्योत— आतप युत परघाता ॥ प्र०७ ॥ नाम कर्म की ये छत्तीसों, प्रकृति पुद्गल पाका। हरि कवीन्द्र समझ समझ कर, ले लो शिवपुर नाका ॥ प्र०८ ॥ काव्यम् ॥ पापोपताप शमनाय महद्गुणाय० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नाम कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

❀ तृतीया—पुष्प—पूजा ❀

(दोहा)

कुसुम कली खिलती रहे, प्रभु चरणों को पाय।
त्यों पूजन जन आतमा— अन्तर्गत खिल जाय ॥१॥
कुसुम कली सुविकासमें-- सौरभ सुगुण विलास।
परमातम परसंग में— अध्यातम गुण खास ॥२॥

(तर्ज— मीनामर स्वामी अन्तर्यामी तारो पारसनाथ— मा०)

पूजो फल विकासी कर्मों की, फासी काटें श्री भगवान। मिले पद अवि नाशी सहज विलासा पूजक हो भगवान ॥ टेर ॥ प्रभु पूजा से पुण्योदय हो, होता है सुख सात। अन्य सबल को जो आघाते, प्रकृति हो पराघात रे ॥ पू० १ ॥ श्वासोच्छ्वास हो जीवन हेतु, आतप ताप प्रधान। सूर्य विमाने सूरज पूजे— शाश्वत श्री भगवान रे ॥ पू० २ ॥ उत्तर वैक्रिय तारा मण्डल में होता है उद्योत। न लघु न गुरु अगुरु लघु— शरीर हो सुख श्रोत रे ॥ पू० ३ ॥ जो तीर्थंकर नाम कमावें, त्रिभुवन जन सुख खाण। अंगोपाग व्यवस्था करता, नाम करम निर्माण रे ॥ पू० ४ ॥ अपने ही अंगों से पीडित होना है उपघात। आठों ये प्रत्येक बताये नाम करम विख्यात रे ॥ पू० ५ ॥ त्रस बादर पर्याप्त प्रत्येक स्थिर शुभ सुभग सुनाम। सुस्वर आदेय यश कीरति ये— त्रस दशका अभिराम रे ॥ पू० ६ ॥ त्रस दशके स उल्टा होता— स्थावर दशक प्रमाण। नाम करम क्षय होता आखिर— चौदशमें गुणठाण रे ॥ पू० ७ ॥ हरि कवीन्द्र प्रभु परमातम आप अकाम अनाम। अध्यातम भावे **अराधो** सकुसुम पूज प्रमाण रे ॥ पू० ८ ॥ काव्यम् ॥ वचःसुपच्चवर वण विराजिभिर्व० । मन्त्र—ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नामकर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

❀ चतुर्थ–धूप–पूजा ❀

(दोहा)

अगर तगर चन्दन सरस— कस्तूरी घनसार।
सेल्हारस वर केन्दरू— करो धूप विस्तार ॥ १ ॥
धूप धूम ऊँचा चढे— बढे सुयश वर भाव।
प्रभु पद पूजा धूपकी— ऊरध गति स्वभाव ॥ २ ॥

(तर्ज– तुम्हें नाथ नैया तिरानी पडेगी)

धूप से पूजा जो कर पावे, उर्ध्व गति वह सहज उपावे ॥ टेर ॥ काल अनादि कारण योगे-- श्री प्रभु दर्शन भाव वियोगे। थावर दशक पद जीव कमावे ॥ धूप० १ ॥ पृथिवी पानी आग पवन में– और वनस्पती के जीवन में थावर पद सद्गुरु समझावें ॥ धूप०२ ॥ सूक्ष्म नाम कर्मोदय हेतु, लोक भरा बहु दुःख निकेतु। ज्ञानी जन उपदेश सुनावे ॥ धूप० ३ ॥ निज पर्याप्ति पूरी न करते और बीच में जीव जो मरते। अपर्याप्त विशेष कहा वे ॥ धूप० ४ ॥ जीव अनन्ते एक शरीरे, साधारण तरू जाति कही रे। नाम करम नवरूप दिखावे ॥धूप०५॥ स्थिर नहीं होते अंग उपांगा, अथिर नाम का यही अडंगा। पुण्य योग थिर रूप उपावे ॥ धूप० ६ ॥ पाप रूप जो होता अशुभ है, ठीक लगे ना वह दुर्भग है। दुःस्वर स्वर जिसका न सुहावे ॥ धूप० ७ ॥ वचन अमान्य अनादेय नामा, अपजश कारण हो दुख धामा। हरि कवीन्द्र न जो प्रभु ध्यावे ॥ धूप० ८ ॥ काव्यम् ॥ स्फूर्जत्सुगन्ध विधिनोर्ध्वगति प्रयाणे० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नाम कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

॥ पञ्चमी–दीपक–पूजा ॥

(दोहा)

दीपक से प्रभु पूजते– दीपक गुण अभिराम ।
आतम हो परमातमा– दूजो करो प्रणाम ॥ १ ॥
जहां पात्र तपता नहीं– स्नेह न होता नाश ।
वृत्ति जहां जलती नहीं– आतम दीप उजास ॥ २ ॥

(तर्ज — उठो नी मोरे आतमरामा, जिनमुख जोवा जइयें रे)

दीपक पूजा करियें भविजन–भव वन में न भटकियें रे। मोह तिमिर मिट जाये रे भविजन दुर्गति में न लटकियें रे॥ टेर॥ त्रास पडे तब गति कर सकना–यह त्रस नाम कहावे रे। विकलेंद्रिय पंचेन्द्रिय त्रस हैं–धन जो प्रभु मुख पावे रे॥दी०१॥ स्थूल रूप जीवन में पाता बादर नाम सुयोगे रे। जीव विपाकी होकर भी जो– पुद्गल में अभियोगे रे॥ दी० २॥ पर्याप्ति शक्ति छह होती आहारादि प्रकारा रे। लब्धि-करण पर्याप्ता भावे प्रभु पूजक जय कारा रे॥ दी० ३॥ पृथक शरीरे पृथक जीव हो वह प्रत्येक सुनामा रे। जिन दर्शन निज दर्शन करता, वह जीवन अभिरामा रे॥ दी० ४॥ अंग उपांगे दृढता होती, जो थिर नाम उपावे रे। नाभि से सिर तक सुन्दर शुभ धन प्रभु दर्शन पावे रे॥दी०५॥ औरों को प्यारा होता है सुभग महा बड़ भागी रे। जो रहता वेराग जगत में– वीतराग पद रागी रे॥ दी० ६॥ सुस्वर स्वर जब सुनना चाहें– वचन न जास उथापे रे। वह आदेय वचन प्रभु प्रवचन– धन जीवन में थापे रे॥ दी० ७॥ हरि कवीन्द्र जश कीरति गावें प्रभु चरणे लय लावें रे। त्रस दशके परमातम-दीपक– दिव्य ज्योति प्रकटावे रे॥दी०८॥ काव्यम्॥ सम्पूर्ण सिद्धि शिव मार्ग सुदर्शना०। मन्त्र– ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नाम कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय दीपकं यजामहे स्वाहा।

षष्ठी–अक्षत–पूजा

(दोहा)

आप अरूपी आतमा– अक्षय गुण भण्डार।
नाम करम रूपी हुआ– सक्षतपद आधार॥ १॥
सक्षत पद दूरी करण– अक्षत पूज विचार।
प्रभु अक्षत पद योगसें– अक्षत पद अधिकार॥२॥

(तर्ज— तीरथनी आसातना नवि करिये०)

वीतराग जिननाथजी जयकारी। हारे जयकारी जी उपकारी। हारे शिवपुर वर पन्थ विहारी– हारे कर दो भव पार ॥ वी० टेर ॥ महर नजर करो नाथ जी हम आये, हारे पूरव कृत कर्म सताये। हारे अब चरण शरण लय लाये, हारे नहीं आर आधार ॥ वी० १ ॥ नैवेद्य चरणों में धरें प्रभु तेरे, हारे रहे भूख हमें नित घेरे। हारे देती लाख चोरासी फेरे, हारे पद दो अनाहार ॥ वी० २ ॥ वीस कोडा कोडि सागर स्थिति बोली, हारे उत्कृष्टे भावे बोली। हारे लघु अन्तर मुहूरत खोली, हारे नाम कर्म विचार ॥ वी० ३ ॥ मनमें कुटिलता धारते जो प्राणी, हारे बोल कपट भरी जो वाणी। हारे काय चेष्टा शठता निशानी, हारे आस्रव संसार ॥ वी० ४ ॥ अशुभ नाम आना सही दुखकारी हारे विपरीत है शुभ सुखकारी। हारे हेय अशुभ विशेष प्रकारी, हारे ससार असार ॥ वी० ५ अशुभ नाम करमोदये नहीं पाया, हारे वीतराग प्रभु जिन राया। हारे नहीं पाया मोक्ष उपाया, हारे पाया दुख भार ॥ वी० ६ ॥ आज शुभोदय होगया प्रभु भारी, हारे पाया दर्शन जय जयकारी। हारे भव माया दूर निवारी, हारे निश्चय निसतार ॥ वी०७॥ हरि कवीन्द्रनि सदा गुण गाया, हारे जिन शासन सुखद सवाया। हारे योगावंचक विधि पाया, हारे दूर कर्म विकार ॥ वी० ८ ॥ काव्यम् ॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधा मधुर प्रचारै०। मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रह परमात्मन नाम कर्मान्य समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिने द्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा।

○ अष्टमी-फल-पूजा ○

(दोहा)

भव फल शिव फल जानकर– विशद विवेक विचार।
प्रभु की फल पूजा करो– पाओ शिव फल सार ॥१॥

कर्म योग संसार फल– शिवफल धर्म-विधान ।
धर्म-मुख्य पद जगत में– भेटो श्री भगवान ॥२॥

(तर्ज— पास जिनेसर पूजियें रे तीन भुवन सिरताज सलूणा)

सुख दुख फल संसार में रे, कर्म उदय अनुसार ॥ सलोना ॥ पुण्ये सुख दुख पाप से रे, पुण्य करो परचार ॥ सलोना ॥ टेर ॥ पुण्य प्रथम-विधि पूज्य की रे, पूजा विविध प्रकार ॥ स० ॥ करना सुख भरना सदा रे, निज आतम भण्डार ॥ स० सु० १ ॥ नाम करम ध्रुव बन्ध में रे, वर्ण गन्ध रस स्पर्श ॥ स० ॥ तैजस कार्मण जानियें रे, प्रभु पूजा उत्कर्ष ॥ स० सु० २ ॥ अगुरु लघु निर्माण के रे, साथ रहे उपघात ॥ स० ॥ सावधान साधें सदा रे, साधक पुण्य-प्रभात ॥ स० सु०३ ॥ अध्रुव बन्धी नाम में रे, औदारिक वैक्रिय ॥स० आहारक उपांग भी रे, वे तीनों सक्रिय ॥ स०सु० ४ ॥ संस्थान संघयणे कही रे, छह छह भेद विचार ॥ स० ॥ पांच जाती गति चार ये रे, दोय विहाय प्रकार ॥ स० ५ ॥ चार आनुपूर्वी तथा रे, श्री तीर्थंकर नाम ॥ स० ॥ सांसो स्वासे कीजियें रे, परमातम गुण ग्राम ॥ स०सु० ॥ ध्रुव उदयी अध्रुवोदयी रे, गुरु गम बोध विशेष ॥ स० ॥ प्रकृति स्थिति रसघात से रे, मेटो करम कलेश ॥ स० सु० ७ ॥ सुख सागर भगवान को रे पूजो सफल विधान ॥ स० ॥ हरि कवीन्द्र सदा बनो रे, त्रिभुवनतिलक समान ॥ स० सु०८ ॥ काव्यम् ॥ पीयूष पेशल रसोत्तम भाव पूर्णैः० । ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नामकर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।



❀ सातवें दिन गोत्र कर्म-निवारण पूजा पढावें ❀
आरम्भ म मगल पाठिका क दोह और अन्त में कलश पहले दिन की पूजा से देख कर बोलें। प्रति पूजा में काव्य भी पहेली पूजा के समान ही बोलने होंगे। मन्त्रों में कर्म-नाम बदलना होगा।

❀ गोत्र-कर्म-निवारण--पूजा ❀

मगल पीठिका के दोहे

पूर्ववत्

❀ प्रथमा-जल-पूजा ❀

(दोहा)

रस जीवन अमृत कहे- जल को पण्डित लोक।
जल पूजा प्रभु की करो- करम कीच दे रोक ॥१॥
नीच भाव कटते रहें- जल धारा के योग।
जल पूजा जिनराज की- पावन भाव प्रयोग ॥ २ ॥

(तर्ज— सुन सुन भावत मोहे हामी र, पनी म मान पियासी)

द्रव्य भाव अधि धारी रे, करो जल पूजा मल हारी॥टेर॥ नीच भाव काटे जल धारा, कीच कलक दे टारी रे ॥ क०१ ॥ प्यास बुझाती ताप बुझाती, करे तपनि सुखकारी रे ॥ क०२॥ रस जीवन अमृत पद देती, प्रभु गुण सम ताकारी रे ॥ क० ३ ॥ नीच गोत्र कर्मोदय कटता, प्रभु पद की बलिहारी रे ॥ क० ४ ॥ ऊँच गोत्र गंगाजल घट ज्यों, पूज्य रूप अवतारी रे ॥ क० ५ ॥ मदिरालय मदिरा घट जैसे, नीच भाव निशारी रे ॥ क० ६ ॥ कुंभकार सम गोत्र करम है, उँच नीच घट कारी रे ॥ क० ७ ॥ उन्नता धारो नीचता टारो,

हरि कवीन्द्र जयकारी रे ॥क०८॥ काव्यम् ॥ लोकैषणाति तृष्णोदय वारणाय० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीया–चन्दन–पूजा

(दोहा)

भले भुजंग लगे रहें– विष नहीं व्यापत अंग ।
यह गुण चन्दन को मिला–कर प्रभु पूजा संग ॥१॥
काटो या वालो भले– चन्दन भरे सुगंध ।
चन्दन गुण अद्भुत वरो– प्रभु पूजा सम्बन्ध ॥२॥

(तर्ज – दया निध दीजें यह वरदान–धनासिरि)

चन्दन पूज विचार करियें चन्दन सम आचार ॥ टेर ॥ जीते मरते उभय समय में, सदा सुगन्ध प्रचार ॥ क० १ ॥ संग कुसंगी आन मिलो पर, विष का हो न विकार ॥ क० २ ॥ धर्म-सुगन्धी जीवन पावन, ऊँच गोत्र अवतार ॥ क० ३ ॥ पत्थर संग रगड पाकर भी-- चन्दन शीतल सार ॥ क० ४ ॥ पीसो घीसो चन्दन को पर-- होगा रस विस्तार ॥ क० ५ ॥ गुण धारी चन्दन पाता है-- प्रभुपद का अधिकार ॥ क० ६ ॥ सुख में दुख में समरस अपना, नित जीवन निर्धार ॥क०७॥ हरि कवीन्द्र सुचन्दन पूजा-भाव धरम दातार ॥क०८॥ ॥काव्यम् ॥ पापोत्ताप शमनाय महद्गुणाय० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीया–पुष्प–पूजा

(दोहा)

कांटों में जीवन पला-- पाया पूर्ण विकास ।

इन फूलों का देखलो, सौरभ सुन्दर हास ॥ १ ॥
गुण में बँध कर फूल सब हो जाते हैं हार।
प्रभु पूजा से आप भी, पाओ यह अधिकार॰ ॥२॥
(तर्ज — जमुनाजी में मेलें हरि राम लला॰)

फूलों से पूजो भाव भरो, जीवन में पूर्ण विकास करो ॥ फू० टेर ॥ काटों में जीवन पलता है, काटों का दुख मनमें न धरो ॥ फू० १ ॥ कलियाँ खिल करके फूल बनें, खिलना सीखो मन मोद भरो ॥ फू० २ ॥ रेशे रेशेमें सौरभ है, गुण सौरभ का विसतार करो ॥ फू०३ ॥ गुण में बँध फूल ये हार बनें जन हार मनोहर विजय वरो ॥ फू० ४ ॥ भौंरों को ये रस देते हैं, जीवन रस दान ० ॥ सब ठौर फूल शोभा पाते, पाओ शोभा यह काम करो ॥ फू० ६ ॥ उत्तम कुल फूल को जग चाहे, उत्तम कुल सीमा में विचरो ॥फू० ७ ॥ हरि कवीन्द्र जीवन कुसुम कली, आतम अर्पण करते न डरो ॥ फू०८ ॥ ॥ काव्यम् ॥ चक्षुरसुपश्चवर वर्ण विराजिभिर्नै॰ । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

❀ चतुर्थी-धूप-पूजा ❀

(दोहा)

पड़ कर भी जो आग में– जग का देत सुगन्ध।
धूप धन्य जीवन करो ऊरध गति प्रबन्ध ॥१॥
धूप धूम रंगी बनो– साधक साधु महान।
प्रभु पूजा कर पूज्य पद– पाओ पुण्य प्रधान ॥२॥
(तर्ज— अवधू मो योगी गुरु मरा॰ मायारी।)

धूप पूज यह भागी करले धूप पून धन भागी ॥ टेर ॥ धूप धूम रंगी

जीवन जन-- भाव सुपावन भरते। प्रभु पद संमी होकर के जो--लोकोत्तम-पद वरते ॥ क० १ ॥ धूप दशांगी धर्म दशांगी-- जो जीवन आचरते। धूप धूम गति ऊर्ध्वदिशा में– गुण-ठाणा अनुसरते ॥ क० २ ॥ धूपा लम्बी ध्यान दशामें कर्म कीटाणु मरते। स्वस्थ भाव अजरामर पदवी--सहजानन्दी धरते ॥क०३॥ धूप धूम सौरभ गुण धारी--प्रभु पद पूजा करते। दुर्गति दूर निवार समुन्नत, उत्तम कुल प्रति चरते ॥ क० ४ ॥ जीव विपाकी गोत्र करम वश- नीच कुले ऊवतरते। पर ऊंचे कर काम हमेशा-- ऊंच गोत्र अधिकरते ॥ क० ५ ॥ हरिकेशी और चित्त संभूति- धन साधु पद वरते। छट्ठे गुणठाणे अनुदय से- ऊंच गोत्र संस्करते ॥ क० ६ ॥ वीस कोडाकोडी सागर की-- उत्कृष्टी स्थिति बन्धे। लघु अन्तरमुहूरत की जानो--लागो धरम के धंधे ॥ क० ७ ॥ गोत्र करम सत्ता क्षय होती– चौदशमें गुण ठाने। हरि कवीन्द्र आतम परमातम– होता तन्मय ताने ॥ क० ८ ॥ काव्यम् ॥ स्फूर्जत्सुगन्धविधिनोर्ध्वगति प्रयाण०। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

❀ पञ्चमी–दीपक–पूजा ❀

(दोहा)

जीवन भर जलता रहे, सींच सींच कर स्नेह।
पर प्रकाश करता रहे, देखो दीपक एह ॥ १ ॥
दीपक पूजा में सभी, लाओ ऐसे भाव।
स्वपर प्रकाशक आप भी, होंगे पुण्य प्रभाव ॥ २ ॥

(तर्ज— मन मोहनजी जगतात, वात सुणो जिनराजजी रे)

प्रभु पूजा में भर भाव, दीप जगाओ रे। प्रभु ज्योति से आतम ज्योत,

सहज उपाओ रे ॥ प्र० टेर ॥ सदगुणियों से गुणराग मन में धरना रे । निज गुण का भी अभिमान, आप न करना रे ॥ प्र०१ ॥ गुण द्वेष का लेश विशेष-क्लेश बढावे रे । गुणद्वेष तजो गुणठाण ऊंचे चढावे रे ॥ प्र० २ ॥ नित ज्ञानी के सत संग रंग जगाओ रे । तत्व ज्ञान की बान उदात्त अंग लगाओ रे ॥ प्र०३ ॥ श्रुत धारी अनुभव योग मार्ग बतावें रे । छून कर्म महा भव रोग, दूर गमावें रे ॥ प्र० ४ ॥ बहु श्रुत हैं दीन दयाल टाल आसातन रे । ऊंच गोत्र करम संबन्ध, होता धन धन रे ॥ प्र० ५ ॥ न्याय धर्म करम अधिकार, हो सदाचारी रे । ऊच गोत्र आचार विचार, हो सागारी रे ॥ प्र० ६ ॥ निच गोत्र के आश्रव दूर दूर निवारो रे । प्रभु पुजा में विधियोग भाव विचारो ॥ प्र० ७ ॥ हरि कवीन्द्र दीपक पूज, हो उपयोगी रे । ऊंच गोत्र उदय विस्तार - हों सुख भोगी रे ॥ प्र०८ ॥ काव्यम् ॥ सम्पूर्ण सिद्धि शिव मार्ग सुदर्शनाय० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय दीपकं यजामहे स्वाहा ।

❀ षष्ठी–अक्षत–पूजा ❀

(दोहा)

भारी मूसल मार से— छिल जावे सब अंग ।
तब अक्षत संसार में— पाता है प्रभु संग ॥१॥
प्रभु संगी अक्षत बनें— अक्षय सुख भण्डार ।
अक्षत पूजा में भरो— यही भाव सुविचार ॥२॥

(तर्ज– तरा सुमतिनाथ नय हो)

अक्षत पूजा प्रभु की करते अक्षय-सुख भण्डार होता । पूजा परमाधार प्रभु की-- कर्तीजन भव पार होता ॥ अक्षय० टेर ॥ अक्षत गुण अधिकारी जन

का, जीवन जय जयकार होता ॥ अक्षय० १ ॥ पढ़े पढ़ावे जिन आगम को, निज आतम स्वीकार होता ॥ अक्षय० २ ॥ निज पर आतम को स्वीकारा, तो हिंसा प्रतिकार होता ॥ अक्षय०३ ॥ आतम पदके अनुशासन में-- गुण थानक विस्तार होता ॥ अक्षय०४ ॥ षड दर्शन खण्डन मण्डन से, अक्षत गुण अविकार होता ॥ अक्षय० ५ ॥ जिन दर्शन विरहित हो उसका, जीना मरना भार होता ॥ अक्षय० ६ ॥ नीच गोत्र के संस्कारों से, दुख मय यह ससार होता अक्षय० ७ ॥ हरि कवीन्द्र तिरना हो उन को-- जिन दर्शन आधार होता ॥ अक्षय० ८ ॥ काव्यम् ॥ कृत्वाक्षतैः सुपरिणाम गुणैः प्रशस्तै० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

सप्तमी–नैवेद्य–पूजा

(दोहा)

आहारक तेरह कहे- गुणठाणे भगवान ।
औदारिक पुद्गल ग्रहण है आहार विधान ॥१॥
नैवेद पुद्गल रूप है, प्रभु चरणे दो चाढ ।
त्याग भाव परिणाम गुण— अनाहार हो गाढ ॥२॥

(राग भैरवी— (तर्ज– अब तो प्रभु जी का लेलो मरन)

नैवेद पूजा अति आनन्द ॥ नै०टेर ॥ आतम अर्पण प्रभु चरणो मे, पूजा काटे करमो का फंद ॥ नै० १ ॥ पुद्गल ग्रहणे नीच गोत्र का, दो गुणठाणे तक हो वंध ॥ नै०२ ॥ उदय पांच तक ही होता है, होता है भारी दुख द्वन्द ॥ नै० ३ ॥ प्रभु पद संगति होते होता, ऊँच गोत्र का सुखद सम्बन्ध । नै० ४ । चौदहवे गुणठाणे तक ही, ऊँच गोत्र का उदय प्रबन्ध ॥ नै०॥५ ॥

सत्ता भी क्षय होती है वह, अगुरुलघु आतम निर्द्वन्द ॥ नै०६ ॥ पुद्गल भाव वियोग प्रकटते, अनाहार पद परम आनन्द ॥ नै० ७ ॥ नैवेद पूजा कर नित मागें, अनाहार पद हरि कवीन्द्र ॥ नै०८ ॥ काव्यम् ॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधा मधुर प्रचारैं। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा।

❀ अष्टमी-फल-पूजा ❀

(दोहा)

ऊंच गोत्र फल पुण्य का, ऊचे हों आचार ।
नीच गोत्र फल पाप का, नीचे हो व्यवहार ॥१॥
ऊंच गोत्र फल याग स- फल पूजा विस्तार ।
लोक शिखर ऊंचे वसो- जहँ सुख अपरपार ॥२॥

(तर्ज— तुम तो भल विराजो जी सांवरिया०)

पुण्य फल ऊंचा होना जी प्रभु पूजा परभाव ॥ पुण्य० टेर ॥ अध्रुव बन्धी गोत्र करम फल सादि सान्त कहावे। बीज फलूके मोती पोना जाने सो फल पावे ॥ पुण्य० १ ॥ जीव विपाकी गोत्र करम यह परावर्त मानी। नीच गोत्र को ऊंच करे धन उसकी जीन्दगानी ॥ पुण्य०२ ॥ ऊच गोत्र में जनम लिया अब, करना ऊंचे कामा। दर्शन ज्ञान चरण अधिकारी वरणो शिवरामा ॥ पुण्य० ३ ॥ होवे गर गुण हीन छोटे जन, करो न अपमाना। निज गुण का अभिमान करो मन, यह भी दुखदाना ॥ पुण्य० ४ ॥ कोई भी हों तीर्थंकर या, चक्रवर्ती राना। कर्म अबाधा उदय मान फल पायेंगे नाना ॥ पुण्य० ५ ॥ नीच कहो मत कभी किसी को, खींच नीच रेखा। सत्य सदाचारों का निज में, कर लना लेखा ॥ पुण्य० ६ ॥ सुख सागर भगवान महोदय- जिन हरि पूज्य प्रधाना।

निर्भय भाव जिनागम बोलें, निजका करो निदाना ॥ पु० ७ ॥ निजमें ऊँच बनो साथी को, ऊंच बना देना। दिव्य कवीन्द्र विजय फल पाओ, कटे करम सेना ॥ पुण्य० ८ ॥ काव्यम् ॥ पीयूष पेशल रसोत्तम भाव पूर्णैः ०। ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने गोत्र कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा।



आठवें दिन अन्तराय कर्म निवारण पूजा पढावें

प्रारम्भ में मङ्गल पीठिका के दोहे और अन्त मे कलश पहेले दिन की पूजा से देख कर बोलें। प्रति पूजा में काव्य भी पहिली पूजा के समान ही बोलने होंगे। मन्त्रो में कर्म नाम बदलना होगा।

अन्तराय-कर्म-निवारण-पूजा

मंगल पीठिका

दोहेपूर्ववत्

प्रथमा-जल-पूजा

(दोहा)

भव जल तिरना हो यदि, जल पूजा लो धार।
जल तीरथ जनता तिरे, तीरथ तारणहार ॥ १ ॥
द्रव्य भाव दो तीर्थ हैं, द्रव्यालम्बी भाव।
तीरथ भेटो भाव से, परमातम पद दाव ॥ २ ॥

(तर्ज— तावड़ा धीमो पडजा रे)

तीरथ जल पूजा नित करियें, तिरना हो संसार सार-- जिन पूजा चित

धरियें ॥ तीरथ०टेर ॥ विघन घना घन करम घना है, आश्रव अभियोगे, इसी लिये जड़ रूप जीव-दुर्गति में दुख भोगे ॥ तीरथ० १ ॥ आपा भूल फँसा जड़ पुद्गल परिणामे चेतन। अनजाने मिथ्यात्व भाव मय होता हत जीवन ॥तीरथ० २ ॥ जान भजो जिन देव तीर्थ में ज्ञान विशद होता जगजाता यह आतम हरदम विषयों में सोता ॥ तीरथ० ३ ॥ परमारथ क्यों डरो डरो हिंसा को आचरते। खाने पीते भोग करमनें महारंभ करते ॥ तीरथ० ४ ॥ परमारथ का मूल कहा सम्यक्त्व इसे धारो। परमातम पद पूज आतमा अपना निर्द्धारो ॥ तीरथ०५ ॥ आतम ध्यान पवन हटते हैं, विघन घनाघन ये। बढ जावें अभिराम आतम गुण ठाने नये नये ॥ तीरथ० ६ ॥ मारे मारे फिरो अरे ! सोचो हे भवि प्रानी ? । दुलभ नरभव मिला, सुगुरुगम, सुन लो जिनवानी ॥ तीरथ०७ अन्तराय हो दूर आय हो, निज आतम धन का। हरि कवीन्द्र जय वरो भरो ज्योति नव जीवन की ॥ तीरथ० ८ ॥ काव्यम् ॥ लोकेषणाति तृष्णोदय वारणाय० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अन्तराय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय जल यजामहे स्वाहा ।

द्वितीया-चन्दन-पूजा

(दोहा)

जीवन चन्दन रूप हो, गुण सुगन्ध भर पूर ।
अपकारी उपकार कर, प्रभु पद पूज सनूर ॥ १ ॥
चन्दन पूजा भावना- हरदम गावो आप ।
प्रभु पद तिलक विधानतें-मिटे मोहपद छाप ॥२॥

(तर्ज— रंग मच रह्यो जिन द्वार म गुरु राजा लाग हमारा)

चन्दन पूजा करियें प्रभुकी चन्दन पूजा करियें र ॥टेर॥ जग वन्दन जिन

चन्द चरण में– चन्दन पूजा करियें रे। कर्म निकन्दन द्वंद न रहते– आनन्द कन्द आदरियें रे चन्दन० १ ॥ कर्म आठवां अन्तराय वह– होता पंच प्रकारा रे। निज में परसें और उभय में– होता है दुख भारा रे ॥ चन्दन०२ ॥ अन्तराय देने पर पर को–उस के फल में भजना रे। अन्तराय फल निज को निश्चय-होता यातें तजना रे ॥ चन्दन० ३ ॥ दान अगर देता हो कोई, उसमें रोक लगावे रे। तन से मन से और वचन से, अन्तराय वह पावे रे ॥ चन्दन०४॥ कृपण कपीला दासी प्रातः– मुखदर्शन दुखदायी रे। नाम लियाँ रोटी रोजी में हो जाता अन्तरायी रे ॥ चन्दन० ५ ॥ अक्षय आतम गुण नहीं पावे– दान विघन करतारा रे। घाती करम अन्तराय निवारो–हो सुख अपरंपारा रें ॥चन्द० ६॥ प्रभुपद पूजा दान प्रसंगे, अन्तराय कट जाता रे। सोभागी शुभनामी दानी-जग जिसका जस गाता रे ॥ चन्द० ७ ॥ आधि व्याधि उपाधि त्रिविध भव-पाप ताप नहीं होता रे। हरि कवीन्द्र प्रभु चन्दन पूजा–मिटे चार गति गोता रे ॥ चन्द० ८ ॥ काव्यम् ॥ पापोपताप शमनाय महद्गुणाय०। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अन्तराय कर्म समूच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय चन्दन यजामहे स्वाहा ।

तृतीया–पुष्प–पूजा

(दोहा)

फूलो मे रस है भरा, फूलों भरी सुवास ।
फूलों से पूजो प्रभु– रस वासित हो खास ॥१॥
फूलों से कोमल अधिक– वज्र कठोर विशेष ।
अद्भुत जीवन फूल से– पूजो प्रभु हमेंश ॥२॥
(तर्ज— धन धन ऋषभदेव भगवान युगलधर्म निवारण वाले)

फल से कोमल हैं भगवान् हृदय करुणा रस भरनेवाले। फल से पूजो श्री भगवान सुवासित चित को करनेवाले ॥ टेर ॥ प्रभु की पूजा लाभ अनन्त, लाभ अन्तराय का होता अन्त। अचिन्तम लाभ विषय भगवन्त, पूजो लाभ को लेनेवाले ॥ फ०१ ॥ नफा नित दीखे अपरंपार, टोटा लगता वारवार। लाभ में अन्तराय अधिकार समझो लाभ को लेनेवाले॥ फ०२ ॥ दान से लाभ लाभ से दान, दोनों में है भाव प्रधान। विवेकी करलो अनुसन्धान, दान से लाभ को पानेवाले ॥ फ० ३ ॥ अगर हो लाभ विघन का जोर, मिलती कहीं न उस को ठोर। बनते साहुकार भी चोर, करम चक्कर में आने वाले ॥ फ० ४ ॥ जल थल नभ में काम अनेक, कर लो होवे लाभ न नेक। सोचो कारण कौन विवेक, लाभ में लिप्सा रखनेवाले ॥ फ० ५ ॥ देकर अन्तराय आनन्द, मानो तभी लाभ में फंद। होते होता है आक्रन्द, करम निश्चित फल देनेवाले ॥फ० ६ ॥ पाओ प्रभु पूजा का लाभ, जगती ज्योति है अमिताभ कहीं भी होता नहीं अलाभ, पुण्य फल हैं सुख देनेवाले ॥फ०७। पुद्गल लाभे रहो उदास, आतम लाभे हो सुखराश। हरि कवीन्द्र पद अविनाश, सहज सुखसिद्धि पानेवाले ॥फ० ० ८ ॥ काव्यम् ॥ चक्षुसु-पञ्चवर वर्ण विराजिबिंब०। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अन्तराय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय यजामहे पुष्पं स्वाहा।

❀ चतुर्थी–धूप–पूजा ❀

(दोहा)

उड़ धुआ ज्यों धूप से– करम धुआ उड़जाय।
भोग किटाणु रूप में– रोग किटाणु नशाय ॥१॥
वायु मण्डल शुद्ध हो– मन पावन हो जाय।
प्रभु की पूजा धूप से– करो सदा सुख दाय ॥२॥

(तर्ज— लिछमी लीला पावे रे सुन्दर ०)

भोग रोग का मूल, भविक जन भोग रोग का मूल। यही अनादि भूल-भविक जन भोग रोग का मूल ॥ टेर ॥ प्रभु पूजा में भोग त्याग कर- योगी जन बन जावे। त्रिभुवन प्रभुता-पूरण भावे, अध्यातम लय लावे ॥ भविक० १॥ एक वार उपयोग में आवे- सोही भोग कहावे। वार वार उपयोग में आवे-वह उपयभोग लखावे ॥ भ० २ ॥ वर्ण गन्ध रस सपर्श सभी ये, हैं पुद्गल गुण खासा। जब तक है संसारी जीवन, तब तक भोग की आशा ॥ भ० ३॥ खान पान रस भोग विघन से, अन्तराय बंध जाता। अन्तराय उदये मन वाञ्छित वस्तु जन नहीं पाता ॥ भ० ४ ॥ भोग के साधन सन्मुख होते चाह हृदय में रहते। काम न होता होती अरुचि, परवशता दुख सहते ॥ भ० ५ ॥ प्रभुपूजा अन्तराय निवारे, सुर नर सुख विस्तारे। सद्गुरू संग रंग अविनाशी, आतम रमणता धारे ॥ भ० ६ ॥ भोग विघन प्रकृति कट जाती, योग निवृत्ति होते। आतम गुण रमणी गति उत्तम, मोति में मोती पोते ॥ भ० ७ ॥ हरि कवीन्द्र करो प्रभु पूजा- भोग विघन मिट जावे। आतम भोगी योगी जगमें- यश कीरति रति पावे ॥ भ० ८॥ काव्यम् ॥ स्फुर्ज त्सुगन्ध विविनोर्ध्वगति प्रयाणे०। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अन्तराय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

❀ पञ्चमी–दीपक–पूजा ❀

(दोहा)

दीपक भावे दीपता— पूजो श्रीजिनराज।
आतम गुण आस्वाद कर-पाओ सुखद स्वराज ॥१॥
रहन सहन उपभोग को— करदो प्रभु पद भेट।
देता है पाता वही— यही नियम है ठेट ॥२॥

(तर्ज— नाचो आओ ह मर साधु रहो गुरु के संग)

कर दो कर दो प्रभु के चरणों में उपभोगों का त्याग। भर दो भर दो अपने जीवन में परमातम अनुराग ॥ टेर ॥ जो देता है सो पाता है–हो जाता जग जेठ। बादल देखो उपर रहते– सागर देखो हेठ ॥ क० १ ॥ उपभोगना उपभोग करें क्या? साधन सीमित देख। इसीलिये झगड़े रगड़े हैं अन्तराय की रेख ॥ क० २ ॥ संतोषी सुखिये रहते हैं धरो हृदय सन्तोष। प्रभुपद पूजा में प्रकटेगा– यही भाव निर्दोष ॥ क० ३ ॥ उपभोगों में फँसे देवता–दुख पाते भरपूर। अन्त समय छह महीने पहिले मिट जाता है नूर ॥ क० ४ ॥ पुद्गल साधन उपभोगी की सदा दुर्दशा जान। यहां वहां चारों गतियों में होता दुख महान ॥ क०५ ॥ आतम गुण उपभोगी निश्चय हो जाता भगवान। प्रभु पूजा में पुद्गल त्यागो– पाओ आतम ज्ञान ॥ क०६ ॥ भोग और उपभोगों से जो रहते सदा उदास। जनम मरण कल्याण उन्हीं का, जगदीपक परकाश ॥ क० ७ ॥ जग दीपक जिनदेव चरण में दीपक पूजा एह। हरि कवीन्द्र परमातम ज्योति दीपित होवे देह ॥ क०८ ॥ काव्यम् ॥ सम्पूर्ण सिद्धि शिव मार्ग सुदर्शनाय। मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्ह परमात्मने अन्तराय कर्म समुच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय दीप यजामहे स्वाहा।

❂ षष्ठी अक्षत-पूजा ❂

(दोहा)

अक्षत स्वस्तिक साधना, चार गति दे चूर।
रत्न त्रय विस्तार से हो शिव सुख भरपूर ॥ १ ॥
अक्षत पद प्रभु पूजते वीर्य विघन हो दूर।
सरल समुज्ज्वल भावसे चमके आतम नूर ॥ २ ॥

[illegible]

हो आतमजी परमातम [illegible]
पद अविनाशी, [illegible]
हो आतमजी० १ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ हो आतमजी० २ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ हो आतमजी० ३ ॥
प्रभु भक्ति शक्ति आनन्दा, [illegible]
परना ॥ हो आतमजी० ४ ॥ विषयों में शक्ति [illegible] हो
जीव रहा । इससे दुःख पाया और सहा ॥ हो आतमजी० ५ ॥ परमातम भक्ति
शक्ति जगे, कर्मों की सेना दूर भगे । अक्षय गुण परिणति सहज जगे ॥ हो
आतमजी० ६ हो सकल समुच्चय भाव भरे, अक्षय गुण-आतम में उभरे ।
आतम परमातम हो विचरे ॥ हो आतमजी० ७॥ हरि फणीन्द्र पुरुषारथ योगी,
वीर्यान्तराय क्षय अनुयोगी । आतम होना आतम भोगी ॥ हो आतम०८ ॥
॥ काव्यम् ॥ कृत्वाक्षतैः सुपरिणाम गुणैः प्रशस्तैः० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं
परमात्मने अन्तराय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे
स्वाहा ।

॥ सप्तमी–नैवेद्य–पूजा ॥

(दोहा)

अमृत गुण नैवेद्य से– पूजो परम दयाल ।
आतम अमृत रस मिले, मिटे भूख जंजाल ॥१॥
भूखा सब संसार है, भूख भरा है दुःख ।
भूख मिटे भगवान से, भजो मिटे भव भूख ॥२॥

(तर्ज— अपनी करणी के फल सब पावा०)

मिट जाय भरम, कट जाय करम अन्तराया। पूजो नैवेद से जिनराया। मिट जाय० टेर॥ दान लाभ भोग उपभोगी वीर्य लब्धि पच उपयोगी। जीव गुण है ये खास घाती कर्मों के पाश दुखपाया॥ पूज० १॥ जीव गुण ये जडगत होते, अत एव जीव खोना गोते। भटका चोरासी लाख, रही नहीं कोई साख भरमाया॥ पु० २॥ ध्रुव बन्धी ध्रुवोदयी जानो, ध्रुवसत्ता को पहिचानो। देशघाती ये पंच, इनका भारी प्रपच समझाया॥ पू०३॥ पाचो अन्तराय ये है पाप अपरावर्तमान की छाप। जीव में हो विपाक, जैसे आमोंमें आक उप जाया॥ पू० ४॥ प्रकृति स्थिति रस अा प्रदेशे बन्ध चउविध बहुविध वेशे। सोचो कर्म विपाक, तोड़ो ताक ताक कर उपाय॥ पू०५॥ सागर कोडा कोड़ी तीस, बन्ध उत्कृष्ट कह जगदीश। गुरुगम आगम सार कर विवेक विचार, हो श्रमाया॥ पू० ६॥ दश गुणठाणा तक बन्धे, सत्तोदय बारह सन्धे। अन्त क्षायिक भाव, पुरुषार्थ प्रभाव जो जमाया॥ पू० ७॥ हरि कवीन्द्र अन्तराय तोडो, आतम स आनम जोड़ो लब्धि पच प्रयोग, भव भाव वियोग सुख पाया॥ पू०८॥ काव्यम्॥ प्राज्याज्य निर्मित सुधामधुर प्रचौर०॥ मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अन्तराय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

❀ अमी-फल-पूजा ❀

(दोहा)

निज प्रयत्न कृत करम फल, दुख भी हो सुख रूप।
फल पुजा प्रभु की करो, फल मत चाहो चूप॥१॥
प्रभु पूजा फल की कथा— कौन कहे विचार।
यहा वहा चारों तरफ— हो सुख अपरपार॥२॥

(तर्ज— मत मान करो अपमान करो जीवन नन बह जायगा)

प्रभु पूजा करो, प्रभु पूजा करो, आश विघन मिट जायगा ॥ टेर॥ साधु सताये जीव दुखाये, दुनिया में झूंठे जाल रचाये। घोर विघन बन जायगा ॥ हां प्रभु० १ ॥ हँस हँस के बांधेकरमों की बाधा। होगी उदय जब काल अबाधा। रोने से छूट नहीं जायगा ॥ हां प्रभु० २ ॥ हिंसा तजो तजो जूंठ ओ चोरी, विषय तजो तजो ममता की मोरी। जीवन सफल हो जायगा ॥ हां प्रभु० ३ ॥ कुमति कुटिल कुसग न करना, ज्ञानी गुरु सतसग विचरना। जीवन जंग जीत जायगा ॥ हां प्रभु० ४ ॥ अन्तराय यह कर्म अनादि-परंपरा हरे आतम आजादी। दर्शन करो हट जायगा ॥ हां प्रभु०५ ॥ प्रभु दर्शन दूर आप भगाता, प्रभु वन्दन वर वांछित विधाता। पूजन शिवफल पायगा ॥ हां प्रभु०६ ॥ सुखों के सागर भगवान स्वामी, हरि पूज्य प्रभु अन्तरयामी। कर पूजा तु पूज्य बन जायगा। ॥ हां प्रभु० ७ ॥ दिव्य कवीन्द्र प्रभु चरण शरण से, मुक्ति मिलेगी जन्म मरण से। परमातम पद प्रकटायगा ॥ हां प्रभु० ८ ॥ ॥ काव्यम् ॥ पीयूष पेशल रसोत्तम भावपूर्णैः० । मन्त्र— ॐ ह्रीं अर्हं पमात्मने अन्तराय कर्म समूलोच्छेदाय श्रीवीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ।

— कलश —

(दोहा)

समय समय में होता है, सात करम का वन्ध ।
आयु सहित हो आठ का, वन्ध दुःख अनुवन्ध ॥१॥
आठ करम कटते प्रकट, आतम-गुण हों आठ ।
कर्म चूर तप कर वरो, आठ सिद्धि के ठाठ ॥२॥

(तर्ज— गायो गायो रे महावीर जिनेश्वर गायो)

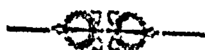
पायो पायो रे, धन धन शासन जैन सवायो ॥टेर॥ शासनपति श्रीवीर जिनेश्वर

श्रीमुख से फरमायो। कर्म निवारण आठ गुण- यथा शक्ति तप ठायो रे॥ धन०१॥ प्रवचन सारोद्धार आचारे-सुविहित विधि समझायो। तप उधापन उत्सव पूजा- प्रभावना मन लायो रे॥ धन० २॥ खरतर गण नायक सुख-सागर- श्रीभगवान सुहायो। जिन हरि सागर सद्‌गुरु शरणे गुरगम बोध वढायो रे॥ धन० ३॥ वर्तमान जिन आनन्द सागर- सूरीश्वर सुखदायो। आज्ञा रगे भाव उमगे परमातम गुण गयो रे॥ धन०४॥ पास फलोदी गुरु तीरथ में चौमासो थिर ठायो। दो हजार तेरह संवत में- काति पुनम जय लायो रे॥ धन०५॥ सद्‌गुरु प्रस्थापित विद्यालय विद्यारथि समुदाओ। कम निवारक प्रभु गुण पूजा पारस रस बरसायो रे॥ धन० ६॥ आतम भाव प्रधान निरूपण सहज समाधि उपायो। कर्म आठ घन काठ जला कर-आठ परम गुण पायारे॥ धन०७॥ पाठक दिव्य कवीन्द्र निजातम-बोध बुद्धि हित गायो। परमातम पद पूजा गाते- अजर अमर पद पायो रे॥ धन० ८॥



जैनाचार्य श्रीमत्‌जिनकृपाचन्द्रसूरि विरचिता

⁂ श्रीगिरनारजीकी–पूजा ⁂



(दोहा)

स्वस्ति श्री मंगलकरण, थभणपास जिनंद् ।
प्रणमी पपपंकज सदा, प्रभुना धरि आनंद ॥ १ ॥
तीरथ जगमांहिं घणा, तेहमां अठे विशेप ।
शेत्रुंज रेवतगिरि वरु, वर्णन करू हमेस ॥ २ ॥

॥ दोहा सोरठा ॥

सोरठ देश सोहामणो, सहुदेशां सिरदार-तेमांहिं तीरथ प्रगट, श्रीगिरिवर गिरनार ॥ ३ ॥ कल्याणक जिहां त्रण थया, दीक्षाज्ञान निर्वाण। नेमिजिणंद वखाणिये, यावत्र कुल नभ भाण ॥ ४ ॥ पूजा रचूं गिरिराजनी, मनमां धरि अति खंत। पूजानी विधिमेलवी, माव अधिक उलसंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

(पूर्वमुख सावनं करिदर्शन पावनम् । एदेशी) पूर्वभवी शुचिथई । शुद्ध अनुभव लई करधरि कलस शुचिजल उदारम् हां रे अइओ शुचि जलउदारं ॥१॥ पहिर खीरोदकं । वांधि मुहकोशकं ॥ धूपवाशित सदोत्तरीय सारं हां रे अ० स० ॥ २ ॥ गगासिंध्वादिना । खोरसागरतणा । तीर्थजल औषधी मिश्रकीजे ॥ हां० अ० मि० ॥ ३ ॥ आठ जातीतणा। कलश भरी सुरगणा स्नात्र प्रभुनी

रचे सुर गिरीन्दे हारे० अ० सु० ॥ ४ ॥ इम भविभावकरि। शुद्ध समकित धरि जिनतणी पूजा करो चित्त धारी। हरि अ० चि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनतानंत ज्ञान शक्तये गिरिनारगिरो श्रीनेमि जिनेन्द्राय जल यजामहे स्वाहा।।१।

❀ अथ २ केसर चंदन पूजा ❀

(दोहा)

नेमिजिणंद दिणंदसम, शिवसुख तरुनोकंद ।
रेवतगिरिवर मंडणो, पूजनकरो अखंड ॥ १ ॥
घसकेशर मृगमदवलि, बावनचंदन संग ।
अम्बर घनसार मेलवी, करो विलेपन अंग ॥ २ ॥

॥ रागनी भैरवी ॥

विलेपन करिये, प्रभुजीके अंग ॥ वि० ॥ जिनवरको तनु फरसन सेती। पामेजिन गुण संग ॥ वि० ॥ पारसफरसत लोहा कंचन, तिम होवे कीटक भृ ग ॥ वि० ॥ २ ॥ शिवादेवी अंगज हो प्रभु श्यामवरण द्युति चग। वि० ॥ ३ ॥ चरण युगल कच्छपसम प्रभुना। कर पंकज जल संग। वि० ॥ ४ ॥ वदनचंद्र अकलंकित कीनो। भालअर्ध शशि अंग। वि० ॥ ५ ॥ निलोत्पलसम नेत्रयुगल फुनि, कामराग थयो भंग। वि० ॥ ६ ॥ केशरचदन मृगमद अम्बर। प्रभुपूजो मनरग। वि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं केशर चंदनं यजामहे स्वाहा ॥२॥

❀ अथ ३ पुष्प पूजा ❀

(दोहा)

तृतीय पूजा जिनवरतणी, करे भविक उजमाल ।
फूल सुगंधी लेइने, चाढे भरि भरि थाल ॥
समवसरणमां सुरकरे, पुष्पवृष्टिधरिभक्ति।

तिमश्रावक शुभ भावथी, पूजा करे यथाशक्ति ॥

॥ रागनी वृंदावनी सारंग ॥

प्रभु अरचा रचो मिल भविजना। नाना-विधना फूल सुगंधा। लेई तुम थावो इकमना प्रभु० ॥१॥ त्रिकरण योगकरी प्रभुपूजो। चित्तधरो शुभ भावना ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ च्यारनिक्षेपे जिनवर जाणो मनमंदिरमें लावना ॥ प्रभु०३ ॥ अनुयोगद्वार आवश्यकसूत्रे। वेदनिक्षेप सुहावना ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ ठवणा समवसरण त्रिहुं दिशिमां। प्राची भावकहावना ॥ प्रभु०५ ॥ द्रव्येजिनवर श्रेणिक पमुहा। नाम ऋषभादि सुहावना ॥ प्रभु० ६ ॥ इनविधि प्रभुकी भक्ति करीये शमरस अमृत श्रावना ॥ प्रभु० ७ ॥ कृपा करिने साहिब मुझने। कीजे कृतार्थ पावना ॥ प्रभु० ८ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

❁ अथ चर्थी पूजा ❁

(दोहा)

यादव कुलनो चन्दलो, ब्रह्मचारी शिरमोड ।
बावीसमा जिनवरतणी, पूजा करो कर जोड ॥

॥ सोरठा ॥

अगर चन्दन घनसार, सेल्हारस मांहि मेलिये। मृगमद अम्बर सार ॥ धूपघटा करिपूजिये ॥ २ ॥

॥ रागनी सोरठ ॥

सेवोभविने जिणंद सुखकारा, करि धूप धूम मनुहारा। सेवोभवि० ॥१॥ गिरिनार गिरि मडण दुख खंडण। भविजन कीधसुधारा। कर्म प्रबल दलदाह करनमिस। धूप दहो सुविचारा। सेवोभवि० ॥ २ ॥ सोरी पुरमें जन्म प्रभुनो, समुद्र विजय कुल भाण। शिवादेवी उदर शुक्ति मुक्ताफल। चित्रानक्षत्र

वखाना। सेवोभवि०॥३॥ च्यवन जन्म कल्याणक प्रभुना। सोरीपुरमे जाना। गिरनार गिरि पर सहसा वनमें। दीक्षाग्रही सुख खाना ॥ सेवोभवि० ॥ ४ ॥ चोसठ इन्द्र करे उच्छरंगे। जिन सेवा मनुहारा। कृपा चन्द्र ए प्रभुने जाणो। निश्रेयस दातारा। सेवोभवि० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं धूपं पूजा ॥ ४ ॥

❀ अथ पाचमी दीपक पूजा ❀

(दोहा)

पाचमी पूजा दीपनी, प्रकटे ज्ञान उद्योत ।
करो भविक जगनाथनी, मन वाछित सुखहोत ॥
शिवादेवीनो लाडला, अतुल बली वडवीर ।
श्यामसलुणो नाहलो, नेमीनाथ सुखसीर ॥

॥ रागनी कल्याण ॥

अहो प्रभु पूजा रचो चित्त चगे ॥अहो०॥ रेवत गिरि पर नेमि जिनेश्वर। केवल लह्यो सुखसगे अहो प्रभु० ॥१॥ च्यार निकायके सुरसुरी मिलके। त्रिगडो रचे अतिरंगे अहो प्रभु० ॥ २ ॥ समवसरणमें राजे प्रभुजी। देशना दे भवभंगे अहो० ॥ ३ ॥ साधु साधवी वेमानिक देवी। अग्निकूण उमंगे ॥ अहो ॥ ४ ॥ ज्योतिषि भवनपति व्यन्तर सुरी। रहे नैरित तिन सगे ॥ अहो० ॥ ५ ॥ वायव दिशि पद्दिज देवो, जिनवाणी सुण रंगे ॥अहो०॥६॥ वेमानिक सुर मानव-स्त्रीनन ईशान दिशिम संगे ॥ अहो० ७ ॥ बारपषदा जिनवाणीसुण, मगन हुवे मन रंग। अहो० ॥ ८ ॥ ग घृत भरि मणिपात्र अनूपम। दीपक करो मन चंगे। अहो० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं दीपंक यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ अथ छट्ठी अक्षत पूजा ॐ

(दोहा)

अक्षत अक्षत लेईने, स्वस्तिक रचो विशाल ।
ज्ञानादिक त्रण पुंज थी, पामो मंगल माल ॥ १ ॥
राजीमतीको छोडके, नेमि चल्या गिरनार ।
रथनेमि राजीमती, लीधो संयमभार ॥ २ ॥

॥ रागनी माड ॥

नेमिजिन पुजो तो सही। प्रभु रैवतगिरि सिणगार। नेमि जिन० आंकणी॥ उत्तमशालि प्रमुख बहुअशनं। चाढो तो सही॥ अक्षयसुख कारण जगतारण। जिनवर शरता ग्रही। प्रभु ॥१॥ आधेय थी आधार अनोपम। जगमे सोभ लही। श्रीगिरनार नेमि फरशनते। कीर्त्तिव्याप रही ॥ प्रभु २ ॥ भरत नरेश्वर सघ लेई ने, शेत्रुंजे यात्रा लही। चैत्य निर्माण नवीन करीने, रेवत मार्ग ग्रही। प्रभु० ३ ॥ स्वर्णगिरि पर नेमि जिणंदनो। मणि कनकादि मयी। देरासर नवीन रचीने। नेमिनी पडिमा ठही ॥ प्रभु० ४ ॥ कोड देवसे ब्रह्मेन्द्र आयो, भतरनो सुजस कही। पहिलो उद्धार प्रथम चक्रिनो॥ एम अनेक लही ॥प्रभु० ॥ ५ ॥ गिरिवर मंडण नेमि जिनेशर भेटो भाव लही। सिद्धि सौध चढ़वा मनरंगे। सोपानपंक्ति कही ॥ प्रभु० ६ ॥ ॐ ह्रीं अक्षत यजामहे स्वाहा ॥

अथ सप्तमी नैवेद्य पूजा

(दोहा)

सातमी पूजा साचवे, श्रावक शुचि शुभभावे ।
भांत भांत नैवेद्यना, थाल भरि भरि लावे ॥
नेम नगीना नाथने, आगल धरो मन रग ।
अक्षय सुख वरवा भणी, पूजा करो चितचंग ॥

॥ चाल लूहर सारग ॥

रामत रमवा में गई थी ए देशी। नेमि जिनेसर पूजीये, एतो रेवतगिरिनो रायो हे माय ॥ नेमि० ॥ समवसरणमें नेमिने। एतो वचनामृत वरसायो हे माय। भव्य हृदय भूसींचाने। एतो बोध बीज निपजायो हे माय ॥ नेमि०१॥ मेघ जनि जिम गाजता, एतो सघ चतुरविध ठायो हे माय। देश विदेशमा विचरतो शिवमारग दरसायो हे माय ॥ नेमि०२ ॥ सेत्रु जे गिरिवर फरशने। एतो गिरनार नाथ कहायो हे माय। अढार सहम वाचंयमी। एतो वरदत्तादि गण रायो हे माय ॥ नेमि० ३ ॥ चालीस सहस्र श्रमणी भली। एतो यचणी प्रमुख सुहायो हे माय। एक लाख गुणोत्तर सहस। एतो श्रावकनो समुदायो हे माय ॥ नेमि० ४ ॥ त्रण लच्च अढार सहस वली, एतो सुजश श्राविका पायो हे माय। भोज्यपदारथ थी प्रभु पूजी। एतो अनाहार नाम कहायो हे माय ॥ नेमि० ५ ॥ इति ॐ ह्रीं० नैवेद्यं यजा० ॥ १ ॥

❀ अथ अष्टमी फल पूजा ❀

(दोहा)

परम पुरुष परमातमा, परमानन्द प्रधान।
परमेश्वर प्रभु पूजिये, परम विज्ञान निधान ॥
अष्टमी पूजा जिन तणी, अष्टमी गतिदातार ।
फल पूजा करा भावसुं जिम लहो सुख अपार ॥

॥ रागणी काफी तिताल ॥

उज्जयंत गिरिगुण गावो। तुमें मणिमाणिक्स वधावो। उज्जयंत० नेमि-जिनेसर जगअलवेसर, मन मदिरमा लावो। जिनवर चरणनो शरण ग्रहीने। समरणमा लयलावो ॥मणिमा० १॥ तीर्थपती बालमा स्वामी, नेमि निरंजन

ध्यावो। भविक जीव सुखकारण तारण, जिनदरशन मन भावो ॥ मणि० २ ॥ दोय भेद दरशनना जाणो। शुद्धशुद्ध स्वभावो, शुद्ध दरशनथी निज गुण प्रकटे आतम गुणहुलसावो ॥ मणि० ३ ॥ काल अनादि भववनमें भटकता। कर्म-रिपु गण दहवो। कृपाकरी मुज दरशन दीजे। अनुभव अमृत पावो ॥ मणि० ४ ॥ नाना जातीना फल लेईने, आगल प्रभुजीने ठावो। कृपाचंद्र फल पूजासे यह मनवांछित फल पावो ॥मणि०५॥ ॐ ह्रीं इत्यादि फलं यजामहे स्वाहा॥ ६

अथ नवमी ध्वज पूजा

(दोहा)

नवमी ध्वजनी पूजना, लावो जिन दरबार ।
सधवस्त्री लेई करी, करे प्रदक्षणा सार ॥
धवल मंगल गातां छतां, वाजित्र विविध प्रकार ।
कैलास गिरिना शिखरपर, आरोपो सुविचार ॥

(राग श्री)

जिनगुणगानं श्रत अमृत। ए देशो। ध्वजपूजन करो सुख सदनं ॥ध्व०॥ सहस्र योजन दंड मनोहर। सुवरणमय जनमन हरणं ॥ ध्व० १ ॥ किंकिणी रणकत शब्द मनोहर दिव्यध्वनि श्रवणं ॥ ध्व०२ ॥ एक हजारके अष्ट ऊपर वलि। सोहे पताका पंचवरणं ॥ ध्व० ४ ॥ मनमोहन ए ध्वजनिरखीने। भविने परमानन्द करणं ॥ ध्व० ५ ॥ इण गिरिके षट्नाम सुहंकर। नन्दभद्र गिरि-सुखकरणं ॥ ध्व० ६ ॥ अषाढ सुदी अष्टमी दिनकीनो। शिवरमणीको कर ग्रहणं। ध्व० ७ ॥ पांचसे षट् त्रिशत मुनि साथे। सादिअनन्त स्थितिवरणं। ध्व० ८ ॥ ॐ ह्रीं इत्यादि ध्वज यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

❀ अथ दशमो अष्ट मङ्गल पूजा ❀

(दोहा)

दशमी मंगल पूजना, अष्टमगल लिखनार ।
रजतना तंदुल लेईने, अखंड उज्वल मनुहार ॥
पुष्पवृष्टि करें सुरगणा, पंचवर्णा सुविशाल ।
योजन भूमंडल प्रमित, पूजो जगत दयाल ॥

[पास जिनंदा प्रभु मेरे मन बसिया । इस चालमें] चालो भविकजन यात्रा करिये यात्रा करिशिव सम्पदा वरिये ।

चालो० । जीर्णदुर्गना चैत्य जुहारी । तलहट्टिये जइ रात्रि रहिये ॥चालो० १॥ श्रेणीमापाज चढी शुभ भाव । नेमिजिनंदको ध्यान जो धरिये ॥चालो०२॥ प्रथम टूंकमें बिम्ब प्रभुना । अद्भुत आदि प्रसंग मन धरिये ॥ चालो० ३ ॥ मेरुवसी पमुहा जिनमन्दिर । निरख निरख भवि मनमा ठरिये ॥ चालो० ४ ॥ यहा अनेक जिनचैत्य नमान । बीजी टूंक जिनचरणाई करिये ॥ चालो० ५ ॥ रथनमीनीरा दरस मरमकरी । तृतीय शिखर शासन सुरि सरिये ॥चालो०६॥ चोथी नमिजीर जिनेसर पंचमी टूंक नमी दुख हरिये ॥चालो०७॥ सहसावन जिनचरण नमीने । चैत्यप्रशादको इनपरि करिये ॥ चालो०८ ॥ गजपद कुंडनो नीर लेईने । स्नात्रमहात्म्यकरि सुख वरिये ॥चालो०९॥ मंगल पूजनादिष्ट निवारक । कृपाचन्द्रनिरपद अनुसरिये ॥ चालो० १० ॥ ॐ ह्रीं० अष्टमङ्गलं यजामहे ॥१०॥

॥ कलश ॥

॥ रागनी धन्याश्री ॥

प्रभुजीका सुयश अनन्तपन गाव । रैवतगिरि रखो प्रभु संडण । नमिजिनन्द

विराजे, तीर्थपतिना गुणगावंतां । रसना सफल कहाजे ॥ प्रभु० १ ॥ श्रीखरतरगण नायक लायक । जिन चारित्र सुरिराजे । गिरनारगिरिनी स्तवनाकीनी । श्रीसंघभक्तिने काजे ॥ प्रभु० २ ॥ पंचतीर्थनी रचना रंगे । कीनी भविक हितकाजे । दरशन देखत अनुभव प्रकटे । जिमसाक्षात गिरि ठाजे ॥ प्रभु० ३ ॥ भगवइ अंगे लालबागमें । सांभलयो संघ सुकाजे । मुंबई वंदर रहिचोमासो संपूरण हित काजे ॥ प्रभु०४ ॥ सम्वत उगनीसे उपर बहोत्तर । पोषधवल भृगु छाजे, दशमीदिन गिरिना गुण गाया । भावभले सुसमाजे ॥प्रभु०५॥ श्रीजिनकीर्त्तिरत्न शाखाधर, । युक्ति अमृतगुरुराजे । कृपाचन्द्र जिनस्तवना कीनी । निजगुण निर्मल काजे ॥ प्रभु० ६ इति श्रीगिरनारपूजा ।



अथ आरती



जय जय जिनराया ॥ श्री नेमिजिनेश्वर राया । भविमिल गुण गाया० जय ॥१॥ आरति पूजा करता । भविने सुख छाया मोक्षमारग दीपाया । राजुलपतिराया ॥ जय० २ ॥ सिवादेवी नदन वंदन । समुद्र विजय राया ॥ सौरी–पुरमें जाया । द्वारिकापुरी आया ॥ जय०३ ॥ रैवतगिरिके सहसा वनमें । दीक्षा सुरराया । केवल रमणी पाया । शिवनगरी धाया ॥ जय जय० ४ ॥ इन विध पूजा आरती करीने । सुख संपति पाया । मुम्बई पुरमें सुहाया । पंचतीरथ राया ॥ जय जय० ५ ॥ भाव भले जिन भक्ति करतां । भविजनमन भाया । कृपा चन्द सूरिराया । मंगल वरताया ॥ जय० ६ ॥ इति



शासन पति पूजा

* प्रथम जल पूजा *

(दोहा)

सरस्वती जगदीश्वरी, श्रुतदेवी सुखदाय ।
जिन मुख उद्भव भारती, नमों शारदा माय ॥ १ ॥
वर्धमान जिनवर नमू, जिन शासन सरदार ।
विघ्न हरण मंगल करण, नमू मंत्र नवकार ॥ २ ॥
तू दायक सोवन गुरू, याकू करूं प्रणाम ।
दीवाली पूजन रचू, वीर जिनेश्वर नाम ॥ ३ ॥
पूजा शिव सुख दायिनी, कहसु सूत्र प्रमाण ।
शासनपति महावीर के, पूजो लह कल्याण ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

जल चन्दन वरफूल, धूप दीप अचत महा ।
नैवेद्य फल पटकूल, ध्वजा अघ आरात्रिका ॥ १ ॥

(दोहा)

उत्तम जल कलशा भरी, पूजो त्रिशलानंद ।
निर्मल होवे आतमा, दिन दिन होत आनंद ॥६॥

॥ कवाली ॥

[राम कहने का मजा जिसकी जबा पर आगया]
आज मैं आया शरणमें, नाथ करुणा कीजिये । कठिन कर्मों में पड़े

की लाज अब रख लीजिये ॥ जातिकी एक ब्रह्मणी थी, देवा नंदा नाम था। ऋषभदत्तकी वो बधू थी, विप्रकुल उजला दिया ॥ आज० ७ ॥ शुक्र छट्ट आषाढ की, रात्री पटल से छा रही। देवानंदा ब्राह्मणीने, अल्प निद्रा ले गई। ॥ आज० ८ ॥ माता बनाई आपने, उसके उदर अवतार ले। दिवस ब्यासी रहे उनके, मनोरथ सब फल चले ॥ आज० ९ ॥ इद्र के आदेश से, हरने-गमेषी आ परे। उस ब्राह्मणी की कोखसे, सिद्धार्थ के घर में धरे ॥आज१०॥ शास्त्र इसको गर्भ हर, कल्याण कह अपना लिया। आपने उस ब्रह्मणी का, नाम अजरामर किया ॥ आज०११ ॥

[किससे करिये प्यार यार खुदगरज जमाना है]

महावीर जिनचंद नद, सिद्धारथ राजा के ॥ प्रणात स्वर्गलोक से आए, क्षत्रीकुंड नगर मन भाए। त्रिशला उदर अवतार लियो, नंदन महाराजा के ॥ महा० १२ ॥ आश्विन वदि तेरस दिन आए, माता उदर गर्भ कहलाए। धनद देव भडार भरे, तत्क्षण माहाराजाके ॥ महा० १३ ॥ स्वप्न चतुर्दश मात निहारी, सचराचर सब भए सुखारी। घर घर मंगल माल होन, दिन दिन महाराजा के ॥ महा० १४ ॥ चेत्र सुदी तेरस दिन आया, तीनलोक में आनंद छाया। जन्म लीन महाराज घरे, सिद्धारथ राजा के ॥ महा० १५ ॥ सकल भुवन में कर उजियारे, दास चतुरके कारज सारे। करे जन्म अभिषेक सुरासुर, पति महाराजा के ॥ महा० १६ ॥

[चाल इन्द्रसभा]

पाप कर्म सवि धोवन कारन, सुद्ध चेतन परकास ।
जल पूजन कर शासन पतिकी, निर्मल आतम भास ॥१७॥

[रागिनी भैरवी त्रिताल]

प्रभुजी को सुरपतिस्नात्र करावे, सुर नर सनि सुख पावे ॥ उत्तम कलश सुवर्ण रजत के, नीर सुगंध भरावे। चीरोदक गंगोदक आने, सर्वोषधि जल लावे ॥ प्र० १८॥ तीर्थादक वर पद्मद्रहोदक, जल अभिषेक करावे। कल्याणक अभिषेक करे जो, दास चतुर गुण गावे ॥ प्र० १६ ॥

॥ श्लोक ॥

वीर सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरबुधा संश्रिता । वीरेणाभिहत स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नम ॥ श्रीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुल वीरस्य घोरं तप । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचय श्री वीरभद्र दिश ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय जल यजामहे स्वाहा ।

❀ द्वितीय चन्दन पूजा ❀

(दोहा)

केशर चन्दन मृगमदा, अंबर और वरास ।
लेई पूजी सिद्धार्थसु, महावीर हरि रास ॥१॥

(बिननीक दूर तेरी काशी रे पाड़े)

शासनपति महावीर रसीले, शासनपति महावीर रसीले ॥ छप्पन दिक्कुमरी गुण गावे, आवे निनवर तीर रसीले। चौसठ सुरपति पाडुक वन में, पूजे जिनवर वीर रसीले ॥ २ ॥ तान मृदंग दुदुंभी बाजे, सरनाई गभीर रसीले । नाथेइतान करत सूं वनिता, तीर करे प्रभु तीर रसीले ॥ ३ ॥ देव सकल सुर नाथ हुकुम से, लावे तीरथ नीर रसीले । घसि चन्दन घनसार विलेपन, लावे सुरवर धीर रसीले ॥ ४ ॥ शकर ऊ पड़ गए संशय में, देखावाल सरीर रसीले। संशय मोचन चरण परससे, मेरु चलायो धीर रसीले ॥ ५ ॥ थर थर कांप गये

सुरपति सुर, देखि अतुल वल वीर रसीले। दास चतुर अब प्रभुकूं पूजे, कुंकुम चंदन सीर रसीले ॥ ६ ॥

(चाल इन्द्रसभा)

शुद्धातम चन्दन करि घिसिये, ज्ञानादिक गुण साथ।
सौरभ प्रगटे सकल लोक के, होय निरंजन नाथ ॥७॥

(रागनी त्रिताल)

भक्ति वाले! शासन नायक, सेव अब पूज निरंजन देव ॥ केशर चदन मृगमद भेली, और वरास मिलेव। क्रम जानूं कर कंध सीस भाल गल, नव अंग पूजन भेव ॥ भ० ८ ॥ मेरो साहिब प्राण पियारो, जो है देवाधि देव याके अंग परस सुख उपजे, वो मुख कहि न सकेव ॥ भ० ६ ॥ प्रभुगत रागी अद्भुत रागी, यह आश्चर्य कहेव। हे अनियारे अखियन वारे, दास चतुर सुख देव ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुल, वीरस्य घोरं तपः वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः, श्री वीरभद्रं दिश ॥११॥ ॐ ह्री परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

❀ तृतीय पुष्प पूजा ❀

(दोहा)

अपतित भूमि सुगन्ध शुभ, धौत प्रमार्जित फूल।
पंच वरण भाजन भरी, पूजन समकित मूल ॥१॥

(दिलदार यार गबरू राखूं घूंघट का पट में)

सुनिये विनय हमारी, महावीर नाम वारे । हम बाल मित्र आए, आज्ञा पिता कि पाए । खेलन कु जीव चाहे, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥२॥ आम्री अशोक वारी, उसमें खिला है क्यारा । फूलन बहार न्यारी, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥ ३ ॥ चाले सखा बुलाए, वन वाटिकामें आए । फूलनके हार पाए, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥४॥ अज्ञान वा पटाया, सुर एक मूर्ख आया । करि नाग रूप धाया, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥५॥ आके सखा पुकारा, आता है नाग कारा । सुनके उच्चार डारा, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥६॥ पुनि कीन दुष्ट माया, प्रभुने उसे दबाया । अब दास सिर नमाया, महावीर नाम वारे । सुनिये० ॥ ७ ॥

॥ इन्द्रसभा ॥

हृदय कमलदल स्थित परमेश्वर, चिदानंद भगवान । वाके गुण कुसुमाञ्जलि करके, पूज करत सुग्यान ॥ ८ ॥

॥ राग मालश्री गौडी ॥

पूज हो कल्याण प्रभुका, सकल सुर सुख दाय ये देवा० । पंच सायक दु:खदायक, नास तसु हो जाय ये देवा, नास० । मालती मुचकुंद दमणो, केतकी सरसाय ये देवा, केतकी० । पडल चंपक मोगरा मिलि, वोलश्री वरसाय ये देवा वोलश्री० ॥९॥ पाप वरण प्रमाद दायक, कुसुम घन वर साय ये देवा कुसुम० । भक्ति भाव प्रमाद करिके, सरस दाम बनाय ये देवा, सरस० ॥१०॥ नाम मेरो प्राण जीवन, देख मन हुलसाय ये देवा, देख० । चतुर सागर दासने अब लियो हृदय लगाय ये देवा, लियो० ॥११॥

॥ श्लोक ॥

वीर सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधा संश्रिता । वीरेणाभिहत स्वकर्म

निचयो, वीराय नित्यं नमः। वीरात्तीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपः। वीरेश्री धृतिकीर्त्ति कान्ति निचय, श्रीवीरभद्रं दिशः ॥१२॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

❀ चतुर्थ धूप पूजा ❀

॥ दोहा ॥

शुद्धौषध चूरन करी, द्रव्य सुगन्ध मिलाय।
प्रभु सम्मुख करिये हवन, कर्म समिध जल जाय ॥१॥

(उद्धवजी कब दर्शन देंगे, वंशी के बजाने वाले)

सांइयां अब कब मिलना होगा, कहे नंदीवर्धन भाई ॥ तुम संयम मारगमें जाते, हम ऊपर दया न लाते। अब काह करें हम नाथजी, ना रहे पिता अरु माई ॥ सांइयां० २ ॥ मगसर वदि दशमी आई, इन्द्रादिक इन्हें वधाई। अब संयम लेते सांइयां, सब जीवको सुखदाई ॥ सांइयां० ॥३॥ यह संयम मारग बंका, नहिं इसमें कुछ भी शंका। यह नहीं सोवनी लंका, कइ कष्ट परे दुखदाई ॥ सांइयां० ४ ॥ संसार सकल दुखखानी, कइ मरे जा रहे प्रानी। यह सांची विधि तुम जानी, इस कारण चले दुराई ॥ सांइयां० ॥ ५॥ प्रभु संयम लेकर भारी, सवि कर्म समिध कूंजारी। कहे दास चतुर बलिहारी, कर जोड़ि वीर जिन राई ॥ सांइयां ॥६॥

॥ इन्द्रसभा ॥

अष्ट कर्म वनदाह करन घन, है तप अग्नि समाज।
पिंडपात्र करि धूप करेसो, पावे निर्मल ज्ञान ॥ ७ ॥

(रागनी यमन कल्याण, धीमें त्रिताले की ठुमरी)

तू ईश्वर प्राण पति मेरा, और न कोई सहायक मेरा ॥ तू ही जगवारक दुःख निवारक, असरन जनको सरन है तेरा। कृष्णागुरु अरु मृगमद अंबर, लेइ घनसार लोबान सु गहेरा ॥ तू० ८ ॥ धूप करों प्रभु सम्मुख तोरे, सरस सुगंध अति सुख देरा। दास चतुर कू पार उतारो, मैं हूं प्रभु शरणागत तेरा ॥ तू ९ ॥

॥ श्लोक ॥

वीर सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधा संश्रिता। वीरेणाभिहत स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नम। वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुल वीरस्य घोरं तप। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचय श्री वीरभद्र दिश ॥१०॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

॥ पञ्चमी दीप पूजा ॥

(दोहा)

शुद्ध द्रव्य शुभ पात्रमें शुद्ध वर्तिका जोय।
करि दीपक पूजे प्रभू, मोह तिमिर नष होय ॥१॥

(रागनी माड)

महावीर प्रभून तप सयम दीपाया हैंजी वाह, वाह वाहजी हो हो हो हो महावीर प्रभून ॥ चंड कोशिक फणी आयके, दिया आपके डंक। महाराज उसको अष्टम स्वर्ग पठाया हैंजी वाह ॥ वाह० २ ॥ शूल द्रुम घर है देखने, दिये कष्ट अति घोर पनिहारी उसको सिद्धारथ समझाया हैंजी वाह ॥ वाह० ३ ॥ संगम सुर एक नीचनें, दिये घोर उपसर्ग। सुरराज उसको सुन्दर मार भगाया हैंजी वाह ॥ वाह० ४ ॥ कानमिं कीलें दई, ग्वाली नीच अजान।

जिनराज उसपर शान्ति भाव दरसाया हैंजी वाह ॥ वाह० ५ ॥ तप दीपक दीपाय के, मोह तिमिरक्षय कीन। महावीर प्रभूके दास चतुर, गुण गाया हैंजी वाह ॥ वाह० ६ ॥

॥ इन्द्रसभा ॥

चेतन पांत्र सुकर्म वर्तिका, दुखद कर्म हवि होय।
ज्ञान ज्योति प्रगटे तनु भीतर, तम अज्ञानको खोय ॥ ७ ॥

(रागनी भैरवी)

प्राण मेरे त्यो सुप्रदीपक आज, साहेब गरीब निवाज ॥ तूं परमेश्वर तूं जगदीश्वर, तूही सुधारन काज। तेरी अखियन पर मैं वारी, जाऊं हूं महाराज ॥ प्रा० ८ ॥ तुमसे मेरा प्रेम देखके, होय कर्मको लाज। अब जो साहेब प्रेम मिटादो, तो मुझ होय अकाज ॥ प्रा० ९ ॥ दीख पड्यो अब रूप तुम्हारो, स दीपकके सांज। दास चतुरके वांछित फल गए, रंक निपायो राज ॥ प्र० १०॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरबुधाः सश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिद प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः। वीरं श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥११॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा।

❀ षष्ट अक्षत पूजा ❀

(दोहा)

पंचवर्ण अक्षत सरस, भरि कंचनके थाल।
अक्षत प्रभु गुण गायके पूजों दीन दयाल ॥१॥

(कृष्ण घर नंद के आये, सितारा हो तो ऐसा हो)

वीर सिद्धार्थके नंदन, जिनेश्वर हो तो ऐसे हों ॥ शुदी वैशाख की दशमी, मिला है ज्ञान जिनवर को। कटे हैं फंद कर्मों के, महावीर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० २ ॥ मिला एक आय अभिमानी, इन्द्र भूती ब्राह्मण था। बनाया शिष्य अरु गणधर, गणेश्वर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० ३ ॥ दधि वाहन नरेश्वर की, धिया चंदन सुबाला थी। किया पर वर्तिनी उसको, दयावर हों तो ऐसे हों ॥ वीर० ४ ॥ मगली पुत्र गोशाला ने, जलाए दोय मुनिवर को। किया नहिं क्रोध कुछ उसपर, क्षमाधर हो तो ऐसे हों ॥ वीर० ५ ॥ जमाली दुष्ट निन्हव को, दिया सुरलोक रहने को। चतुरसागर मुनीजनके, महेश्वर हों तो ऐसे हो ॥वीर०६॥

॥ इन्द्र सभा ॥

अनन्त द्रव्य मोक्ष सुख अनन्त, अचत केवल ज्ञान।
अचत तत्व योनि पुनि अनन्त, पाचों अचत जान ॥ ७ ॥

(रागनी आशावरी)

नाथ तेरे अनन्त सुख से यारी, मैंने करलई है सुखकारी ॥ तेरे घर में भूख न प्यासा, जन्म नहीं नहिं मारी। रोग न शोक न वृद्ध न बाल न, ये सब अचरजकारी ॥ ना० ८ ॥ स्वामी शिव वनिताको रसियो, जान सब संसारी। क्षणभर, अनन्त सुख नहिं छाड़े, लोक कहे ब्रह्मचारी ॥ ना० ९ ॥ तू नहिं हमरी ओर निहारे, हमने काह बिगारी। तेरे कारण पियारे, हम तरसत है भारी ॥ ना० १० ॥ तेरे कारण वन वन भटकी, खाक बदन में डारी। दास चतुर की ओर न देख, अब क्या मरजी निहारी ॥ ना० ११ ॥

॥ श्लोक ॥

वीर सव सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधा संश्रिता। वीरेणाभिहत स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नम ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुल, वीरस्य घोरं तप।

वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रं दिश ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

❀ सप्तमी नैवेद्य पूजा ❀

सरस शुची पक्वान्नले भरि नैवेद्य के थाल ।
शासनपति महावीरके, आगे धरो रसाल ॥ १ ॥

(तर्ज वनजारे की)

महावीर जिनेश्वर ज्ञानी, सुखदायक वोले वानी ॥ करि समवसरण सुर राजा, गढ कांगुर ओ दरवाजा । त्रिरत्न पीठिका जानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥ २ ॥ अशोक वृक्षकी छाया, सिर चामर छत्र धराया । सुर दुंदुभि नाद वखानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥३॥ तहां वैठी परिषदा वारा, भामंडलका उजियारा । सभि देखन जिनवर कानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥४॥ पशुपक्षी सुरनर सारे, भिनभिन देसावर वारे । सभि समझ परे जिनवानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥५॥ वाणी अमृत रस वरसे, सुनि सकल परषदा हरषे । कहे दास चतुर सुख खानी, महावीर जिनेश्वर ज्ञानी ॥ ६ ॥

॥ इन्द्र सभा ॥

पांच सुमति पचेंद्रिय निग्रह, सोहि सरस पक्वान्न ।
रस अनंत गुन मिष्ट पदारथ, ले पूजो भगवान ॥ ७ ॥

(रागनी कांगडा प्रभाती)

मेरे प्रभु को मीठो दर्शन, कहो किसको नहिं भावेजी ॥ कामी क्रोधी कपटी धुतारे, उनकूं नहीं सुहावेजी । द्वेषी अज्ञ पापी जन प्रभुकूं, देखि देखि जल जावेजी ॥ मेरे० ८ ॥ सज्जन मित्र भले मन वारे, इसके ही गुण गावेंजी ।

दुष्ट कर्मको मारनहारे, वे इसके ढिग आवेंजी ॥मेरे० ९॥ गुड भी मीठो शाकर मीठो, चकिया मावेजी। अन्न भी मीठो अमृत मीठो, नहिं दर्शनके दावेंजी॥ मेरे० १०॥ भरि नैवेद्य थाल कंचन के, प्रभुके सम्मुख ठावेंजी। दास चतुर अत्र मीठो दर्शन, जन्म जन्म विच पावेंजी॥ मेरे० ११॥

॥ श्लोक ॥

वीर सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरबुधा संश्रिता। वीरेणाभिहत स्वकर्म निचयो, वीराय नित्य नम ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुल वीरस्य घोर तप। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचय श्री वीरभद्र दिश ॥ १२॥ ॐ ह्रीं परम-परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्त्ये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

❀ अष्टम फल पूजा ❀

॥ दोहा ॥

फल पूजन महाराज की, करे भविक धरि प्रेम।
बिन प्रयास पावे सही, शिवफल निश्चय नेम ॥१॥

॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर ले मेरी ॥

शासनपति महावीर जिनेश्वर, अविचल शिवसुख पायो रे॥ पावा पुरि में करि चउमासो, सांचो धर्म दिपायो रे। हस्तिपाल राजा प्रभु पूजे, तन मन धन हुलसायो रे॥ शा०२॥ कइयक श्रावक कइयक राजा, कइयक मुनि मन भायो रे। कइयक देव अमरपति कइयक, प्रभु चरणन चित लायो रे॥ शा०३ पुणय पाल राजा करजोरी, प्रभु चरणा सिर नायो रे। पूछो इस कलियुग की रचना, जिनवर भेद बतायो रे॥ शा० ४॥ गुरु गौतम कूं आज्ञा दीनी, देव दत्त घर जावो रे। नास्तिक मन का पूरा पंडित, उस कूं तुम समझावो रे॥

॥ शा० ५ ॥ सोहम गणधर कू समझा के, सूत्रविपाक सुनायो रे। कृपा धर्म को उत्तर सास्तर, दास चेतुर सुन पायो रे ॥ शा० ६ ॥

॥ रागनी पीलू धन्याश्री ॥

फल पूजन फल दायक प्रभु की, करत सुजन भव पार लहेगा ॥ शुद्ध अभक्षित सटित गलित नहिं, पतित न भूमि सुथान कहेगा। श्रीफल पूंगी बदाम छुहारे, द्राक्षादिक फल भेद कहेगा ॥७॥ पात्र रजत भरि मधुर फलनि से, प्रभुके सम्मुख लाय ठवेगा। मुख से करि जिनवर गुण गायन, ताल मृदंग धुनि युत रहेगा ॥ ८ ॥ प्रेम सुलाय नयन जल भरि करि, अशुभ करम क्षण मांहि दहेगा। हम प्रभुको इन फलसे पूजें, प्रभु शिवफल हमही कू चहेगा ॥ ९ ॥ दास चतुर कूं फिर का चहिये, तीन भुवन जय जय लहेगा। फल पूजन फल दायक प्रभु की, करत सुजन भवपार लहेगा ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः वीरेणाभिहत. स्वकर्म निचयो, वीराय नित्य नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपः। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिश ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय फलं जयामहे स्वाहा।

नवम वस्त्र पूजा

॥ दोहा ॥

देव दिव्य युग वस्त्र से, पूजो दीन दयाल।
विना वस्त्र निर्वाह नहीं, इस पंचम कलिकाल ॥ १ ॥

॥ इंद्रसभा ॥

द्वादश अंग सुतन्तु सूत्र सम, गणधर वुक्न समान।
देव दुष्य श्रुत निमल प्रगट्यो, सो पटधार सुजान ॥ २ ॥

॥ हम दयाका डंका बजाय जायेंगे ॥

प्रभु अरजी हमारी अवश्य सुनो ॥ दुष्ट अधर्मी लोक जगत में, पाखंड पूजन हासि घनो ॥ प्र० ३ ॥ तीन वरनके नर पाखंडी, होवेगें सभि आप जनो शुद्ध सनातन जैन धरम कू , करदेंगे ते कनो कनो ॥ प्र० ४ ॥ थोड़ा आयुप और बढ़ा लो इन दुष्टनके मान हनो। शासन नायक वीर जिनेश्वर, बोले सुनर मर्मी सुनो ॥प्र०५ ॥ भावी भाव कू कोइ न टारे, सत्य मंत्र तुम यही भना। दास चतुर की अर्जी न गुजरी, होगयो सुरपति ऊन मनो ॥ प्र० ६ ॥

॥ राग श्री ॥

पट युगल वसनमें बलिहारी, बलिहारी मे तेरी बलिहारी ॥ सुन्दर बेल लगी है तोमें, फूलन की छवि है न्यारी। झीनी झीनी पतिया झलके, नीकी लागत है प्यारी ॥ पट०७ ॥ भार अल्प और मूल्य घनो है मानिनकी भावर भारी। जिन गुनिजन नें तुझे बनाया, उसकी बल मे हूं वारी ॥ पट०८ ॥अब मैं भेट धरूं हूं तेरी इन साहिबके सुखकारी। दास चतुर के नाथ पियारो, जो है निरंजन अविकारी ॥ पट० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधा संश्रिता। वीरणाभिहत स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नम ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तप । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचय श्री वीरभद्रं दिश ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा।

❀ दशम ध्वज पूजा ❀

॥ दोहा ॥

दंड मनोहर लायके, सुंदर ध्वजा वनाय।
करो चैत्य महावीर के, उत्सव ध्वजा चढाय ॥ १ ॥

(राजुल पुकारे नेम पिया)

गौतम पुकारे प्राणनाथ क्या दगा किया। मुझे छोड़के अकेले आप, मोक्ष चल दिया। गर आपकी न राय थी कि, मोक्ष ले चलें। तो अंतका मिलाप मुझसे क्यों हटा लिया। गौतम० २ ॥ हर वखत आप मुझ को, गौतम कह बोलावते। एक आज का ही दिन हुवा, बिलकुल भुलादिया। गौतम० ३ ॥ जो होति बात कुछ भि फौरन पूछ आप से। करता दलील आपसे, उस दम बता दिया। गौतम० ४ ॥ कहां जाय के विचार अब किस को सुनाऊगा। आज इस दुविधाने मेरा दिल दुखा दिया॥ गौतम ५ ॥ सूरत पियारी आपकी, कब देख पाऊंगा। यह दास की पुकार जो थी सब सुनादिया॥ गौतम० ६ ॥

॥ कोयल कुहुक रही मधु वनमें ॥

मैं बलिहारी पावा पुरि की पावा पुरि के, जल मंदिर की मैं बलिहारी पावा पुरि को॥ कार्त्तिक वदी अमावस राते, भीड मची इंद्र सुरवर की ॥मैं० ७ ॥ शासन नायक मोक्ष सिधारे, आज्ञा ले सुरवर इद्र की ॥ मैं० ८ ॥ चंदन चय बिच दाह करीके, रत्न पीठिका कर जिनवर की॥ मैं० ९ ॥ चरण पीठिका स्थापन करिके, पूजा करन सकल ईश्वर की॥ मैं० १० ॥ नंदी वर्धन आदिक राजा, कीन्हीं यात्रा पावा पुरिक ॥ मैं० ११ ॥ ध्वज पूजन जिनवर की करके, आसा, पूगीदास चतुर की॥ मैं० १२ ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र दहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म

निचयो, वाराय नित्यं नम । वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तप । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचय श्री वीरभद्र दिश ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय ध्वजा यजामहे स्वाहा ।

❀ एकादश अर्घ पूजा ❀

(दोहा)

आठों कर्म खपाय के, मोक्ष गए महाराज ।
पूजों अर्घ चढायके, दीवाली दिन आज ॥ १ ॥

राग माड (जरा टुक जोवोतो सही)

नाथ मोहि तारोतो सही, मैं कहां दोहि करजोरी ॥ मैं अज्ञानी कछुना समझू, सचो मूढ मई । इन कर्मनि में मेरो रहणो, आछो है नहीं ॥ नाथ० २ भूल परयो मैं पंथ तुम्हारो, भटक्यो चार गई । दीनबंधु अब राय बतावो, दीनानाथ गई ॥ नाथ० ३ ॥ पापी लंपट और धुतारे, मेरे साथ रही । मोरे मन को वे भरमावे, सपति लूट लई ॥ नाथ० ४ ॥ जो अब अरजी नहीं सुनोगे, तो मैं आज कही । दास चतुर अब इन दुष्टनसे, बचने को नहीं ॥ नाथ० ५ ॥

॥ जोगिया आशावरी ॥

नाथ तेरे चरण कमल पर वारी, तेरी यात्रा करे नर नारी ॥ खरतर गण नभ मंडल सूरज, आचारज पद धारी । जिन कृपा चंद्र सूरीश्वर राजे, महिमा अजब घनी ॥ नाथ६ ॥ जय सुख राज विवेक मुनीश्वर, कीना यजि सुख कारी । संयम तप कृपा गुणआगे, दीपाही उजियारी ॥ नाथ० ७ ॥ पर गन गत जो मिथ्या वादी, धर्म सम गुणधारी । सूत्र गप नय मारग ग्रती, या अब पक गइ सारी ॥ नाथ० ८ ॥ चार्षीस* शत वर्ष पचास, माघ तहने मझारी ।

कार्त्तिक वदि चउदस शनिवारे, दीवाली दिन जुहारी ॥ नाथ० ९ ॥ दास चतुर सागर अनुयोगी, कीन्ही पूजा तयारी। भूल परी जो इन पूजन में, माफ करो अधिकारी ॥ नाथ० १० ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो, वीराय नित्यं नमः॥ वीरात्तीर्थ मिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रं दिश ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय अर्घ यजामहे स्वाहा।

※ समाप्त ※

